पेज : 2

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

सबसे बड़ी खबर

भव्य खबर

RNI No.- DELHIN/2016/68043

नई दिल्ली संस्करण, नई दिल्ली, शुक्रवार, 11 अप्रैल 2025, वर्ष : 9, अंक : 15 पृष्ठ : 08, मूल्य : 02 रुपया

नई दिल्ली से प्रकाशित व दिल्ली, एनसीआर, यूपी, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, गुजरात में प्रसारित

संक्षिप्त समाचार

आज उपेक्षित रही परंपराएं और विरासत पुनर्जीवित हो गई : जयशंकर

नई दिल्ली। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि लंबे समय से उपेक्षित रही परंपराएं और विरासत अब पुनर्जीवित हो गई हैं। ज्यादा भाषाओं को शास्त्रीय दर्जा प्राप्त है और भारतीय प्रथाओं को नया प्रोत्साहन और गति मिल रही है। उन्होंने कहा कि इसका सार यह है कि इंडिया आज भारत बन चुका है। यह बात बुधवार को जयशंकर एक कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) परिवर्तन को मान्यता देता है और मुझे यकीन है कि यह इसे अपने भविष्य के कार्यों में शामिल करेगा। आईसीसीआर विदेश मंत्रालय के अंतर्गत आता है। जयशंकर ने कहा कि किसी भी संस्था के लिए 75 साल विकास और विस्तार का अहम समय होता है...। उन्होंने यह भी कहा कि यह समय और भी अहम हो जाता है। खासकर उस परिवेश को देखते हुए जिसमें ये संस्थाएं काम करती हैं। जयशंकर ने कहा कि हमारा राष्ट्र और हमारा समाज काफी बदल गया है। उन्होंने कहा कि आज देश में हमारी संस्कृति, विरासत और परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है। वास्तव में हम अपनी परंपराओं के कई पहलुओं पर गर्व महसूस करते हैं, जो अब कई पहल और योजनाओं में दिख रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, हमारे पर्यटन को बढ़ावा देना और विश्व धरोहर स्थलों की सं या में वृद्धि इनमें शामिल है।

विमान लैंड करते ही आया पायलट को अटैक और हो गई मौत

नई दिल्ली। श्रीनगर से दिल्ली की उड़ान पूरी करने के बाद एयर इंडिया ए सप्रेस के एक पायलट की नई दिल्ली में हार्ट अटैक से मौत हो गई। पायलट की हाल ही में शादी हुई थी। एक रिपोर्ट के मुताबिक यह घटना विमान के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने के कुछ ही समय बाद हुई। एयरलाइन के मुताबिक दिल्ली में विमान के उतरने के बाद पायलट को अस्वस्थ महसूस हुआ और उसे पास के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉ टरों ने चेकअप के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। यह घटना उस समय हुई जब पायलट ने श्रीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से दिल्ली के लिए एयर इंडिया ए सप्रेस उड़ान का संचालन कर रहा था। एयरलाइन के सूत्रों के मुताबिक दिल्ली में उतरने के बाद कैप्टन अरमान ने विमान के अंदर उल्टी की, डिस्पैच ऑफिस जाने से पहले उनमें परेशानी के शुरूआती लक्षण दिखे, जहां बाद में उन्हें दिल का दौरा पड़ा। आईजीआई हवाई अड्डे के एयर इंडिया ए सप्रेस सुविधाओं में चिकित्सा कर्मियों को तुरंत घटनास्थल पर बुलाया गया, लेकिन उनकी त्वरित प्रतिक्रिया और अस्पताल ले जाने के बावजूद, पायलट अरमान को बचाया नहीं जा सका। उसे हवाई अड्डे पर एयरलाइन के डिस्पैच कार्यालय में अटैक आया।

शिवराज सिंह चौहान ने सपरिवार पशुपति नाथ मंदिर में माथा टेका

शिवराज सिंह चौहान बिस्टेक देशों के कृषि मंत्रियों की बैठक के लिए काठमांडू (नेपाल) में हैं। उन्होंने वहां बैठक के बाद गुरुवार को परिवार के साथ पशुपतिनाथ मंदिर के दर्शन किये और मंदिर प्रांगण में रुद्राक्ष और हरसिंगार के पौधे रोपे। शिवराज सिंह ने इस बारे में सोशल मीडिया ए स पर यह जानकारी साझा की। उन्होंने लिखा कि बिस्टेक देशों के कृषि मंत्रियों की बैठक के लिए काठमांडू में हूं। बैठक के बाद आज परिवार के साथ पशुपतिनाथ मंदिर के दर्शन किये। यहां मंदिर में श्रद्धालुओं के साथ आत्मीय भेंट हुई। भगवान पशुपतिनाथ के पावन प्रांगण में रुद्राक्ष और हरसिंगार के पौधे रोपने का सौभाग्य मिला। उन्होंने कहा, चार वर्ष पूर्व नर्मदा मैया की गोद में रोपे संकल्प का बीज पशुपति महादेव के आंगन तक पहुंच गया है। मैं तो बस एक निमि हूं, कर्म का यह मार्ग, शिव की प्रेरणा है। महादेव की कृपा बनी रहे और प्रकृति की सेवा का यह संकल्प इसी प्रकार पल्लवित, पुष्पित होता रहे, पशुपतिनाथ के चरणों में यही प्रार्थना है।

सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के बाद क्या राज्यपाल नहीं रोक सकेंगे विधानसभा से पारित विधेयक?

स्टालिन बोले कोर्ट का फैसला सभी राज्य सरकारों की जीत

नई दिल्ली / भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । सुप्रीम कोर्ट द्वारा मंगलवार को दिए गए ऐतिहासिक फैसले के बाद सवाल किए जा रहे हैं कि क्या राज्यपाल अब विधानसभा में पारित विधेयकों को अनिश्चितकाल के लिए रोक नहीं सकेंगे? वैसे कोर्ट ने आपने आदेश में स्पष्ट किया है कि राज्यपाल विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों को अनिश्चितकाल तक रोक नहीं सकते। कोर्ट का यह निर्णय तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल मामले में आया है, जिससे न केवल तमिलनाडु, बल्कि देश के अन्य राज्यों की चुनी हुई सरकारों को बड़ी राहत मिलती दिख रही है kसुप्रीम कोर्ट में जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और आर. महादेवन की डबल बेंच ने तमिलनाडु सरकार बनाम तमिलनाडु के राज्यपाल मामले की सुनवाई करते हुए उक्त फैसला दिया है। कोर्ट ने आदेश में कहा है कि राज्यपाल के पास राज्य विधानसभा की तरफ से भेजे गए विधेयकों पर वीटो का अधिकार नहीं है। वे विधानसभा द्वारा पारित किसी बिल को अनिश्चितकाल के लिए रोक नहीं सकते हैं। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल के पास कोई विवेकाधिकार नहीं है। उन्हें तो मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर अनिवार्य रूप से कार्य करना होता है। कोर्ट ने यह भी कहा कि विधानसभा द्वारा विधेयक को पुनः पारित किए जाने के बाद उसे पेश किए जाने पर राज्यपाल को एक माह की अवधि में मंजूरी देनी होगी। इसी के साथ कोर्ट ने तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पास किए गए 10 लंबित विधेयकों को राज्यपाल द्वारा मंजूर मान लिया। तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को ऐतिहासिक बताते हुए कहा, कि यह सिर्फ तमिलनाडु नहीं, बल्कि पूरे देश की राज्य सरकारों की जीत है। यह फैसला न केवल संवैधानिक संतुलन को स्पष्ट करता है, बल्कि संवैधानिक प्रमुख और चुनी हुई सरकार के बीच जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व की रेखा भी खींचता है।

हरिद्वार जिला कारागार में बंद 15 कैदी एड्स से पीड़ित मिले

जिला कारागार में सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर आयोजित एक स्वास्थ्य शिविर में सभी कैदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया.

हरिद्वार/ भव्य खबर/ एजेंसी । हरिद्वार जिला कारागार में बंद 15 कैदी एचआईवी यानी एड्स से पीड़ित पाए गए हैं, जिससे जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया है. वरिष्ठ जेल अधीक्षक मनोज कुमार आर्य ने बताया कि कैदियों के एड्स पीड़ित होने का पता उस वक्त लगा जब जिला कारागार में सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर आयोजित एक स्वास्थ्य शिविर में सभी कैदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया. उन्होंने बताया कि 15 कैदियों की जांच रिपोर्ट में एड्स से पीड़ित होने की पुष्टि के बाद जिला कारागार में उनके लिए अलग से एक बैरक बनाया गया है और वहीं उनका उपचार हो रहा है. आर्य ने बताया कि इस समय हरिद्वार जिला कारागार में 1100 बंदी हैं। इससे पूर्व भी जिला कारागार में एड्स पीड़ित मरीज मिल चुके हैं. एचआईवी एक वायरस है जो, उन कोशिकाओं पर हमला करता है जो शरीर को संक्रमण से लड़ने में मदद करती हैं, जिससे व्यक्ति अन्य संक्रमणों और बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। यह एचआईवी से पीड़ित व्यक्ति के कुछ शारीरिक तरल पदार्थों के संपर्क में आने से फैलता है, आमतौर पर असुरक्षित यौन संबंध या इंजेक्शन दवा उपकरण साझा करने के माध्यम से। एड्स का अर्थ है एक्वायर्ड इम्युनो डेफिसियेन्सी सिन्ड्रोम। एड्स, एचआईवी संक्रमण का अंतिम और सबसे गंभीर चरण है। जैसे कि एचआईवी इंफेक्शन लगभग 10 वर्षों में एड्स में बदल जाता है। एड्स से पीड़ित लोगों में व्हाइट ब्लड सेल्स की संख्या बहुत कम होती है और प्रतिरक्षा प्रणाली गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो जाती है। उन्हें अतिरिक्त बीमारियां हो सकती हैं जो संकेत करती हैं कि वे एड्स में बदल गए हैं।

लोगों से नीतीश कुमार ने सतर्कता बरतने की अपील....

भीषण आंधी-पानी और वज्रपात के कहर से 58लोगों की मौत

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने किया मुआवजे का ऐलान

पटना/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । बिहार में आंधी, पानी और वज्रपात से गुरुवार को 58 लोगों की मौत हो गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, गुरुवार को बिहार के अलग-अलग इलाकों में हुए वज्रपात में 23 लोगों की मौत हो गई है। जबकि आंधी और बारिश के दौरान पेड़ और दीवार गिरने से 35 लोगों की मौत हो गई। आंधी की वजह से सबसे ज्यादा नालंदा जिले में 22 लोगों की मौत हो गई। वज्रपात से 23 लोगों की मौत हो गई इसमें सीवान में 4, जमुई में 3, सहरसा, अररिया और सारण में दो-दो, पटना, जहानाबाद, भोजपुर, दरभंगा, अरवल, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, कटिहार और भागलपुर में 1-1 शख्स की जान चली गई। आंधी और बारिश से 35 लोगों की मौत हुई है। जिनमें नालंदा मे 22, भोजपुर में 5, गया में 3, और गोपालगंज जहानाबाद पटना अरवल और मुजफ्फरपुर में एक-एक व्यक्ति की मौत हो गई। बता दें कि दो दिन पहले भी बिहार में वज्रपात से 22 लोगों की मौत हो गई थी। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वज्रपात से जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों के लिए मुआवजे का भी ऐलान किया है। मुख्यमंत्री ने सभी मृतकों के परिजनों को तत्काल चार-चार लाख रुपये की अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिये हैं। बता दें कि बुधवार को वज्रपात की घटनाओं के कारण बेगूसराय जिले में 05, दरभंगा जिले में 04, मधुबनी जिले में 03 एवं समस्तीपुर जिले में 01 व्यक्ति की मौत का मामला सामने आया। वज्रपात के कारण बुधवार को 22 लोगों ने अपनी जान गंवाई थी। इस तरह पिछले 48 घंटों में कुल 58लोग वज्रपात की वजह से अपनी जान गंवा चुके हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम होने पर वज्रपात से बचाव के लिये आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सुझावों का अनुपालन करें। खराब मौसम में घरों में रहें और सुरक्षित रहें। बिहार में वज्रपात से ज्यादा मौतों के कई कारण हैं, जिनमें जलवायु परिवर्तन, मानसून के दौरान नमी और बारिश के पैटर्न में बदलाव और ग्रामीण क्षेत्रों में खेती के दौरान लोगों का खुले में रहना शामिल है।

भाजपा का बड़ा कदम, वक्फ कानून पर शुरू होगा मुस्लिमों को लेकर खास अभियान

विपक्षी दलों पर आरोप लगाया कि वे वोट बैंक की राजनीति के तहत संशोधित कानून के प्रावधानों के बारे में मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं : नड्डा

नई दिल्ली/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । भारतीय जनता पार्टी वक्फ (संशोधन) अधिनियम के फायदों का प्रचार करने और विपक्ष की आलोचना का मुकाबला करने के लिए 20 अप्रैल से एक पखवाड़े तक के लिए जन जागरूकता अभियान शुरू करेगी जिसमें विशेष रूप से मुसलमानों को लक्षित किया जाएगा। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजीजू ने बृहस्पतिवार को पार्टी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए यह बात कही। देश भर के भाजपा पदाधिकारियों ने यहां एक कार्यशाला में भाग लिया। इसमें नड्डा ने विपक्षी दलों पर आरोप लगाया कि वे वोट बैंक की राजनीति के तहत संशोधित कानून के प्रावधानों के बारे में मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं। पार्टी सूत्रों ने यह जानकारी दी। नड्डा ने जोर देकर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार वक्फ की संपत्तियों के पारदर्शी और कुशल प्रबंधन के साथ ह्यपसमांदा' (पिछड़े) मुसलमानों और महिलाओं को प्रबंधन और कल्याण कार्यक्रमों में हितधारक बनाने के लिए दृढ़ है। भाजपा शासित राज्यों के वक्फ बोर्डों के सदस्यों और पार्टी संगठन, जिसमें इसकी अल्पसंख्यक शाखा भी शामिल है, ने दिन भर की कार्यशाला में भाग लिया। नड्डा ने कहा कि आठ अप्रैल को लागू हुआ नया कानून वक्फ संपत्तियों का उपयोग गरीब मुसलमानों और महिलाओं के कल्याण के लिए करने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि यह इन संपत्तियों को लोगों के एक छोटे लेकिन प्रभावशाली वर्ग के नियंत्रण से मुक्त करेगा और उन्हें अल्पसंख्यक समुदाय के समग्र लाभ के लिए खोल देगा। सूत्रों ने बताया कि भाजपा महासचिव राधा मोहन दास अग्रवाल और पार्टी की अल्पसंख्यक शाखा के अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी उन नेताओं में शामिल हैं जिन्हें पांच मई तक चलने वाले अभियान की अगुआई का जिम्मा सौंपा गया है।

आखिर कर भारत के शिकंजे में आया आंतकी तहव्वुर राणा, देशवासियों का लंबा इंतजार खत्म

राणा को भारत प्रत्यर्पित करवाना मोदी सरकार की कूटनीतिक जीत

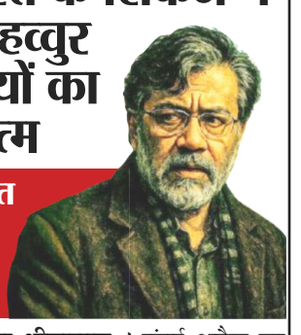

नई दिल्ली / भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । मुंबई अटैक का मास्टरमाइंड आंतकी तहव्वुर राणा भारत आ गया है। बहुत मेहनत और कूटनीतिक प्रयासों के बाद आखिरकार अमेरिका से घसीटकर राणा को भारत लाया गया है। अमेरिका से आंतकी को स्पेशल विमान में लाया गया है। राणा का विमान दिल्ली के पालम एयरपोर्ट पर उतरा। उसके साथ भारतीय सुरक्षा एजेंसियों की एक टीम थी। इस तरह देशवासियों का लंबा इंतजार खत्म हुआ। अब आंतकी राणा से गुनाहों का हिसाब होगा।26/11 मुंबई आतंकी हमले के आरोपी आंतकी राणा को तिहाड़ जेल में रखा जा सकता है। तहव्वुर राणा तिहाड़ जेल में एक हाई सुरक्षा वार्ड में रखा जाएगा। तहव्वुर राणा को लेकर एक विशेष चार्टर्ड विमान अमेरिका से भारत के लिए रवाना हुआ था।तहव्वुर को अमेरिका से भारत लाने में लंबी कानूनी लड़ाई के बाद आखिरकार प्रत्यर्पित किया गया। सूत्रों ने बताया कि राणा को एनआईए यानी राष्ट्रीय जांच एजेंसी की हिरासत में लिया जाएगा।तहव्वुर राणा पर कई धाराओं के तहत आरोप लगाए गए हैं। इसमें आपराधिक साजिश, भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ना, हत्या, जालसाजी और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम शामिल हैं। हालांकि, मुंबई पुलिस को अभी तक उसके शहर में स्थानांतरण के बारे में कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। डेविड कोलमेन हेडली का सहयोगी होने के अलावा, ऐसा माना जाता है कि राणा के पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के साथ करीबी संबंध थे। राजनैतिक तौर पर आंतकी राणा का भारत पहुंचना मोदी सरकार की कूटनीतिक जीत है। पीएम मोदी और केंद्र सरकार हमेशा से ही आंतक और आंतकवादियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की बात कह रही है।

लाल किले और जामा मस्जिद पर बम विस्फोट की धमकी

सुरक्षा एजेंसियों ने चलाया अभियान

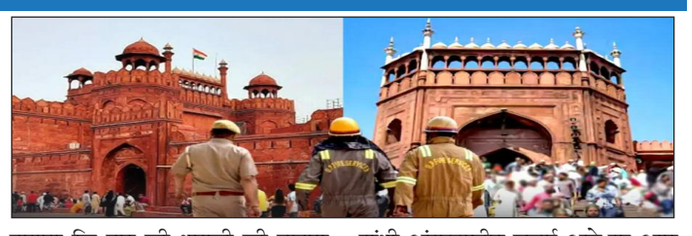

नई दिल्ली/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । राजधानी दिल्ली में गुरुवार को पुलिस विभाग और सुरक्षा एजेंसियों के बीच हड़कंप मच गया। दरअसल, दिल्ली में स्थित ऐतिहासिक लाल किले और जामा मस्जिद को निशाना बनाकर बम विस्फोट करने की धमकी दी गई थी। इसके बाद सुरक्षा एजेंसियों ने तुरंत ही मौके पर पहुंच कर गहन तलाशी अभियान चलाया। हालांकि, जांच में कुछ भी नहीं मिला और ये धमकी फर्जी साबित हुई है। दिल्ली फायर सर्विस के एक अधिकारी ने गुरुवार को इस पूरी घटना के बारे में जानकारी दी है। अधिकारी के मुताबिक, गुरुवार को सुबह नौ बजकर तीन मिनट पर स्मारक परिसर में बम होने की खबर मिली थी। इसके बाद टीम तुरंत मौके पर पहुंच गईं। हालांकि, तलाशी लेने के बाद वहां पर कुछ भी नहीं निकला और धमकी फर्जी साबित हुई। दिल्ली फायर सर्विस के अधिकारी ने कहा- ह्यह्यहमने घटनास्थल पर दमकल का एक वाहन भेजा और वहां गहन तलाशी ली। हालांकि, घटनास्थल पर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला।

वहीं, इस पूरी घटना पर दिल्ली पुलिस ने भी बयान जारी किया है। पुलिस ने बताया कि बम की धमकी की सूचना मिलने के बाद बम निरोधक दल और सी आई एस एफ ने पूरे परिसर की गहन जांच की। हालांकि, कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। पुलिस ने कहा कि यह एक फर्जी सूचना थी।

दूसरी ओर गुरुवार को दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आग लग गई। ये आग टर्मिनल तीन पर फूड कोर्ट के पास एक एस्केलेटर के रबर वाले हिस्से में लगी।

इसे मामूली आग बताया जा रहा है जिस पर तुरंत काबू पा लिया गया। आग लगने का कारण अभी पता नहीं चल पाया है।

अमेरिकी टैरिफ के खिलाफ चीन का नया प्लान ! ट्रेड वॉर में यूरोप को बना रहा हथियार, वैश्विक बाजार पर मंडराया संकट

ट्रंप ने ज्यादातर देशों पर लगाए गए शुल्क को अचानक 90 दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला किया

नई दिल्ली/ भव्य खबर/ एजेंसी । अमेरिका द्वारा शुल्क बढ़ाए जाने के बाद चीन अन्य देशों से संपर्क कर रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि बीजिंग अमेरिका को कदम पीछे हटाने के लिए मजबूर करने के वास्ते संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास कर रहा है। वैश्विक बाजार में मंदी की आशंका के बीच बुधवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ज्यादातर देशों पर लगाए गए शुल्क को अचानक 90 दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला किया, हालांकि उन्होंने चीन से आयात पर शुल्क की दर बढ़ाकर 125 प्रतिशत कर दी है। ट्रंप ने कहा कि ये देश अधिक अनुकूल शर्तों पर बातचीत करने के लिए राजी हैं। चीन ने बातचीत करने से इनकार कर दिया था और कहा था कि अमेरिका ह्यमक्कार' है और वह शुल्क युद्ध में "अंत तक लड़ेगा"। इसके बाद ट्रंप ने चीनी आयात पर कर की दर को और बढ़ाकर 125 प्रतिशत कर दिया। चीन ने जवाबी कार्रवाई करते हुए अमेरिकी वस्तुओं पर 84 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है, जो बृहस्पतिवार से प्रभावी हो गया है। इन घटनाक्रम के बीच चीन ने अब यूरोप पर ध्यान केंद्रित किया है। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन के बीच फोन पर बातचीत हुई जिसके जरिए ह्यह्यदुनिया को एक सकारात्मक संदेश देने की कोशिश की गई है।" दोनों एक दूसरे के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार हैं। सरकारी समाचार एजेंसी ह्यशिन्हुआ' ने अपनी एक खबर में कहा,ह्यह्य चीन यूरोपीय संघ के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार है ताकि चीन और यूरोपीय संघ के नेताओं के बीच जो समझ बनी है उस पर मिल कर अमल किया जा सके। चीन के वाणिज्य मंत्री वांग वेंताओ और यूरोपीय संघ के व्यापार एवं आर्थिक सुरक्षा आयुक्त सेफकोविक के बीच अमेरिकी शुल्क के मुद्दे पर मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से चर्चा हुई। शिन्हुआ ने अपनी खबर में वांग के हवाले से कहा कि शुल्क "सभी देशों के वैध हितों का गंभीर उल्लंघन करते हैं, डब्ल्यूटीओ के नियमों का गंभीर उल्लंघन करते हैं, नियम-आधारित बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं और वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।" इसमें कहा गया, ह्यह्य यह एकतरफावाद, संरक्षणवाद और आर्थिक तौर पर परेशान करने का कार्य है। चीन परामर्श और बातचीत के माध्यम से मतभेदों को हल करने के लिए तैयार है लेकिन अगर अमेरिका अपने रूख पर अड़ता है तो चीन अंत तक लड़ेगा।" वांग ने आसियान देशों से भी बात की है जबकि प्रधानमंत्री ली ने व्यापारिक दिग्गजों से मुलाकात की है। शिन्हुआ ने ली के हवाले से कहा कि चीन ने ह्यह्य पूरा मूल्यांकन कर लिया है और सभी तरह की अनिश्चितताओं से निपटने के लिए तैयार है और वह स्थिति के हिसाब से नीतियां पेश करेगा।" देशों को लामबंद करने की चीन की कोशिशों के बीच ऐसा नहीं है सभी देश चीन के साथ जुड़ने में दिलचस्पी रखते हैं। बहुत से ऐसे देश जिनका चीन के साथ विवाद रहा है वे इसमें दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने संवाददाताओं से कहा, ह्यह्यहम अपनी बात करते हैं और ऑस्ट्रेलिया का रुख यह है कि मुक्त और निष्पक्ष व्यापार ही अच्छा है। हम सभी देशों के साथ बातचीत करते हैं, लेकिन हम ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय हित के लिए खड़े हैं।" माना जा रहा है कि भारत ने सहयोग संबंधी चीन के आह्वान को तवज्जो नहीं दी है। वहीं चीन का करीबी देश रूस पूरे परिदृश्य में कहीं नहीं है।

वक्फ कानून के विरोध में क्यों हो रही है हिंसा ?

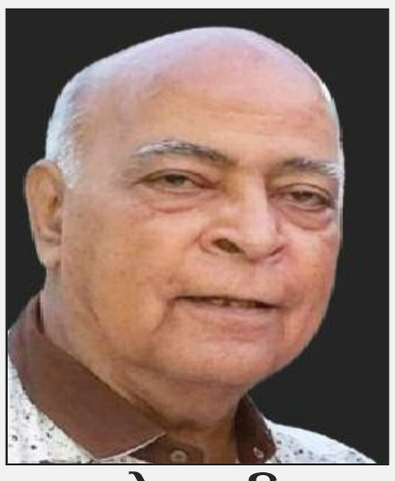

अशोक भाटिया

देशभर में वक्फ कानून को लेकर राजनीतिक और सामाजिक माहौल लगातार गरमाता जा रहा है। कहीं इस कानून के समर्थन में बोलने पर लोगों को पीटा जा रहा है, तो कहीं विरोध के नाम पर हिंसा और आगजनी हो रही है। सड़क से सदन तक, वक्फ कानून को लेकर डराने वाली तस्वीरें सामने आ रही हैं।

देश में नया वक्फ कानून लागू हो गया है। केंद्र सरकार ने 8 अप्रैल को वक्फ संशोधन अधिनियम की अधिसूचना जारी कर दी है। इसमें कहा गया है कि आठ अप्रैल से पूरे देश में वक्फ अधिनियम को प्रभावी कर दिया गया है। बता दें, बीते सप्ताह संसद में लंबी चर्चा के बाद वक्फ संशोधन अधिनियम पारित हुआ था, 5 अप्रैल को राष्ट्रपति ने इसे अपनी मंजूरी दी थी। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं था कि नया वक्फ कानून देश में कब से लागू होगा। नए वक्फ अधिनियम में कई बदलाव किए गए हैं, जिसमें सबसे विवादित संशोधन वक्फ बोर्ड में दो गैर-मुस्लिमों को शामिल करना है। इसको लेकर पूरे देश में बवाल मचा हुआ है और मुस्लिम समाज के लोग प्रदर्शन भी कर रहे हैं, यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट में भी कई याचिकाएं डाली गई हैं। देशभर में वक्फ कानून को लेकर राजनीतिक और सामाजिक माहौल लगातार गरमाता जा रहा है। कहीं इस कानून के समर्थन में बोलने पर लोगों को पीटा जा रहा है, तो कहीं विरोध के नाम पर हिंसा और आगजनी हो रही है। सड़क से सदन तक, वक्फ कानून को लेकर डराने वाली तस्वीरें सामने आ रही हैं। ये तब है जब वक्फ कानून का मामला देश की सबसे बड़ी अदालत में पहुंच चुका है। बड़ी बात ये है कि 15 या 16 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट में वक्फ कानून के खिलाफ डाली गई अर्जी पर सुनवाई होनी है। उत्तर प्रदेश के संभल में जाहिद सैफी को इसलिए पीटा गया क्योंकि उन्होंने वक्फ कानून का समर्थन किया था। कानपुर में ओला टैक्सी ड्राइवर ने एक वरिष्ठ अधिकारी की इसलिए पिटाई कर दी क्योंकि वह फोन पर वक्फ कानून की चर्चा कर रहे थे। मणिपुर में बीजेपी नेता अली असगर का घर जला दिया गया क्योंकि उन्होंने इस कानून का समर्थन किया था। वहीं, जम्मू-कश्मीर विधानसभा में वक्फ कानून को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायक आपस में भिड़ गए। इतना ही नहीं, मंगलवार को बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ कानून के खिलाफ प्रदर्शन उग्र हो गया और प्रदर्शनकारियों ने कई वाहनों को आग लगा दी। इसके बाद पुलिस को लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोले दागने पड़े। मुर्शिदाबाद के कुछ इलाकों में इठरर की धारा 163 लागू करनी पड़ी है। इन इलाकों में अगले 48 घंटों तक निषेधाज्ञा लागू रहेगी और किसी भी प्रकार के सामूहिक जमावड़े पर रोक होगी। एक वरिष्ठ जिला पुलिस अधिकारी के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पथराव करना शुरू कर दिया और इसके बाद मची अफरातफरी में कुछ पुलिस वाहनों में भी आग लगा दी गई। दरअसल वक़्फ़ बोर्ड अधिनियम के पारित होने

के बाद से ही कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी नेता व संगठन देश के मुसलमानों को भड़काने बरगलाने व हिंसा के लिए उकसाने में सतत रूप से सक्रिय हैं। झूठ फैलाकर दुष्प्रचार करने वाली इस गैंग में अब कुछ कथित मुस्लिम बुद्धिजीवी भी कूद पड़े हैं जिन्होंने हाल ही में एक पत्र देश के मुस्लिम सांसदों को लिखा है। विश्व हिंदू परिषद के अखिल भारतीय प्रचार प्रसार प्रमुख श्री विजय शंकर तिवारी का कहना है कि यह पत्र मिथ्या प्रचार कर मुस्लिम समाज को हिंसा व देश विरोध के लिए प्रेरित करने के साथ संसदीय व्यवस्था तथा संविधान का सीधा सीधा उल्लंघन है। इस पत्र के माध्यम से उनके मुस्लिम इंडिया' बनाने के मंसूबों की भी कलई खुल गई है जो सपना कभी कट्टरपंथी नेता सैयद शहाबुद्दीन ने भी देखा था।पत्र में अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा की तो बात की है किंतु उसमें नाम सिर्फ मुसलमानों का लिया है। इन सब के लिए देश से बड़ा मजहब है, जिसके लिए ये लोग किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हैं। इन्हें पता है कि जब मुस्लिम कट्टरपंथी सड़कों पर उतरते हैं तो हिंसा उपद्रव व आगजनी के अलावा कुछ नहीं करते फिर भी उन्हें इसके लिए उकसा रहे हैं। विहिप ने यह भी कहा कि मजहबी आधार पर भारत के एक और विभाजन व 'मुस्लिम इंडिया' बनाने का इनका दिवास्वप्न तो कभी पूरा नहीं होगा किंतु हां इनके इस भड़कावे के परिणाम स्वरूप देश भर में यदि कुछ उपद्रव हुआ तो उसकी जिम्मेदारी इन सभी हस्ताक्षरकताओं को लेनी होगी और सम्पूर्ण देश के समक्ष ये अपराधी के रूप में खड़े होंगे। विहिप ने कहा कि यह स्मरण रखना चाहिए कि इन कथित मुसलमानों के अलावा देश के सभी अल्पसंख्यक इस नए कानून से प्रसन्न हैं क्योंकि अधिकांश लोग वक्फ बोर्ड व उसके अवैध कब्जाधारियों के आतंक से त्रस्त हैं।स्मरण रहे कि भारत एक संप्रभु, पंथ निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य है, जिसकी मूल आत्मा संविधान है। किसी भी संगठन द्वारा यह कहना या संकेत देना कि उनके लिए मजहबी कानून संविधान से ऊपर है, न केवल भारत की एकता और अखंडता के लिए खतरा है, बल्कि यह लोकतंत्र और न्याय व्यवस्था का भी अपमान है।हम केंद्र सरकार और न्यायपालिका से अपेक्षा करते हैं कि इस पत्र प्रकरण को गंभीरता से लिया जाए क्योंकि इसी मानसिकता ने पहले ही भारत का विभाजन कराया था। संविधान से ऊपर मजहब को रखने वाली सोच देश की आंतरिक सुरक्षा और सामाजिक समरसता के लिए भी घातक हो सकती है। अब सवाल यह भी उठता है कि आखिर इन मतभेद के बीच वाद और संवाद की जगह हिंसक सोच क्यों? क्या समाज में सहनशीलता घट रही है और साम्प्रदायिकता बढ़ रही है? क्या किसी मुद्दे पर वैचारिक मतभेद समाज में हिंसा को बढ़ावा दे रहा है? क्या भारत जैसे देश में हिंसा वाली सोच अब सबसे बड़ा खतरा है? सवाल इसलिए उठ रहे है क्योंकि इन तीन कृषि कानून का विरोध हुआ तो हिंसा की जगह सत्याग्रह की राह आंदोलनकारियों ने चुनी। सीएए का विरोध हुआ तो आंदोलनकारियों ने हिंसा की बजाय अहिंसात्मक प्रदर्शन की राह अपनाई। लेकिन वक्फ कानून के विरोध-प्रदर्शन के बीच कुछ जगह हिंसा की घटनाएं सामने आई। क्या हिंसक सोच, वक्फ कानून का विरोध कर रहे लोगों के आंदोलन को कमजोर कर सकता है? इन किसी मुद्दे पर मनभेद और मतभेद के बीच वाद-संवाद तो ठीक है, लेकिन वाद संवाद की लक्ष्मण रेखा क्यों बार-बार टूट रही है। देश में पर्व और त्योहार पर तनाव है, मंदिर-मस्जिद को लेकर तनाव है, अब तो संसद से बने कानून को लेकर भी तनाव है। आखिर हर मुद्दों में घुली सांप्रदायिकता की बीमारी की दवा क्या है? मतबल विरोध-प्रतिरोध तो ठीक है लेकिन इतनी नफरत क्यों, इतना क्रोध क्यों? सवाल बड़ा है, क्योंकि एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में सांप्रदायिक दंगों के ग्राफ में तेजी से उछाल आया है। अब जबकि सुप्रीम कोर्ट में इस नए कानून के खिलाफ 10 से ज्यादा याचिकाएं दाखिल हुई हैं है तो हिंसा होना बेवजह है । वक्फ कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करने वालों में कई बड़े नाम शामिल हैं। इसमें ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीयत उलमा-ए-हिंद जैसी संस्थाएं हैं। इसके अलावा पार्टियों के नेता भी कोर्ट पहुंचे हैं। इनका कहना है कि यह कानून संविधान के कई नियमों जैसे धार्मिक आजादी और समानता के अधिकार का उल्लंघन करता है। याचिकाकताओं का आरोप है कि सरकार इस कानून के जरिए वक्फ संपत्तियों पर ज्यादा नियंत्रण लेना चाहती है। कई जानकारों का दावा है कि सुप्रीम कोर्ट ने अपने पुराने फैसले में यह स्पष्ट कर चुका है कि ह्यएक बार वक्फ, हमेशा के लिए वक्फह्न होता है। यानी अगर कोई संपत्ति वक्फ को दे दी जाती है तो उस संपत्ति का स्वरूप आगे कभी नहीं बदलेगा।केंद्र सरकार ने इन याचिकाओं को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दाखिल कर दी है ताकि वह अपनी बात रख सके। सरकार का कहना है कि यह कानून देश के हित में है और इसे बनाने में सभी नियमों का पालन किया गया है। सरकार नहीं चाहती कि कोर्ट बिना उसकी बात सुने कोई फैसला दे, जिससे कानून पर रोक लग जाए या उसे रद्द कर दिया जाए। इसलिए उसने पहले ही कोर्ट में अर्जी देकर कहा कि कोई भी फैसला लेने से पहले उसका पक्ष सुना जाए।केंद्र सरकार का कैविएट दाखिल करने का मुख्य मकसद यह सुनिश्चित करना है कि वक्फ कानून को लेकर कोई जल्दबाजी में फैसला न हो। सरकार चाहती है कि कोर्ट इस कानून के पीछे की मंशा और इसके फायदों को समझे। साथ ही, वह उन आरोपों का जवाब देना चाहती है जो याचिकाकताओं ने लगाए हैं। सरकार का मानना है कि अगर उसकी बात नहीं सुनी गई तो कानून के खिलाफ गलत धारणा बन सकती है। इसलिए वह कोर्ट में अपनी पूरी तैयारी के साथ जाना चाहती है।

संपादकीय

राज्यपाल पर लगाम

अमृता आर. पंडित

सर्वोच्च न्यायालयय ने तमिलनाडु. सरकार बनाम राज्यपाल के मामले में जो फैसला दिया है, वह कई अर्थों में एक निर्णायक फैसला है जिसने तमिलनाडु. के वर्तमान राज्यपाल आर. एन. रवि की भूमिका को न केवल कड़ी आलोचना के घेरे में खड़ा किया, बल्कि उसे सीमित भी कर दिया। इस फैसले ने राज्यपालों द्वारा विशेषकर उन राज्यों में जहां केंद्र सरकार के विरोधी दलों की सरकारें हैं, सरकारों पर मनमानी तरीके से अपने अधिकारों द्वारा अंकुश लगाने के प्रयासों को लगभग समाप्त कर दिया है। राज्यपाल की भूमिका को सीमित तो कर दिया है, साथ ही उसे नियमबद्ध भी कर दिया है। न्यायालय ने अपने फैसले में कहा है कि राज्यपाल संवैधानिक तरीके से जनता द्वारा चुनी गई सरकार के विधिवत पारित विधेयकों को स्वीकृति देने के मामले में अनिश्चित अवधि तक लंबित नहीं रख सकते। अब आगे से कोई राज्यपाल किसी भी पारित विधेयक को एक महीने से अधिक अपने पास लंबित नहीं रख सकता। अगर यह विधेयक राज्यपाल के द्वारा वापस कर दिया जाता है, और पुर्नविचार के लिए पुनः उसके पास आता है तो वह उसे राष्ट्रपति को भी नहीं भेज सकते। राष्ट्रपति को वह पहली बार में ही भेज सकेंगे। अगर निश्चित अवधि के बाद भी कोई विधेयक लंबित रखा जाता है तो उसे स्वतः स्वीकृत मान लिया जाएगा। इस बिना पर अदालत ने तमिलनाडु. सरकार द्वारा पारित वे सभी विधेयक जिन्हें राज्यपाल ने अपने पास दबा रखा था, स्वीकृत मान लिए जाएंगे। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले से यह तो तय है कि अब कोई भी विधेयक राज्यपाल की मनमर्जी की जकड़बंदी की गिरफ्त में नहीं रहेगा। शीर्ष अदालत ने इस समुचित प्रक्रिया को समयबद्ध और सीमाबद्ध करके निश्चित तौर पर एक बड़ा काम किया है और इससे राज्यपाल तथा राज्य सरकारों के बीच उठने वाले विलंब संबंधी विवादों पर रोक लगेगी। लेकिन भविष्य में इस पर नजर रखनी होगी कि ऐसी सूरत में जब केंद्र में किसी और दल की सरकार हो और राज्य में किसी और दल की तो राज्य सरकारें अपने राजनीतिक मतभेदों के चलते इस नवनिर्धारित प्रक्रिया का दुरुपयोग न करें। केंद्र सरकार को भी यह ध्यान में रखना होगा कि राज्य पर नियंत्रण रखने के लिए राज्यपाल रूपी हथियार की मारक क्षमता बहुत सीमित कर दी गईहै। उसे भी राज्य के साथ अनावश्यक टकराव को टालना होगा अन्यथा सर्वोच्च न्यायालय का जो फैसला सराहनीय और स्वागतयोग्य लग रहा है, वह विपरीत परिणाम देने वाला सिद्ध न हो।

चिंतन-मनन

सर्वव्यापी है आत्मा

केवल वह जो क्षणिक है, छोटा या नर है, उसे ही सुरक्षा की आवश्यकता है; जो स्थायी है, बड़ा या विशाल है, उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं। सुरक्षा का अर्थ है समय विशेष को लंबा कर देना; इसीलिए सुरक्षा परिवर्तन में बाधक भी होती है। पूर्ण सुरक्षा की स्थिति में रूपांतरण नहीं हो सकता। सुरक्षा के बिना इच्छित रूपांतरण नहीं हो सकता। एक बीज को पौधे में परिवर्तित होने के लिए सुरक्षा चाहिए; एक पौधे के वृक्ष बनने के लिए सुरक्षा चाहिए। अत्यधिक सुरक्षा रूपांतरण में या तो सहायक हो सकती है या बाधक, इसीलिए रक्षक को यह समझ होनी चाहिए कि किस मात्रा तक उसे रक्षा करनी है। सुरक्षा और रूपांतरण- दोनों काल और समय के अनुसार होते हैं और समय से परे होने के लिए इन नियमों का सम्मान आवश्यक है। सुरक्षा एक विशेष समय और नर चीजों तक ही सीमित है। चिकित्सक कब तक किसी को स्वस्थ रख सकता है या बचा सकता है? सदा के लिए? नहीं। सत्य को किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं। शांति और खुशी को सुरक्षा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे क्षणिक नहीं। तुम्हारे शरीर को सुरक्षा की आवश्यकता है, तुम्हारी आत्मा को नहीं; तुम्हारे मन को सुरक्षा की जरूरत है, स्वरूप को नहीं। आत्मा केवल मन और शरीर का समिश्रण नहीं है। आत्मा न मन है, न शरीर। शरीर के अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य है तुम्हें सचेत करना कि तुम कितने सुंदर हो; और तुमको जागरूक करना कि तुम जिन आदर्शों का सम्मान करते हो, उन सभी को तुम अपने जीवन में ढालकर, अपने चारों ओर एक दिव्य-जगत की सृष्टि करो। जो योगासन तुम करते हो, वह शरीर के लिए और जो ध्यान करते हो, वह मन के लिए है। शांत हो या विचलित; मन, मन ही रहता है। रोगी हो या निरोगी; शरीर, शरीर ही रहता है। आत्मा सर्वव्यापी है। शरीर के किसी अंग को उत्तेजित करने से मजा आता है, सुख का आभास होता है।

वरिष्ठ पत्रकारों के हित में ठोस कदम जरूरी !

90 के दशक से पत्रकारिता से जुड़े लोग आज करीब 60 साल या उससे अधिक उम्र के होने वाले हैं। यह वह पीढ़ी है जिसने पत्रकारिता के बदलते स्वरूप को न केवल देखा बल्कि उसे अपने परिश्रम और निष्ठा से संवारने का भी काम किया। परंतु अब, जब वह बुढ़ापे की ओर अग्रसर हैं तो उनके समक्ष कई महत्वपूर्ण चुनौतियां खड़ी हो रही हैं। गिरता स्वास्थ्य, पारिवारिक जिम्मेदारियां और तकनीकी पिछड़ापन उन्हें परेशान कर रही हैं। उनके समक्ष आर्थिक अस्थिरता सबसे बड़ी चुनौती है। बढ़ती उम्र के कारण उनके पास काम-धंधे का भी अभाव है। पत्रकारीय कार्य के अलावा उन्हें कोई दूसरा काम भी नहीं आता, और ना ही कभी कुछ दूसरा करने की सोची। संघर्षशील पत्रकारों को यह अच्छी तरह पता है कि पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जिसमें ना तो कोई निश्चित वेतनमान होता है और ना ही कोई सुनिश्चित भविष्य निधि। ज्यादातर मीडिया हाउस में कार्यरत पत्रकारों को कभी भी सेवा से हटाया जा सकता है। इसके अलावा फ्रीलांस पत्रकारों की स्थिति तो और भी बदतर है। नई तकनीकी की वजह से अब उनसे कोई कंटेंट भी लिखवाना नहीं चाहता। ऐसे में अपने बच्चों के लिए वह रोटी का जुगाड़ कहां से कर पाएंगे? वह एक बड़ी समस्या है। ऐसे कई पत्रकार हैं जो आज अपने जीवन के उस पड़ाव पर पहुंच चुके हैं, जहां उन्हें कोई आर्थिक सहारा देने वाला नहीं है। इसलिए सरकार को ऐसे पत्रकारों के कल्याण के लिए पेंशन योजना जरूर लागू करनी चाहिए ताकि उन्हें वित्तीय सुरक्षा मिल सके। बढ़ती उम्र के साथ उनके स्वास्थ्य की समस्या बढ़ रही है। कई बीमारियां घेर रही हैं। पैसे के अभाव में वह महंगे इलाज नहीं करा पाते। महंगे हेल्थ इंश्योरेंस उनकी पहुंच से बाहर होते हैं। ऐसे में केंद्र और राज्य सरकारों को उनके लिए स्वास्थ्य बीमा योजनाएं सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि समय रहते उन्हें उचित चिकित्सा सुविधा मिल सके। हालांकि केंद्र सरकार ने मान्यता प्राप्त पत्रकारों के लिए केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के तहत सुविधाएं प्रदान की हैं, जो नाकाफी है। मान्यता प्राप्त पत्रकारों के अलावा भी कई पत्रकार हैं जो इन सुविधाओं से वंचित हैं। पत्रकार कल्याण योजना के तहत केंद्र सरकार प्रदत्त सुविधाओं को भी और बढ़ाया जाना चाहिए। पहले प्रतिष्ठित पत्रकारों को रेल यात्रा में रियायत मिलती थी परंतु कोविड महामारी के बाद यह सुविधा बंद कर दी गई है। भारत के कई राज्य सरकारों ने पत्रकारों के हित में कई योजनाएं शुरू की हैं। इनमें पेंशन, हेल्थ इंश्योरेंस, टेक्निकल ट्रेनिंग आदि शामिल हैं। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, केरल, हरियाणा, असम, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से वरिष्ठ पत्रकारों को रिटायरमेंट के बाद आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास कर रही है। लेकिन, देश की राजधानी दिल्ली में इस प्रकार की कोई ठोस योजना अभी तक नहीं बनाई गई है। दिल्ली जो कि राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पत्रकारिता का केंद्र है। वहां के वरिष्ठ पत्रकारों के लिए सरकार को विशेष योजनाएं लागू करनी चाहिए। पत्रकारों के लिए पेंशन योजना, स्वास्थ्य बीमा योजना, तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र, परिवहन में रियायत, आवासीय सुविधा एवं आपातकालीन सहायता कोष आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। किसी भी सरकार को पत्रकारों को अनदेखी नहीं करनी चाहिए। पत्रकार अपनी लेखनी और विचारों से न केवल हमें आईना दिखाते हैं बल्कि किसी कार्य की आलोचना करके हमें सही मार्ग पर चलने की राह दिखाते हैं। इनमें कोई दो राय नहीं है कि समय-समय पर पत्रकारों ने सरकार की उपलब्धियों को भी हमेशा जन-जन तक पहुंचाने का काम किया है। कई वरिष्ठ पत्रकारों ने देश की पत्रकारिता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज जब वे अपने जीवन के अंतिम चरण में हैं तो उनके लिए आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। सरकार को पत्रकारों की इन आवश्यकताओं के मद्देनजर ठोस नीतियां बनानी चाहिए ताकि वह सम्मानजनक जीवन जी सके। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारीय कार्य करने वाले लोगों की सुरक्षा और कल्याण की दिशा में ठोस कदम उठाना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। पत्रकारों को अपनी समस्याओं से बारम्बार सरकार और देश के नीति-नियंताओं से अपने हक में अपनी आवश्यकताओं के मद्देनजर अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए। प्रतिदिन आप दूसरों के लिए लिखते-पढ़ते रहे। जीवन भर देश और समाजहित में अपनी रचनाओं को आकार दिया। आज जब आपके हालात अच्छे नहीं तो आप कुछ बोल भी नहीं पा रहे। आपमें जो लिखने-पढ़ने का हुनर है, उसका इस्तेमाल कर शिष्टाचारपूर्वक अपनी बात को सरकार तक क्यों नहीं पहुंचा सकते? लोकतंत्र में जिस अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात आप करते रहे, आज समय आ गया है कि उसे अपने हक के लिए इस्तेमाल करें। हम कलम के सिपाही हैं, हमें इसके अलावा कुछ नहीं आता। मगर जरूरत पड़ी तो सरकार तक अपनी बात पहुंचाने के लिए हमें सड़कों पर भी उतरना चाहिए। मेरी राय में सरकार को सड़क पर उतरने के लिए हमें मजबूर नहीं करना चाहिए। पत्रकारों निवेदन पर गौर करना चाहिए।

सुशील देव

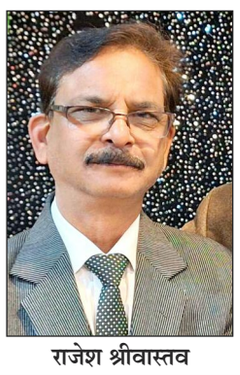

राजेश श्रीवास्तव

"गिरते बाजार में छिपे अवसरः भारतीय निवेशकों के लिए एक विवेकपूर्ण मार्गदर्शन"

भारतीय शेयर बाजार में हाल के महीनों में आई गिरावट ने निवेशकों के बीच एक असहज माहौल पैदा कर दिया है। सेंसेक्स और निफ्टी जैसे बड़े सूचकांकों में अस्थिरता दिखाई दी है, जबकि मिड-कैप और स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश करने वालों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। इस पूरे दौर में विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली ने गिरावट को और गहराया है, जिससे खुदरा निवेशकों के लिए स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण बन गई है। जनवरी 2024 से मार्च 2025 के बीच सेंसेक्स करीब 73,000 से घटकर 69,000 के आसपास आ गया है। वहीं निफ्टी 50 भी लगभग 1,200 अंकों की गिरावट के साथ 20,800 तक फिसला है। मिड-कैप इंडेक्स में करीब 18% की गिरावट दर्ज की गई, और विदेशी निवेशकों ने करीब 35,000 करोड़ की शुद्ध बिकवाली की है। इन आँकड़ों ने बाजार की कमजोर स्थिति को स्पष्ट रूप से सामने रखा है। इस गिरावट के पीछे कई कारण हैं। वैश्विक स्तर पर अमेरिकी ब्याज दरों में स्थायित्व और मंदी की आशंका ने निवेशकों को सतर्क किया है। वहीं ईरान और इजरायल के बीच बढ़ता तनाव और घरेलू महंगाई दर में अस्थिरता ने भी नकारात्मक असर डाला है। इसके साथ ही भारत में आगामी आम चुनावों को लेकर अनिश्चितता और कंपनियों की तिमाही कमाई में उम्मीद से कम वृद्धि भी बाजार को दबाव में ला रही है। इन हालातों का सबसे अधिक असर खुदरा निवेशकों पर पड़ा है। एसआईपी के जरिए हर महीने निवेश तो लगातार हो रहा है, लेकिन मिड और स्मॉल कैप में निवेश करने वालों को 15-25% तक नुकसान हुआ है।

आईपीओ बाजार में भी निवेशकों का भरोसा डगमगाया है, क्योंकि कई आईपीओ लिस्टिंग के दिन ही डिस्काउंट पर खुल रहे हैं। निवेशकों की मनोदशा में भी बदलाव आया है - कई लोग अपनी एसआईपी रोकने लगे हैं या रिडेम्पशन की ओर जा रहे हैं। ऐसे माहौल में “Buy the Dip” जैसी रणनीति भी अब लोगों को जोखिम भरी लगने लगी है। सोशल मीडिया और यूट्यूब जैसे मंचों पर मौजूद निवेश सलाहकारों की साख पर भी सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि उनके सुझाव लगातार असफल साबित हो रहे हैं। हालांकि यह मंदी पहली बार नहीं आई है। 2008 की वैश्विक मंदी और 2020 की कोविड-19 गिरावट जैसे उदाहरण हमारे सामने हैं, जब बाजार ने समय के साथ फिर से मजबूती पाई। बाजार में गिरावट एक सामान्य चक्र का हिस्सा है, जो समय-समय पर वैश्विक और घरेलू परिस्थितियों से प्रभावित होता है। भारत की आर्थिक बुनियाद अभी भी मजबूत मानी जाती है। IMF और विश्व बैंक जैसे संस्थानों का मानना है कि भारत 2025 तक 7% के आसपास जी. डी.पी वृद्धि दर बनाए रख सकता है। देश की युवा जनसंख्या, डिजिटलीकरण की गति और पीएलआई स्कीम जैसे सरकारी प्रयास भारत को दीर्घकालिक रूप से निवेश के लिए आकर्षक बनाते हैं। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे घबराने की बजाय धैर्य और विवेक के साथ आगे बढ़ें। अगर निवेश एसआईपी के जरिए हो रहा है तो उसे जारी रखना ही समझदारी है, क्योंकि गिरते बाजार में नियमित निवेश लंबे समय में औसत लागत को कम करता है। साथ ही, यह समय पोर्टफोलियो को दोबारा संतुलित करने का है। उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों से आंशिक रूप से लार्ज कैप या इंडेक्स फंड्स की ओर झुकना चाहिए। सुरक्षित निवेश जैसे गोल्ड ईटीएफ या सरकारी बॉन्ड्स भी संतुलन लाने में सहायक हो सकते हैं।बाजार की इस गिरावट को अवसर की तरह भी देखा जा सकता है। मजबूत बैलेंस शीट वाली, कम कर्ज और अच्छा डिविडेंड देने वाली कंपनियों में निवेश करने का यह सही समय हो सकता है।

वैल्यू इन्वेस्टिंग का सिद्धांत यहीं से शुरू होता है - जब बाजार सस्ता हो। अंततः कहा जा सकता है कि बाजार का अल्पकालिक भविष्य अनिश्चित जरूर है, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टिकोण से भारत अब भी अवसरों से भरा देश है। यदि निवेशक संयम, समझदारी और दीर्घकालिक नजरिए को अपनाएं, तो यह मंदी उनके लिए लाभ का कारण बन सकती है, न कि नुकसान का।

महिपालपुर से दिल्ली पुलिस ने एक बांग्लादेशी नागरिक को दबोचा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण पश्चिम जिला पुलिस की स्पेशल स्टाफ टीम ने गुरुवार को भारत में अवैध रुप से रह रहे एक बांग्लादेशी नागरिक को महिपालपुर इलाके से गिरफ्तार किया। आरोपित मोहम्मद 15 वर्षों से भारत में अवैध रूप से रह रहा था। आरोपित को सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद बांग्लादेश भेजने के लिए निर्वासन केंद्र में भेज दिया गया है। एसीपी विजय सिंह ने बताया कि स्पेशल स्टाफ के इंस्पेक्टर विजय बालियान की टीम अवैध प्रवासियों के बारे में जानकारी जुटा रही है। इसी कड़ी में टीम को सूचना मिली कि महिपालपुर इलाके में एक अवैध बांग्लादेशी नागरिक रह रहा है। पुलिस ने संदिग्ध मोहम्मद की पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान आरोपित ने खुद को भारतीय नागरिक बताया, लेकिन सही दस्तावेज दिखाने में वह असफल रहा। जिसके बाद सख्ती से पूछताछ करने पर उसने बताया कि वह मोंटो पुत्र मो. यूसुफ निवासी ग्राम मोलूगंज, थाना सोलुमखुला, जिला बागिरहाट, बांग्लादेश का रहने वाला है। 15 वर्ष से भारत में गैर कानूनी तरीके से रह रहा था। अधिकारी ने बताया कि कानूनी औपचारिकताओं के बाद मोहम्मद को विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय (एफआरआरओ) निर्वासन केंद्र भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि और अधिक अवैध प्रवासियों का पता लगाने और निर्वासित करने के लिए अभियान जारी है।

केजरीवाल अभी तक नहीं पचा पाए दिल्ली की हार : बिधूड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण दिल्ली से भाजपा सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा है कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी के अन्य नेता अभी तक आम आदमी पार्टी की हार को पचा नहीं पा रहे। वे दिल्ली की भाजपा सरकार के खिलाफ अनाप-शनाप झूठे आरोप लगा रहे हैं और जबकि जनता ही उनके झूठे आरोपों को नकार रही है। जिस झूठ की राजनीति के कारण आज उनकी यह स्थिति बनी है, आज भी वे उसी नीति पर चल रहे हैं। बिधूड़ी ने कहा कि दिल्ली में हार के बाद केजरीवाल पंजाब में डेरा डाले हुए हैं क्योंकि अब उन्हें पंजाब के हाथ से खिसकने का डर सता रहा है। उन्हें पता है कि पंजाब में जो स्थिति बन गई है, उसमें आम आदमी पार्टी से जनता बुरी तरह निराश हो चुकी है। इसलिए वह लुधियाना पश्चिम की विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिए दिन-रात एक कर रहे हैं जहां उन्होंने अपनी ही पार्टी के राज्यसभा सांसद को ही उम्मीदवार बनाया हुआ है। वह उस सीट को इसलिए जीतना चाहते हैं कि राज्यसभा की सीट खाली हो सके और वह राज्यसभा में पहुंच सकें। इसीलिए उन्होंने दिल्ली का त्याग कर दिया है। बिधूड़ी ने कहा कि दिल्ली चुनाव हारने के बाद अरविंद केजरीवाल अब तक सिर्फ तीन मौकों पर सार्वजनिक तौर पर दिखाई दिए हैं। पहला मौका तो वो था, जब नतीजे वाले दिन ही उन्होंने एक वीडियो जारी किया और खुद की हार स्वीकार करते हुए बीजेपी को बधाई दी थी। फिर दूसरा मौका तब आया, जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री, मंत्री और सारे आप विधायकों को दिल्ली बुलाया और उनके साथ बैठक की। तीसरा मौका तब आया जब आतिशी को नेता प्रतिपक्ष बनाया गया। उसके बाद से ही अरविंद केजरीवाल सार्वजनिक तौर पर दिखाई नहीं पड़े। बिधूड़ी ने कहा कि अब वह बिजली संकट पर बयान जारी कर रहे हैं जबकि वह स्वयं ही दिल्ली में नहीं रह रहे। जाहिर है कि वह केवल झूठी बयानबाजी करके दिल्ली की जनता को धोखा देना चाहते हैं लेकिन जनता उनकी एक नहीं सुन रही। खुद जनता और बिजली कंपनियां ही कह रही हैं कि राजधानी में कोई बिजली संकट नहीं है।

आयुष्मान कार्ड जारी होने से दिल्ली भाजपा का चुनाव 2025 का सबसे बड़ा संकल्प पूरा : वीरेन्द्र सचदेवा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने आज आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत पहले आयुष्मान कार्ड जारी होने का स्वागत किया है और कहा है की इसी के साथ दिल्ली भाजपा के विधानसभा चुनाव 2025 का सबसे बड़ा संकल्प पूरा हो गया है। उन्होने कहा है की आज केन्द्र सरकार एवं दिल्ली सरकार के बीच समझौते के साथ ही दिल्ली में केन्द्रीय स्वास्थ मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने दिल्ली वालों को कुछ आयुष्मान कार्ड जारी कर औपचारिक शुरुआत की है। केन्द्रीय स्वास्थ मंत्री द्वारा संकेतिक आयुष्मान कार्ड वितरण से प्रारम्भ हुई इस आयुष्मान भारत योजना का लाभ शीघ्र ही दिल्ली के 30 लाख निम्न आय लोगों के साथ ही 70 वर्ष से अधिक आयु के लगभग 6 लाख बुजुर्गों तक पहुंचेगा। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की जहां देश के अन्य राज्यों में आयुष्मान कार्ड से लाभार्थी 5 लाख रूपए तक का मेडिकल इलाज पा सकता है वहीं दिल्ली में स्थानीय सरकार के टाप अप के साथ लाभार्थी हर वर्ष 10 लाख रूपए तक का निशुल्क इलाज पा सकेंगे। श्री सचदेवा ने कहा है की दिल्ली भाजपा मंडल स्तर पर आयुष्मान कार्ड जारी करवाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने का जागरूकता अभियान चलायेगी।

सतगुरु बाबा राम जी शाह महाराज की जयंती पर संत सम्मेलन आयोजित

नई दिल्ली (एजेंसी)। सतगुरु बाबा राम जी शाह महाराज की जयंती के मौके पर भगवान वाल्मीकि आश्रम पंचकुइयां रोड स्थित उनके परम शिष्य वाल्मीकि समाज के महामंडलेश्वर कृष्ण साह विद्यार्थी द्वारा बुलाए गए संत सम्मेलन में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पहुंची। सम्मेलन में मंत्री परवेज साहब सिंह वर्मा, मनिंदरजीत सिंह सिरसा, केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा सांसद योगेंद्र चंदोलिया, बांसुरी स्वराज भाजपा विधायक रविकांत उज्जैनवाल पंजाब के वाल्मीकि समाज के महामंडलेश्वर प्रगट नाथ इस्कॉन मंदिर के पुजारी महंत सूरज गिरी हनुमान मंदिर करोल बाग सतीश दास महाराज महामंडलेश्वर रघुवनंद महाराज जैन साध्वी दीप्ति महाराज महंत ज्ञानी जी अखिल भारतीय महर्षि वाल्मीकि साधु अखाड़ा परिषद के प्राचारी महंत राजू चंदेल, महंत ज्ञानी जी मालंदा वाल्मीकि आश्रम पंचकुइयां मंदिर आश्रम रूपेश मेहरा वीर सेन अटवाल, सुमेश लिलोठिया सहित देश की धार्मिक राजनीतिक व्यापारिक महान हस्तियां इस संत सम्मेलन में मौजूद रही।

सीएम रेखा गुप्ता और एलजी वीके सक्सेना ने किया वजीराबाद में यमुना की सफाई का निरीक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने गुरुवार को वजीराबाद स्थित पॉल्यूशन कंट्रोल सेंटर का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने दिल्ली में यमुना नदी की सफाई का जायजा लिया। इस अवसर पर दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री प्रवेश वर्मा भी मौजूद रहे।

दरअसल, दिल्ली की सत्ता पर काबिज होने के बाद भाजपा सरकार लगातार यमुना की सफाई को लेकर स्वच्छता अभियान चला रही है। इसी के चलते दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने वजीराबाद पॉल्यूशन कंट्रोल सेंटर पहुंचकर निरीक्षण किया। उन्होंने वजीराबाद में नाले की सफाई के काम का भी निरीक्षण किया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री प्रवेश वर्मा के अलावा दिल्ली सरकार के कई अधिकारी भी मौजूद रहे।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि अगर सही योजनाबद्ध तरीके से काम किया जाए तो इस जगह को पर्यटन स्थल में तब्दील किया जा सकता है। साथ ही सुबह और शाम के समय लोग वॉक करने के लिए भी यहां आ सकें, जिससे आसपास के इलाके के साथ पूरी दिल्ली के लोगों को भी फायदा होगा और यहां का वातावरण भी स्वच्छ होगा।

बता दें कि दिल्ली सरकार ने बीते महीने पेश किए बजट में यमुना की सफाई के लिए 9,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा था कि स्वच्छता और साफ पानी दिल्ली की पहचान बनेगी। यमुना नदी की सफाई और सीवेज सिस्टम के सुधार के लिए यह बजट पुरानी सरकारों की तुलना में तिगुना है। पुराने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट को 500 करोड़ रुपये की लागत से सुधारने की योजना बनाई गई है।

इससे पहले यह भी जानकारी सामने आई थी कि दिल्ली में यमुना नदी की सफाई को लेकर जल शक्ति मंत्रालय मिशन मोड पर काम कर रहा है। सफाई के लिए विशेषज्ञों से राय ली गई है। मंत्रालय का फोकस दो चरणीय दृष्टिकोण पर है, जिसमें यमुना की सफाई और रिवरफ्रंट बनाना शामिल है।

सूत्रों के अनुसार, यमुना की सफाई और रिवरफ्रंट बनाने का यमुना मास्टर प्लान अपने अंतिम चरण में है। जल्द ही इसे मंजूरी मिलने की संभावना है। दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद ही रेखा गुप्ता अपने कैबिनेट सहयोगियों के साथ यमुना तट पर स्थित वासुदेव घाट पहुंची थीं, जहां उन्होंने यमुना आरती की थी।

भगवान महावीर के 2624 वें जन्म कल्याणक पर शाहदरा में निकली विशाल रथ यात्रा

नई दिल्ली (एजेंसी)। शाहदरा विधानसभा क्षेत्र में जैन समाज के प्रणेता भगवान महावीर के 2624 वें जन्म कल्याणक पर जैन समाज द्वारा जहां गाजे बाजे के साथ विशाल रथ यात्रा निकली गई वहीं इस दौरान विशाल धर्म सभा का भी आयोजन किया गया। धर्म सभा में भारी तादाद में उपस्थित जैन धर्मावलंबियों को संबोधित करते हुए एलक श्री 105 श्री विज्ञान सागर जी महाराज ने कहा कि महावीर जन्मकल्याणक मनाना तभी सार्थक है जब हम भगवान महावीर के संदेश अहिंसा, शान्ति, करुणा व प्रेम को अपने जीवन में आत्मसात करते हुए शांतिपूर्ण, उन्नत एवं संतुलित समाज का निर्माण कर भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चले और उनकी वाणी को जीवन का हिस्सा बनाएं। ज्ञात रहे भगवान महावीर एक युग प्रवर्तक, कालजयी महापुरुष थें। भगवान महावीर की रथयात्रा में जैन संत ऐलक विज्ञान सागर, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा शाहदरा जिलाध्यक्ष विपिन जैन, पूर्व पार्षद निर्मल जैन, समाज के प्रधान रमेश जैन, राकेश जैन, पंकज जैन, विकास जैन, नरेंद्र जैन, राजबीर जैन, एडवोकेट राजेश जैन, दमन जैन, जैन युवा मंच से मोहित जैन, पंकज गर्ग, तरुण जैन, संजय जैन सहित हजारों श्रद्धालु सम्मिलित रहे। मंच संचालन विजेंद्र जैन ने किया। रथयात्रा शाहदरा के छोटा बाजार स्थित जैन मंदिर से शुरू होकर सर्कुलर रोड, फर्श बाजार, बड़ा बाजार, बाबु राम स्कुल होती हुई शालीमार पार्क में आयोजित धर्म सभा स्थल पर पहुंची। यहां पर उपस्थित सभी लोगों द्वारा मुनि श्री द्वारा की गई ज्ञान गंगा की अमृत वर्षा का रसपान किया। उन्होंने यह भी बताया कि जैन समाज के ऐसे आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का प्रचार-प्रसार करना रहता है। रथयात्रा में हाथी घोड़े, बैंड बाजे, स्कूली बच्चे व अहिंसा का संदेश देती झांकियों के साथ चल रहे भगवान महावीर के रथ का श्रद्धालुओं द्वारा जगह जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया व आरती उतारी गई।

पूर्वांचल एकता मंच आयोजित करेगा दो दिवसीय विश्व भोजपुरी सम्मेलन : शिवजी सिंह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भोजपुरी विश्व में 16 देशों में लगभग 25 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली एक अंतरराष्ट्रीय महत्व की एक अत्यंत मधुर भाषा है। भोजपुरी का साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। भोजपुरी की पढ़ाई बहुत से विश्वविद्यालय में पढाई जा रही हैं। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि अब तक भोजपुरी को उसका वास्तविक अधिकार नहीं मिल सका है। जिसको संवैधानिक मान्यता दिलाने और भोजपुरी की विशिष्टता को लोगो तक पहुंचने के लिए पूर्वांचल एकता मंच (विश्व भोजपुरी सम्मेलन) का आयोजन करने जा रही है। दो दिनों तक होने वाले इस सम्मेलन में भोजपुरी से जुड़े देश विदेश के बहुत से विशिष्ट अथिति भाग लेंगे। द्वारका के दादा देव मेला ग्राउंड सेक्टर 8 में आयोजित किया जाएगा।

आयोजन के आयोजक पूर्वांचल एकता मंच के अध्यक्ष शिवजी सिंह ने बताया कि विदित हो कि भारत सरकार द्वारा गठित %सीताकान्त महापात्रा कमिटी% ने भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता हेतु अपनी संस्तुति भी दी थी। करोड़ों भोजपुरी भाषियों की निरंतर मांग के बावजूद आज तक भोजपुरी भाषा को संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है। केंद्र सरकार की एक हाई लेवल कमेटी ने भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं करने की सिफ़ारिश की है। यानी उन्हें राजभाषा का

दर्जा देने से इनकार किया है।

पिछली सरकार ने इन मांगों की जांच के लिए होम मिनिस्ट्री में अतिरिक्त सचिव बी.के. प्रसाद की अध्यक्षता में एक हाई लेवल कमेटी बनाई थी। इसमें होम मिनिस्ट्री, कल्चरल मिनिस्ट्री, एचआरडी, लॉ मिनिस्ट्री, साहित्य अकादमी, राजभाषा विभाग और केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान और रजिस्ट्रार जनरल ऑफ़ इंडिया के सीनियर अफसर शामिल थे। पिछले महीने होम मिनिस्ट्री को सौंपी अपनी रिपोर्ट में इस कमेटी ने आठवीं अनुसूची में मौजूद 22 भाषाओं को शामिल करने की प्रक्रिया और मापदंडों को सही नहीं माना। कमेटी ने यह भी कहा कि इन भाषाओं को शामिल करने से हिंदी के विकास पर प्रभाव पड़ेगा।

अब भोजपुरी भाषा को संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल करने हेतु आर -पार की लड़ाई लड़ने का समय आ गया है इसी उद्देश्य से पूर्वांचल एकता मंच ने 12 और 13 अप्रैल, 2025 को, दिन शनिवार व रविवार को दिन में 10 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक विश्व भोजपुरी सम्मेलन कराने का निर्णय लिया है जिसमें भोजपुरी भाषा, साहित्य और संस्कृति से जुड़े देश विदेश के विद्वान, साहित्यकार, कलाकार और भोजपुरी संगीत, सिनेमा से जुड़े लोग भाग रहे हैं।

इस अवसर पर पूर्वांचल एकता मंच के राष्ट्रीय संयोजक मुकेश सिंह ने बताया कि कार्यक्रम के उद्घाटन करता पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद के साथ श्री अश्विनी चौबे, श्री वीरेंद्र सिंह मस्त और कई सांसद और विशिष्ट प्रतिष्ठित गणमान्य भाग लेंगे। पहले दिन साहित्यिक गोष्ठी, कवि सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा जिसमें दिनेश लाल यादव, मुन्ना सिंह, कल्पना पटवारी सलीके कलाकार भाग लेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम सांसद मनोज तिवारी, केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी और कैबिनेट मंत्री डॉ पंकज सिंह की उपस्थिति में किया जाएगा। वहीं कार्यक्रम के दूसरे दिन का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, कैबिनेट मंत्री कपिल मिश्रा और सांसद हेमा मालनी द्वारा किया जाएगा। वहीं कार्यक्रम में पारंपरिक चैता, भोजपुरी सिनेमा का विशेष सम्मान भोजपुरी स्टार कुणाल सिंह, रवि किशन और दिनेश लाल यादव (निरहुआ) द्वारा किया जाएगा।

जर्जर पड़ी सडकों की सुध लेनी शुरू की दिल्ली की भाजपा सरकार नें : श्री दत्त शर्मा

-ठेकेदारों पर लगाम कसनी शुरू की सरकार ने

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी की सरकार तो सड़कों की मरम्मत कराने की योजना ही बनाती रह गई और वह योजना कागजों तक ही सीमित रही लेकिन दिल्ली की नव निर्वाचित भारतीय जनता पार्टी सरकार नें अपने डेढ़ माह के शासन के भीतर ही ना केवल योजना बना शुरू कर दी है बल्कि इस ओर युद्ध स्तर पर कदम उठाने भी शुरू कर दिए है। यह कहना है घोंडा से पूर्व विधायक श्री दत्त शर्मा का। श्री दत्त शर्मा कहते है कुछ महीने जेल में बंद रहे। अरविन्द केजरीवाल जब बाहर आये थे तो उन्होंने नौटंकी की थी कि उनके जेल जाते ही सडकों की मरम्मत नहीं की गई और उन्होंने मंत्रियों के साथ कई दिनों तक जर्जर हाल सडकों का निरिक्षण भी किया था लेकिन सडकों की हालत में कोई सुधार नहीं दिखा। वहीं भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार ने शपथ लेते ही इस ओर तेजी से कदम उठाने शुरू कर दिए है। श्रीदत्त शर्मा कहते हैं खुद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता तथा पी.डब्लू.डी.मंत्री प्रवेश वर्मा अधिकारियों के साथ बैठक कर योजनाएं बना रहे हैं तथा जमीन पर उतर कार्य कर रहे है। हमें उम्मीद है जल्द ही दिल्ली की अधिकांश सड़कें ठीक हालत में पहुंच जाएगी। श्री दत्त शर्मा कहते हैं इस साल राजधानी दिल्ली की 600 किलोमीटर लंबी सड़कों की सूरत बदली जाएगी. इसी कड़ी में दिल्ली सरकार द्वारा ढाई सौ किलोमीटर सड़क की मरम्मत का काम मानसून से पहले करवा दिया जाएगा. पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा द्वारा जानकारी दी गई कि ऐसी जर्जर सड़कों की पहचान कर ली गई है। अब इनकी मरम्मत का काम करवाया जाएगा। श्री शर्मा कहते हैं पहले चरण के तहत 250 किलोमीटर और दूसरे चरण के तहत 250 से 300 किलोमीटर तक की सड़कों की मरम्मत करवाई जाएगी. ऐसी खराब सड़कों की पहचान की जा रही है जो खराब हालत में हैं। इसके लिए बजट आवंटन का काम शुरू हो चुका है। यदि मरम्मत के बाद दोबारा कोई सड़क टूटती है तो उसे ठीक करवाने की जिम्मेदारी संबंधित ठेकेदार की होगी। इसकी ऐवज में पीडब्ल्यूडी विभाग कोई खर्चा नहीं देगा। श्री शर्मा कहते है यह नियम बनने से ठेकेदार ईमानदारी से काम करेगें और बेहतरीन क्वालिटी की सडकें दिल्ली की जनता को मिल सकेगीं। श्री दत्त शर्मा नें बताया हर साल 200 से 250 किलोमीटर तक की सड़कों की मरम्मत होती है, लेकिन सरकार अब इसे बढ़ाकर 600 किलोमीटर की योजना पर काम कर रही है। इसी बार पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा 600 किलोमीटर की लंबाई के सड़कों को दुरुस्त करवाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिन जर्जर सड़कों की पहचान हो चुकी है, उनके लिए टेंडर जारी हो चुके हैं। इसी क्रम में नोएडा लिंक रोड, भैरो मार्ग के पास रिंग रोड खंड और आउटर रिंग रोड जैसे इलाकों पर काम शुरू हो चुका है। यहाँ सड़कों के गड्ढे भरे जा रहे हैं।

महापौर जवाब दें आखिर क्यों उन्होन यूजर्स सरचार्ज वसूली रोकने का निर्देश नहीं दए है : कपूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता श्री प्रवीण शंकर कपूर ने कहा है की आम आदमी पार्टी ने जानबूझकर दिल्ली की जनता पर कूड़ा उठाने के नाम पर यूजर्स सरचार्ज लगवाया है। एक ऐसा सरचार्ज पहले भी 2021 में तत्कालीन पूर्वी दिल्ली नगर निगम आयुक्त ने लगाने की कोशिश की थी पर उस वक्त के भाजपा के महापौर ने उस पर रोक लगा दी थी पर इसके ठीक विपरीत आज के आम आदमी पार्टी महापौर श्री महेश कुमार केवल ब्यानबाज़ी कर रहे हैं। महापौर जवाब दें आखिर क्यों उन्होने आज तक इस विषय पर रोक लगाने के लिए ना तो निगम सदन की बैठक बुलाई है और ना ही निगमायुक्त को यूजर्स सरचार्ज वसूली रोकने का निर्देश दिया है। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने कहा है की वास्तविकता यह है की दिल्ली के 75ब्र नागरिक अपने घरों का कूड़ा प्राइवेट सफाई कर्मियों से उठवाते हैं जो मात्र 50 से 100 रूपए प्रतिमाह में यह सेवा करते हैं जो अधिकतम 1200 रूपए प्रति वर्ष बैठता जबकि आम आदमी पार्टी शासित दिल्ली नगर निगम के द्वारा प्रस्तावित यूजर्स सरचार्ज की दर कम से कम 1200 प्रति वर्ष है। श्री कपूर ने कहा है की अधिकांश ग्रुप हाऊसिंग सोसाइटीज के पास अपनी कूड़ा निस्तारण सुविधा है ऐसे में उनसे यूजर्स सरचार्ज की वसूली पूरी तरह अनुचित लगती है। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है की वर्तमान में दिल्ली नगर निगम के पास दिल्ली के 70ब्र क्षेत्रों में से घरों, दुकानों से कूड़ा उठाने के लिए कोई व्यवस्था नही है अत: यूजर्स सरचार्ज को सम्पति कर के साथ वसूलना पूरी तरह गैर कानूनी भी है। दिल्ली की आर.डब्लू.ए. की अंबेला संस्था 'ऊर्जा' भी यूजर्स सरचार्ज का विरोध कर रही है और भाजपा का मानना है की दिल्ली नगर निगम यूजर्स सरचार्ज वसूली रोक कर पहले आर.डब्लू.ए., ग्रुप हाऊसिंग सोसाइटीज एवं व्यापारिक संस्थानों के साथ बैठक करे और इस सारे प्लान पर उनका फीडबैक ले।

दिल्ली: जेपी नड्डा और सीएम रेखा गुप्ता ने आयुष्मान योजना के लाभार्थियों को बांटे कार्ड, केंद्र से मिलेगी 2400 करोड़ की मदद

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में आज दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार की ओर से आयुष्मान भारत योजना के कुछ लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड का वितरण किया गया। विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा और दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आयुष्मान योजना के 22 लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड का वितरण किया। इस दौरान दिल्ली को प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन (पीएम-एबीएम) योजना से जोड़ने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस योजना से जुड़ने के बाद दिल्ली को केंद्र सरकार की ओर से 2400 करोड़ रुपये की अतिरिक्त मदद मिलेगी।

1139 आयुष्मान आरोग्य मंदिर खुलेंगे- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि पीएम-एबीम योजना के तहत हम दिल्ली में 1139 आयुष्मान आरोग्य मंदिर खुलेंगे, जिससे घर के नजदीक ही मरीजों को कई बीमारियों का उपयुक्त इलाज मिलेगा। नड्डा ने ये भी कहा कि दिल्ली के आयुष्मान भारत योजना से जुड़ने के बाद पूरे देश में सिर्फ एक राज्य पश्चिम बंगाल बचा है, जहां पर योजना लागू नहीं है। आने वाले चुनाव में पश्चिम बंगाल में कमल खिलेगा और वहां भी योजना लागू होगी।

10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज- नड्डा ने कहा कि इससे पहले उड़ीसा ने भी इस योजना को लागू करने से मना किया था। वहां पर भी चुनाव हुए कमल खिला और आयुष्मान भारत योजना लागू हुई। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि आज दिल्ली के लिए बहुत बड़ा दिन है। प्रधानमंत्री मोदी के सपने को साकार करते हुए आयुष्मान भारत योजना दिल्ली में लागू हो गई है। आज हमने इसके कुछ लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड का वितरण किया है। अब इन लोगों को हर साल 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज प्राइवेट और सरकारी अस्पताल में मिल सकेगा।

लाभार्थियों के चेहरे पर दिखी खुशी- आयुष्मान कार्ड वितरण के दौरान शाहदरा जिले की लाभार्थी मीनाक्षी बंसल को सबसे पहले आयुष्मान कार्ड दिया गया। इस दौरान उनके ऊपर चेहरे पर इसकी खुशी साफ देखी जा रही थी। वहीं, रोहिणी की रहने वाली अर्चना कुमारी ने बताया कि आयुष्मान कार्ड मिलने पर बहुत खुशी हो रही है। मुझे फोन करके बताया गया था कि आपका आयुष्मान कार्ड बना है। आपको लेने के लिए विज्ञान भवन में आना है तो मैं यहां पहुंची हूं। बहुत अच्छा लग रहा है। इसी तरह शाहबाद डेयरी के रहने वाले संतोष कुमार को भी आयुष्मान कार्ड दिया गया। इस पर उन्होंने कहा कि मैं बिजली का काम करता हूं। मुझे फोन करके बताया गया कि आपका आयुष्मान कार्ड के लिए नाम आया है। आपको कार्ड लेने के लिए बुलाया गया है। मुझे यहां मुख्यमंत्री के हाथों कार्ड दिया गया। बहुत अच्छा लग रहा है। अब 10 लाख रूपये का फ्री इलाज कर सकेंगे। सभी का ऐसा कार्ड होना चाहिए।

एक और लाभार्थी आकाश ने बताया कि वह स्टूडेंट है उनको भी आज आयुष्मान कार्ड मिला है। बहुत खुशी हो रही है। शालीमार बाग के रहने वाले कैलाश चंद ने बताया कि उनके पास एक दिन पहले फोन आया था कि आपका आयुष्मान कार्ड बना है। आपको आयुष्मान कार्ड लेने के लिए कार्यक्रम में विज्ञान भवन जाना है। उसके बाद फिर हम आज यहां पहुंचे हैं। हमें आयुष्मान कार्ड देने के लिए बुलाया गया। बता दें कि अभी दिल्ली के 6.54 लाख गरीब परिवारों के करीब 30 लाख सदस्यों, 70 वर्ष से अधिक उम्र के करीब छह लाख बुजुर्गों, आशा वर्कर, अंत्योदय अन्न योजना, आगंनबाड़ी कार्यकर्ताओं को इसका लाभ मिलेगा।

रजिस्ट्रेशन की शुरुआत आज से होगी-दिल्ली में 5 अप्रैल से आयुष्मान भारत योजना लागू हो चुकी है। लेकिन, आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए रजिस्ट्रेशन की शुरुआत आज से होगी। इस योजना से दिल्ली के लोगों को 10 लाख रुपए का कैशलेस इलाज प्राइवेट अस्पताल में मिलना शुरू हो जाएगा।

इसमें पांच लाख केंद्र सरकार और पांच लाख दिल्ली सरकार का अनुदान होगा।

लाखों लोगों को मिलेगा इस योजना का लाभ: दिल्ली में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लागू होने से छह लाख 54 हजार लोगों को इस योजना का लाभ मिलेगा। 1961 तरह की बीमारियों का इसमें इलाज हो सकेगा। साथ ही देश भर के 30 हजार से ज्यादा अस्पताल आयुष्मान भारत योजना से जोड़े गए हैं। दो लाख 35 हजार परिवारों को इस योजना में अभी शामिल किया जाएगा। दिल्ली के 6.54 लाख गरीब परिवारों के करीब 30 लाख सदस्यों, 70 वर्ष से अधिक उम्र के करीब छह लाख बुजुर्गों, आशा वर्कर, अंत्योदय अन्न योजना, आगंनबाड़ी कार्यकर्ताओं को इसका लाभ मिलेगा।

सीएम धामी ने स्मार्ट क्लासरूम और नए स्कूल भवन का उद्घाटन किया

इस वर्ष के पहले तीन महीनों की कार्ययोजना तैयार

देहरादून/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, हरिद्वार में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह-2025 कार्यक्रम में प्रतिभाग कर नवनिर्मित भवन व स्मार्ट क्लास रूम का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सम्मानित कर उनके कार्यों की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश जब अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था, उस समय राष्ट्र निर्माण की भावना को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आनुषांगिक संगठन के रूप में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने सरस्वती शिशु मंदिर के रूप में जो पौधा रोपित किया था, आज विशाल वट वृक्ष बनकर खड़ा हो गया है। जो देश भर में हमारे नौनिहालों को शिक्षित कर देश को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्या भारती द्वारा देश में 12 हजार से अधिक विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं।

जिनमें लगभग 35 लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्या भारती द्वारा 50 से भी अधिक महाविद्यालय एवं एक विश्वविद्यालय का संचालन किया जा रहा है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा देने के साथ ही उनमें राष्ट्र सेवा, नैतिकता, संस्कृति संरक्षण, प्राकृतिक संरक्षण और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज उत्तराखण्ड में विद्या भारती का एक बड़ा नेटवर्क है। माणा से लेकर सीमांत क्षेत्र धारचूला तक भी शिशु मंदिर और विद्या मंदिर मौजूद हैं।

वर्तमान में विद्या भारती द्वारा 500 से अधिक विद्यालय प्रदेश के अंदर संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें एक लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज इस विद्यालय मे 04 स्मार्ट क्लासेज का लोकार्पण होना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि विद्या भारती के स्कूल किसी भी आधुनिक स्कूल से पीछे नहीं हैं, उनमें भी सभी प्रकार की सुविधाएं दी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में निरंतर सुधार कर रही है।

शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार ने प्रदेश में सर्वप्रथम नई शिक्षा नीति लागू की। राज्य में पीएमश्री योजना के अंतर्गत 141 पीएमश्री विद्यालय बनाये गये हैं। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आवासीय विद्यालय का निर्माण भी किया जा रहा है। प्रदेश के 13 जनपदों के 500 विद्यालयों में वर्चुअल क्लास रूम की व्यवस्था भी की गई है।मुख्यमंत्री ने कहा कि क्वालिटी एजुकेशन सुनिश्चित करने के लिए सभी विद्यालयों में एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों को अनिवार्य किया गया है। विद्यार्थियों को विज्ञान को बेहतर तरीके से समझाने के लिए राज्य में लैब ऑन व्हील्स अर्थात मोबाइल साइंस लैब की शुरूआत भी की है। राज्य में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तक और कक्षा एक से आठ तक के बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के साथ ही जूता और बैग भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस दौरान प्रांत प्रचारक आर.एस.एस उत्तराखण्ड डॉ. शैलेन्द्र, विधायक आदेश चौहान, प्रधानाचार्य लोकेंद्र अन्थवाल, प्रबंधक अजय शर्मा, महापौर किरण जैसल, विधायक प्रदीप बत्रा, दर्जा राज्यमंत्री देशराज कर्णवाल ,भाजपा जिलाध्यक्ष आशुतोष शर्मा, जिला उपाध्यक्ष लव शर्मा, जिलाधिकारी कर्मेन्द्र सिंह, एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोबाल एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

सीएम धामी ने ओहो हिल यात्रा के चौथे संस्करण रजत से स्वर्ण की ओर के समापन कार्यक्रम में प्रदेशभर से आए छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया

देहरादून/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित ओहो हिल यात्रा के चौथे संस्करण "रजत से स्वर्ण की ओर के समापन कार्यक्रम में प्रदेशभर से आए छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें उत्तराखण्ड राज्य स्थापना का रजत जयंती वर्ष मनाने के साथ ही अपने प्रदेश को प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने प्रदेश की बेरोजगारी दर में रिकॉर्ड 4.4 प्रतिशत की कमी लाकर राष्ट्रीय औसत को भी पीछे छोड़ने का काम किया है। सरकार की ह्यएक जनपद, दो उत्पादह्ल योजना से स्थानीय आजीविका के अवसर बढ़ रहे हैं, इसके साथ ही 'हाउस ऑफ हिमालयाज' ब्रांड के माध्यम से हमारे पारंपरिक उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक पहचान मिल रही हैं। उन्होंने कहा कि स्टेट मिलेट मिशन, फार्म मशीनरी बैंक, ह्यएप्पल मिशन, ह्यनई पर्यटन नीति, नई फिल्म नीति, होम स्टे, ह्यवेड इन उत्तराखण्डह्ल और ह्यसौर स्वरोजगार योजना जैसी पहलों से राज्य की स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि प्रदेश का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने क्षेत्र में पूरी निष्ठा, समर्पण और ईमानदारी के साथ योगदान दे, तो उत्तराखण्ड को एक विकसित, आत्मनिर्भर और समृद्ध राज्य बनने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में हमारी सरकार द्वारा प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, खेल, पेयजल और हवाई कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने का तेजी से कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी के प्रोत्साहन से राज्य में आदि कैलाश एवं शीत कालीन यात्रा को नई गति मिली है। राज्य सरकार पर वर्ष 2026 में नंदा देवी यात्रा तथा 2027 में कुम्भ के भव्य एवं ऐतिहासिक आयोजन की बड़ी जिम्मेदारी है। सीएम ने कहा कि आज रोजगार के परिदृश्य तेजी से बदल रहे हैं। तकनीकी नवाचार और वैश्विक परिवर्तन के कारण रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं और पुराने खत्म हो रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में स्टार्टअप और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किए गए हैं, साथ ही स्टार्टअप की सहायता हेतु ड्ड200 करोड़ के वेंचर फंड की भी व्यवस्था की गई है। हमारा उद्देश्य है कि हमारे युवा केवल नौकरी ढूंढने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले भी बनें। इस अवसर पर महानिदेशक सूचना श्री बंशीधर तिवारी, डायरेक्टर एस.ओ.ए श्री रवि भटनागर, प्रदेशभर से आए छात्र-छात्राएं, अभिभावक एवं शिक्षक आदि उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री काशी से जनहित की 3884.18 करोड़ रुपये की 44 विकास योजनाओं की पूर्वांचल को देंगे सौगात

योगी सरकार के आठ साल होने के बाद पहली बार वाराणसी आ रहे पीएम

लखनऊ/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने संसदीय क्षेत्र के 50वें दौरे पर शुक्रवार को काशी पहुंचेंगे। वहीं यूपी की योगी सरकार के आठ साल पूरे होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह पहला वाराणसी दौरा होगा। इस मौके पर प्रधानमंत्री काशी से जनहित कौ 3884.18 करोड़ रुपये की 44 विकास योजनाओं की सौगात पूर्वांचल को देंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में लगभग ढाई घंटे को प्रवास करेंगे। पीएम राजातालाब के मेहदीगंज में जनसभा को भी संबोधित करेंगे। भाजपा का दावा है कि जनसभा में 50 हजार से ज्यादा जनमानस उमड़ेगा। पीएम की अगवानी राज्यपाल आनंदीबेन पटेल व सीएम योगी आदित्यनाथ करेंगे। दोनों डिप्टी सीएम भी सभास्थल पर मौजूद रहेंगे। बनास डेयरी के चेयरमैन और गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष शंकर भाई चौधरी भी मंच परे रहेंगे।

19 परियोजना का उद्घाटन व 25 का करेंगे शिलान्यास

प्रधानमंत्री 1629.13 करोड़ की 19 योजनाऐं का उद्घाटन और 2255.05 करोड़ की 25 योजनाएं का शिलान्यास करेंगे। इसके साथ ही पीएम मोदी बनास (अमूल) से जुड़े प्रदेश के लाखों दुग्ध उत्पादक किसानों को 106 करोड़ रुपये का बोनस भी ट्रांसफर कर सकते हैं। प्रधानमंत्री के हाथों लोकार्पित और शिलान्यास होने वाली 3884.18 करोड़ की 44 परियोजनाऐं

लोकार्पित होने वाली 1629.13 रुपये की 19 योजनाऐं (लागत करोड़ में)

1-जल जीवन मिशन के अंतर्गत 130 ग्रामीण पेयजल योजनाओं का निर्माण--345.12

2- उमरहा से अटेसुवा तक सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य-43.85

3 -बाबतपुर से जमालापुर तक सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य-32.73

4 -वाराणसी- भदोही मार्ग से सेवापुरी ब्लाक तक सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य-21.98

5-रामनगर- पंचवटी तिराहा से एनएच-19 तक किला कटरिया सड़क मार्ग का सुदृढ़ीकरण कार्य-5.79

6-वाराणसी पुलिस लाइन परिसर में ट्रांजिट हॉस्टल का निर्माण कार्य -24.96

7 -पीएसी रामनगर परिसर में सुरक्षाकर्मी बैरक का निर्माण कार्य--10.02

8 - वाराणसी नगर के 6 वार्डों का सौंदर्यीकरण एवें पर्यटन विकास कार्य--27.33

9-वाराणसी में सामने घाट का पुनर्विकास कार्य-10.55

10 - रामनगर, वाराणसी में शास्त्री घाट का पुनर्विकास कार्य -10.55

11 - रोहनिया में मांडवी तालाब का पर्यटन विकास कार्य-4.18

12 -राजकीय पॉलिटेक्निक, ग्राम कुरु, पिंडरा का निर्माण कार्य-10.60

13 सरदार वल्लभ भाई पटेल राजकीय महाविद्यालय, ग्राम बरकी सेवापुरी का निर्माण कार्य-7.60

14 -वाराणसी के ग्रामीण क्षेत्र में 100 आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण कार्य--12.00

15 - वाराणसी के ग्रामीण क्षेत्र में 356 पुस्तकालयों का स्थापना कार्य-7.12

16-वाराणसी शहर में महत्वपूर्ण स्थलों पर स्कल्पचर स्थापित किये जाने का कार्य-9.34

17 - 400 केवी सब स्टेशन और संबंधित ट्रांसमिशने लाइनें, साहूपुरी, चंदौली-493.97

18 - 400 केवी सब स्टेशन और संबंधित ट्रांसमिशने लाइन, मछलीशहर जौनपुर-428.74

19 - 400 केवी सब स्टेशन और संबंधित ट्रांसमिशने लाइनें, भदौरा गाजीपुर-122.70

शिलान्यासे होने वाली 2255 .05 करोड़ की 25 योजनाएं (लागत करोड़ में)

1-लाल बहादुर शास्त्री एयरपोर्ट वाराणसी के समीप एनएच-31 पर अंडर पास टनल का निर्माण- 652.64

2- वाराणसी में विद्युत तंत्र प्रणाली के उन्नयन व आधुनिकीकरण के कार्य-584.41

3-वाराणसी नगर में एम.एस.एम.ई. यूनिटी मॉल का निर्माण कार्य- 154.71

4- वाराणसी रिंग रोड तथा सारनाथ के मध्य सड़क सेतु का निर्माण कार्य-161.36

5 -भिखारीपुर तिराहे पर फ्लाईओवर का निर्माण-118.84

6- मंडुवाडीह चौराहे पर फ्लाईओवर का निर्माण-56.73

7 - काजीसराय से गैरहा मुर्दहो सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य-23.66

8-कुरु कोइलर से धौकलगंज सरावां सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य-18.08

9-हाथीवार चुरापुर बाबतपुर सड़क मार्ग का चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण कार्य-6.62

10-बाबतपुर से चौबेपुर तक सड़क मार्ग का नवीनीकरण कार्य-9.85

11-पुलिस लाइन वाराणसी में आवासीय छात्रावास का निर्माण कार्य-76.42

12-वाराणसी में थाना शिवपुर के प्रशासनिक भवन का निर्माण कार्य-10.60

13-वाराणसी में थाना मिजार्मुराद के प्रशासनिक भवन का निर्माण कार्य--7.99

14 -वाराणसी में थाना लालपुर पांडेयपुर के प्रशासनिक भवन का निर्माण कार्य -7.31

15-वाराणसी में थाना बड़ागांव के प्रशासनिक भवन का निर्माण कार्य-7.14

16-वाराणसी शहर में विभिन्न पार्कों का सौंदर्यीकरण कार्य-25.00

17-वाराणसी मोहनसराय स्थित ट्रांसपोर्ट नगर योजना के विकास कार्य -12.00

18 -शिवपुर वाराणसी में मिनी स्टेडियम का निर्माण कार्य-6.15

19 - भेलूपुर वाराणसी में ग्रिड से जुड़ा ग्राउंड / रूफटॉपे डब्ल्यूटीपी पर 1 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र -9.26

20-वाराणसी शहर में स्मार्ट क्लास के साथ 77 प्राथमिक विद्यालय भवनों का नवीनीकरण-12.60

21- उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी में सिंथेटिक हॉकी टर्फ मैदान, फ्लड लाइट, दर्शक दीर्घा और खिलाड़ियों की सुविधाओं का निर्माण-8.37

22-वाराणसी की 40 ग्राम पंचायतों में सामुदायिक भवनों का निर्माण कार्य-30.50

23-कस्तूरबा गांधी विद्यालय, चोलापुर, वाराणसी के भवन का निर्माण कार्य-4.17

24 -220 केवी सब स्टेशन का निर्माण कार्य सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी-191.14

25-132 केवी सबस्टेशन का निर्माण कार्य, गाजीपुर-59.50

योगी सरकार के 'दस के दम' अभियान से अपराधियों की टूटी कमर, ऑपरेशन त्रिनेत्र बना काल

सीएम योगी की जीरो टॉलरेंस नीति सैकड़ों अपराधी पहुंचे यमलोक

लखनऊ/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जीरो टॉलरेंस नीति ने पिछले आठ वर्षों में अपराधियों की कमर तोड़ कर रख दी है। इस दौरान एक लाख से अधिक अपराधियों को जेल और मुठभेड़ में 227 को यमलोक भेजा गया। इतना ही नहीं योगी सरकार के निर्देश पर मिशन शक्ति फेज-5 के तहत प्रदेशभर में दस का दमनामक विशेष ऑपरेशन चलाए गए। इसमें ऑपरेशन गरुड़, ईगल, मजनू, रक्षा, बचपन, खोज, शील्ड, डेस्ट्राय, नशा मुक्ति और त्रिनेत्र आदि शामिल हैं। इन ऑपरेशन के जरिये यूपी पुलिस ने महिलाओं, बेटियों, बच्चों, युवाओं और समाज के कमजोर वर्गों की सुरक्षा सुनिश्चित की है। वहीं ऑपरेशन त्रिनेत्र ने जघन्य अपराधों का खुलासा कर अपराधियों को सलाखों के पीछे धकेला है। डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि सीएम योगी की मंशानुसार मिशन शक्ति फेज-5 के तहत यूपी पुलिस ने प्रदेश भर में दस ऑपरेशन चलाए। यूपी पुलिस का यह अभियान अपराधियों के लिए काल बन गया है। योगी सरकार का ह्यदस का दमह्ल ऑपरेशन ने प्रदेश को अपराध से मुक्त करने की संकल्पना है, जिसे जमीन पर सफलतापूर्वक उतारा गया है। इन ऑपरेशन के जरिए 1 लाख से अधिक लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की गई। डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि ऑपरेशन त्रिनेत्र के तहत प्रदेश भर में संवेदनशील स्थानों को चिन्हित किया गया। इसके बाद प्रदेशभर में 11,07,782 से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। ये सीसीटीवी थानों से जोड़े गए ताकि कैमरा कंट्रोल रूम्स से घटनाओं पर तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। इसी का नतीजा है कि डकैती, लूट समेत कुल 5,718 जघन्य अपराधों का सफल खुलासा किया गया। महिलाओं और बच्चियों से जुड़े साइबर अपराधों पर नियंत्रण के लिए ऑपरेशन गरुड़ चलाया गया। अभियान के तहत 2,597 प्राथमिकी पत्रों की जांच की गई, जिनमें से 2,407 का निस्तारण किया गया। वहीं पूर्व में पंजीकृत 1,179 अभियोग में से 449 का निस्तारण किया गया और 498 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। साथ ही 405 के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किए गए। इसी तरह स्कूल-कॉलेजों के आसपास बच्चों और महिलाओं से छेड़छाड़ करने वालों सौहदों के खिलाफ ऑपरेशन मजनू चलाया गया। इस अभियान में 7,554 स्थानों को चिह्नित किया गया और 58,624 व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की गई। वहीं ऑपरेशन ईगल के तहत महिलाओं से संबंधित अपराधों में जेल से बाहर आए 7,963 अपराधियों में से गिरफ्तार-हाजिर अदालत 5,166 को चिन्हित किया गया। इसके दौरान 2,683 अभियुक्त गिरफ्तार-हाजिर अदालत हुए। वहीं 4,294 के खिलाफ चार्जशीट दायर की गई। ऑपरेशन रक्षा के तहत स्पा सेंटर, मसाज पार्लर में छिपे मानव तस्करी के मामलों में 56 महिलाओं/बालिकाओं को रेस्क्यू कर 49 का पुनर्वास कराया गया। प्रदेश में बल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति समेत बच्चे के अधिकारों के लिए ऑपरेशन बचपन और खोज चलाया गया। इसमें ऑपरेशन बचपन के तहत बाल श्रम व बाल भिक्षावृत्ति के मामलों में 2,860 बच्चों को बचाया गया। वहीं 1,207 केसों में कार्यवाही हुई। इसी तरह ऑपरेशन खोज के तहत रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, आश्रयगृहों से 3,327 गुमशुदा बच्चों को पुनर्वासित किया गया। ऑपरेशन शील्ड के तहत 29,773 एसिड की दुकानों को चेक किया। वहीं 725 के खिलाफ कार्रवाई की गयी। ऑपरेशन डेस्ट्राय के तहत अश्लील साहित्य व सीडी के 748 मामले अभियोग दर्ज हुए। ऑपरेशन नशा मुक्ति के तहत नशे के विरुद्ध 4,750 हॉट स्पॉट चिन्हित कर 2,752 अभियोग पंजीकृत किए गए और 33,391 व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की गई।

संक्षिप्त डायरी

धार्मिक पर्टयन स्थलों का रू0 267.92 लाख की लागत से कराया जाएगा पर्यटन विकास-डीएम

उन्नाव/ भव्य खबर । जिलाधिकारी गौरांग राठी द्वारा जानकारी दी गयी है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रद्वालुओं एवं पर्यटको को आकर्षित किये जाने के उद्देश्य से उन्हे पर्यटक सुविधायें उपलब्ध कराये जाने के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में पर्यटन विभाग द्वारा में रू0 267.92 लाख की लागत की 03 परियोजनाएं स्वीकृत की गयी है। जिला पर्यटन अधिकारी संतोष कुमार सिंह ने बताया है कि वर्ष 2024-25 में राज्य योजना के अन्तर्गत सदर विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत रू0 92.12 लाख की लागत से ग्राम फत्तेहपुर स्थित मानदेवी मन्दिर, पुरवा विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत रू0 102.90 लाख की लागत से बिछिया में स्थित जालिपा देवी मन्दिर एवं सफीपुर विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत रू0 74.90 लाख की लागत से सफीपुर में स्थित तैलहैही माता मन्दिर का पर्यटन विकास कराए जाने की योजनाएं स्वीकृत की गयीं हैं। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने पर जनपद में पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं में विकास होगा तथा पर्यटकों के आवागमन में बढ़ोतरी होगी।

अवैध शराब के खिलाफ आबकारी विभाग ने की छापेमारी की कार्रवाई,मचा हड़कंप

सुलतानपुर/भव्य खबर । जनपद में आबकारी विभाग ने अवैध शराब के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। आबकारी आयुक्त के आदेश पर चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई है। जिला आबकारी अधिकारी राजेश कुमार तिवारी के नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक डॉ. संजय कुमार उपाध्याय और संजय कुमार मिश्रा की संयुक्त टीम ने छापेमारी किया। टीम ने गोसाईगंज थाना क्षेत्र के छपरा, हवा पठानीपुर, फतेहपुर संगत और कोतवाली नगर के अंगना कॉल तथा बासोढी में दबिश दी। साथ ही कार्रवाई के दौरान टीम ने मौके से 1200 किलोग्राम लहान बरामद कर नष्ट किया। साथ ही 113 लीटर अवैध कच्ची शराब भी जब्त की गई। इस संबंध में कुल 8 मामला दर्ज किया गया हैं। छापेमारी टीम ने माधवपुर छतौना गोसाईगंज स्थित कंपोजिट मदिरा और देसी मदिरा की दुकानों का भी निरीक्षण किया। टेस्ट परचेज के दौरान सभी दुकानों पर निर्धारित मूल्य पर शराब की बिक्री पाई गई। किसी भी दुकान पर कोई अनियमितता नहीं मिली। इस अभियान में प्रधान आबकारी सिपाही दिनेश सिंह, आबकारी सिपाही अभिनव कुमार सिंह, अनुराग वर्मा, साकेत राय, राजीव शुक्ला और वाहन चालक कलीम सहित अन्य कई विभागीय कर्मचारी शामिल रहे।

युवक ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया आखिरी वीडियो, हुआ वायरल

जयसिंहपुर/सुलतानपुर / भव्य खबर । मौत से पहले इंस्टाग्राम पर एक युवक ने वीडियो शेयर किया। जिसमें लिखा है, 'जा रहा हूँ आपसे दूर।' हैलो खुश रहो। इसके बाद उसकी मौत हो गई। हालांकि हम इस वीडियो की पुष्टि नहीं करते। ये वीडियो जयसिंहपुर कोतवाली क्षेत्र के सुमेरपुर गांव का है। जयसिंहपुर कोतवाली क्षेत्र के जगतपुर गांव निवासी आकाश वर्मा पुत्र स्व.रामकृपाल वर्मा अपने पिता की मृत्यु के बाद बचपन से माता, भाई के साथ सेमरी चौकी क्षेत्र के महमूदपुर गांव स्थित अपने मामा के घर परिवार के साथ रहता था। बीते गुरुवार की शाम वह गांव के युवकों के साथ वॉलीबॉल खेलने गया था। वॉलीबॉल खेलने के बाद संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी अचानक तबियत बिगड़ गई। पारिवारिकजन उसे इलाज के लिए सुल्तानपुर के निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। स्थानीय लोगों के अनुसार उसने जहर खाकर जान दी थी। वीडियो में दिख भी रहा है कि वो गिलास में कुछ लेकर पी रहा है उसके बाद उसको उल्टिया भी हुई। बताया जा रहा प्रेम प्रसंग में धोखा मिलने पर युवक ने ये कदम उठाया। बीते शुक्रवार को सुबह-शव का अंतिम संस्कार कर दिया गया। उक्त घटना के बाद से पारिवारिकजनों माता, भाई व अन्य परिजनों में कोहरा मचा हुआ है। भाई परदेश सूरत में रहकर ट्रक चलाता है। सूचना पर वह भी अपने घर पहुंच गया है।

ट्राफिक सीओ शाहरुख खान ने अभियान चलाकर ई रिक्शा चालकों के साथ ही आम लोगों से भी ट्राफिक रुल्स फालो करने की अपील की

हमीरपुर/ भव्य खबर । उत्तर प्रदेश हमीरपुर के तेज तर्रार सीओ ट्राफिक शाहरुख खान ने बढते जाम के साथ ही दुर्घटनाओं को रोकने के लिये ई रिक्शा चालकों के साथ ही आम लोगों कोट्राफिक रुल्स फालो करने के लिये जागरूक किया। सीओ ट्राफिक ने अभियान चलाकर ई- रिक्शा चालकों के साथ ही आम लोगों को ट्राफिक रुल्स की बारीकी से जानकारी दी। अभियान के तहत सार्वजनिक स्थलों, प्रमुख चौराहों सहित मुख्य मार्गों में ई- रिक्शा चालकों को, ड्राइविंग लाइसेंस, बीमा, वदीधारी संकेतों का पालन के साथ ही ओवरस्पीड से बचने के जरुरी रुल्स के बारे में जानकारी दी गई। अभियान के दौरान चालकों को यातायात नियमों को तोड़ने से होने वाले अंजामों के बारे में भी जागरूक किया गया। सीओ ट्राफिक ने खुद सीधे बात चीत के जरिये आम लोगों को ट्राफिक सैक्यूरिटि की अहमियत को सरल जबान में समझाया गया। अभियान नागरिकों में ट्राफिक इंतिजाम को बढ़ावा देने, सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के साथ ही सुरक्षित यातायात इंतजामों को तय करने की तरफ एक बेहतर पहल की है। इस मौके पर खासतौर से एआरटीओ अमिताभ राय, ट्राफिक इंचार्ज हरवेन्द्र सिंह सहित बुद्ध जीवी और कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रदर्शनी से बच्चों में विकसित होगा वैज्ञानिक दृष्टिकोण- एसडीएम

कसया, कुशीनगर/ भव्य खबर । रामकोला ब्लॉक के रामबर बुजुर्ग में स्थित मैना देवी इंटरमीडिएट कॉलेज में विज्ञान प्रदर्शनी में बाल वैज्ञानिकों ने अपने द्वारा बनाए गए रोल मॉडल प्रोजेक्ट्स को दिखाया। मुख्य अतिथि पारितोष मिश्र उपजिलाधिकारी कसया व विशिष्ट अतिथि बीएसए रामजियावन मौर्य ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कक्षा दशवी की छात्रा आस्था राव का नेचुरल फॉर्मिंग का रोल मॉडल, खुशी तिवारी का रोल मॉडल ऑटोमेटेड रोड ब्रेकर, अंकिता कुशवाहा का एनिमल सेफ्टी फ्राम फायर, अनामिका यादव का डीप एरिगेशन, अनुराग गोंड का ब्लाइंड स्टीक, ताहिर अली का हैंड जेनरेटर, शिवम् मिश्र का गैस लीकेज सेंसर प्रोजेक्ट्स आकर्षण का केंद्र रहे। इसी क्रम में मुंबई स्थित फिल्म इंडस्ट्री के कलाकार दिलीप कुमार यादव उर्फ दल्लू ने भी बच्चों के प्रतिभा को देख उनका मनोबल बढ़ाया। बीएसए कुशीनगर ने कहा कि ये होनहार ही कल के भारत का भविष्य हैं। एसडीएम ने विगत कई वर्षों से सफलतापूर्वक हो रहे विज्ञान प्रदर्शनी कार्यक्रम व विद्यालय द्वारा प्रत्येक वर्ष नवोदय, विद्या ज्ञान, अटल आवासीय विद्यालय परीक्षा में चयन होने पर विज्ञान शिक्षक रमेश यादव व दीपक गुप्ता की पीठ थपथपाई। विद्यालय के प्रधानाचार्य अमरेंद्र कुमार चौबे सहित आदि मौजूद रहे।

हमीरपुर की कुरारा पुलिस ने फरार चल रहे अभियुक्त को किया गिरफ्तार

हमीरपुर/ भव्य खबर । उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की कुरार पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़ के लिये चलाये जा रहे अभियान के तहत मु0अ0सं0 71/2025 धारा 115(1)/70(1) बीएनएस के मामले में 31 वर्षीय फरार अभियुक्त श्रीराम साहू पुत्र जंगली प्रसाद साहू को मूसानगर रोड़ राजाराम डिग्री कॉलेज मिश्रीपुर के पास से गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया। अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में खासतौर से क्राईम इंस्पैक्टर रामकुमार यादव, एस आई रिन्कू तिवारी, कांस्टेबल विजय कुमार सहित कांस्टेबल शिवम् यादव शामिल रहे

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने राहुल-तेजस्वी पर साधा निशाना

कहा- मुसलमान विरोधी हैं तेजस्वी यादव, राहुल गांधी को खुद नहीं पता क्या बोलते हैं

बेगूसराय। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने तेजस्वी यादव और राहुल गांधी पर निशाना साधा है। गिरिराज सिंह ने आज बेगूसराय में पत्रकारों से बात करते हुए कहा है कि तेजस्वी मुसलमानों के खिलाफ हैं। दरअसल, तेजस्वी ने कहा था कि 2025 बिहार में RJD की सरकार बनने पर संशोधित किए गए वक्फ बिल को निरस्त करेंगे। इसपर पलटवार करते हुए गिरिराज सिंह ने कहा कि RJD की सरकार बनना ही नहीं है। संसद से जो कानून पास होता है, वह पूरे देश में लागू होता है।गिरिराज सिंह ने कहा कि संसद पूरे देश का है। तेजस्वी यादव गरीब

पसमांदा मुसलमान के खिलाफ हैं। तेजस्वी यादव नहीं चाहते हैं कि गरीब मुसलमान और महिलाओं को हक मिले। तेजस्वी यादव इसीलिए अनाप-शनाप बोल रहे हैं। तेजस्वी यादव गरीब पसमांदा मुसलमान के विरोधी हैं। गिरिराज सिंह ने कहा कि वक्फ बोर्ड में कानून इसलिए बना है कि गरीब मुसलमानों को हक मिले, पसमांदा मुसलमान समाज को हक मिले, महिलाओं को हक मिले, तेजस्वी यादव के ठेकेदारों को हक नहीं मिले। इसलिए वह कुछ से कुछ बोलकर लोगों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं।राहुल गांधी द्वारा जनगणना का सवाल उठाने पर गिरिराज सिंह ने कहा कि राहुल गांधी को खुद ही पता नहीं है कि क्या बोलते हैं। वह राजा के घर में पैदा लिए हैं, राजा की तरह जो मन में होता है बोलते हैं। जनगणना बिहार में हो गया है, कई राज्यों में हो गया है। अब वह क्या से क्या बोल रहे हैं। राहुल गांधी के बेगूसराय में पदयात्रा करने पर गिरिराज सिंह ने कहा कि राहुल गांधी बेगूसराय में 45 मिनट की यात्रा किए। बेगूसराय एक ऐसा स्थान है जो राजनीतिक केंद्र है, औद्योगिक केंद्र है और यहां 45 मिनट में परिवर्तन के लिए आए थे राहुल गांधी। परिवर्तन किस बात का, उनके पिताजी ने इसी बेगूसराय की धरती पर 1985 में कहा था कि पेट्रोकेमिकल्स होगा। दो बार लोगों से वोट लिया, पेट्रोकेमिकल्स कहां गया, जहन्नुम में चला गया ? नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने और पेट्रोकेमिकल बन रहा है, 25 हजार करोड़ का इन्वेस्टमेंट हो रहा है। यह नौटंकी के सिवा कुछ नहीं है, राहुल गांधी आएंगे तो क्या हो जाएगा। कन्हैया को चेहरा बनाने के सवाल पर कहा कि जिसको बनाना है बनाएं, हमको उससे क्या।

संक्षिप्त डायरी

'पशुपति पारस ने चिराग को बताया फिल्मी हीरो

जमुई। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस ने बड़ी घोषणा की है। पार्टी कार्यकर्ता सम्मेलन में उन्होंने कहा कि आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी 247 सीटों पर उम्मीदवार उतारेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला करते हुए पारस ने उनकी सरकार को भ्रष्टाचार की जननी बताया। उन्होंने कहा कि बिहार अब बीमारू राज्य बन गया है। आवास योजना से लेकर वृद्धा पेंशन तक, कोई भी काम बिना घूस के नहीं होता। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने अपने भतीजे चिराग पासवान पर भी तीखा प्रहार किया। उन्होंने चिराग को फिल्मी हीरो बताते हुए कहा कि पर्दे पर कुछ और, पर्दे के बाहर कुछ और यही उनकी भूमिका है। पारस ने आरोप लगाया कि रामविलास पासवान के निधन के बाद चिराग ने अपनी बड़ी मां को अंतिम दर्शन तक नहीं करने दिया।बिल के कारण मुसलमानों में बढ़ी नाराजगी वक्फ बिल को लेकर पारस ने केंद्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने कहा कि इस बिल के कारण मुसलमानों में बीजेपी, जेडीयू, लोजपा और हम पार्टी के प्रति नाराजगी बढ़ी है। नीतीश कुमार की मानसिक स्थिति पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें यह भी नहीं पता होता कि वह ईद में शामिल हो रहे हैं या किसी और कार्यक्रम में।

सास ने बहू की प्रेमी से कराई शादी,

बेगूसराय। में एक सास ने रात में अपनी बहू को उसके प्रेमी के साथ कमरे में आपत्तिजनक हालत में पकड़ लिया। महिला ने शोर मचाकर गांव के लोगों को बुलाया। रातभर बहू और उसके प्रेमी को बंधक बनाकर रखा गया।फिर बुधवार दोपहर बहू की उसकी प्रेमी से शादी करा दी गई। गांव के लोगों की मौजूदगी में सास ने अपनी बहू की मांग में प्रेमी से सिंदूर डलवाया और दोनों को विदा कर दिया। अपनी 2 साल की पोती को भी बहू के साथ भेज दिया।घटना लाखो थाना क्षेत्र की है। चंदन साह और विभा की 3 साल पहले शादी हुई थी। चंदन परदेस में रहकर मजदूरी करता है। घर पर चंदन की पत्नी विभा देवी, सास रेखा और 2 साल की बेटी के साथ रहती थी।लाखो थाना क्षेत्र के राजा डुमरी का रहनेवाला अमिताभ पासवान सूजा गांव में मजदूरी करने जाता था। जहां उसकी विभा से पहचान हुई।बहू की शादी का वीडियो भी सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर वायरल है।6 महीना पहले दोनों की मुलाकात राशन की दुकान पर हुई थी। दोनों अक्सर राशन लेने के बहाने सुबह या शाम को दुकान पर एक-दूसरे को दिख जाते थे।इसी बीच अमिताभ ने एक दिन विभा से उसका नंबर मांगा और फिर दोनों के बीच बातें होने लगी। करीब छह महीने की बातचीत के बाद दोनों ने एक दूसरे से प्यार का इजहार किया।दरअसल, चंदन के परदेश में होने, ससुर के गुजर जाने और सास के बुजुर्ग होने के चलते विभा अक्सर रात को अपने प्रेमी अमिताभ को अपने घर बुलाने लगी। सुबह सभी लोगों के जागने से पहले अमिताभ, विभा के घर से निकल जाता था। हालांकि, इसी बीच कभी किसी ने अमिताभ को विभा के घर से निकलते देखा। फिर इस बात की चर्चा पूरे गांव में होने लगी।पति ने कहा- मैं उसके साथ नहीं रहूंगा शादी से ठीक पहले पूरे मामले की जानकारी विभा के पति चंदन साह को भी दी गई। जब उसने पूरी घटना सुनी तो विभा को रखने से इनकार कर दिया। विभा की सास ने भी कहा कि बेटा मजदूरी करने क्या गया, बहू बदल गई।

मां ने लगाई फटकार, घर से भागकर स्टेशन पहुंची बेटी

शेखपुरा। में महिला पुलिस की सतर्कता और तत्परता से एक 19 वर्षीय युवती की जान बच गई। करंडे थाना क्षेत्र की रहने वाली यह युवती मंगलवार की देर रात मां की डांट से नाराज होकर घर से भाग गई। वह घर से सीधे रेलवे स्टेशन पर जाकर बैठ गई।स्टेशन पर परेशान युवती को देख अनहोनी की आशंका होने पर किसी ने पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस टीम फौरन स्टेशन पहुंची और युवती को सुरक्षित बरामद कर लिया।रेलवे स्टेशन पर बैठी थी अकेली बुधवार दोपहर को सूचना मिली कि एक लड़की किऊल-गया रेलखंड के शेखपुरा रेलवे स्टेशन पर कई घंटों से अकेली बैठी है। पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर लड़की को देखा। वह परेशान नजर आ रही थी। उसके पास कोई बैग भी नहीं था। या तो वह किसी ट्रेन में चढ़ने की फिराक में थी या फि सुसाइड करने की कोशिश कर सकती थी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पुलिस उसके पास पहुंची तो वह भागने लगी।पुलिस ने समझाकर परिवार को सौंपापुलिस टीम ने फौरन युवती को पकड़ लिया और महिला थाने लाकर समझाया-बुझाया। इसके बाद पहचान पता चलने पर परिजनों को सूचना देकर थाने बुलाया और उनके सुपुर्द कर दिया। पुलिस की संवेदनशीलता और फुर्ती से एक बड़ा हादसा टल गया।पुलिस अधिकारियों ने कहा कि मामला संवेदनशील था। समय रहते युवती को सुरक्षित बरामद कर परिवार को सौंप दिया गया। किसी भी तरह की अनहोनी नहीं होने दी गई।

महिला की संदिग्ध मौत; पति-देवर पर हत्या का आरोप

सुपौल। के पिपरा थाना क्षेत्र के अमहा वार्ड-7 में एक महिला की संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई। परिजनों का कहना है कि पति ने गले मे रस्सी लगा कर पत्नी की हत्या कर दी और शव को फंदे से लटका कर आत्महत्या की बात कह रहे थे।बताया जा रहा है कि एक दिन पहले पति-पत्नी में किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी। घर में महिला के शव मिलने की सूचना पर वहां भीड़ जुट गई। इसी बीच स्थानीय लोगों की जानकारी पर मृतका पिंकी देवी के मायके वाले घटनास्थल पर पहुंचे।मामले की जांच में जुटी पुलिस मायके वालों का कहना है कि जब वे लोग पहुंचे तो बेटी की बॉडी जमीन पर पड़ी थी। उसको देखने के बाद उसके होश उड़ गए। फिर सूचना मिलते ही पिपरा पुलिस दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर जायजा लिया और शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सुपौल भेज दिया। पुलिस घटना के विभिन्न बिंदुओं पर पुलिस जांच में जुट गई है। परिजनों ने बताया पूर्व में भी कई बार पिंकी देवी के पति शंकर सदा ने जान से मारने का प्रयास किया था और वह आज कामयाब भी हो गया। घटना के बाद घर से दोनों भाई फरार भी हो गया है। इधर, पिपरा थानाध्यक्ष राजेश कुमार झा ने बताया कि मृतका के गले पर रस्सी से बंधे होने का जख्म मिला है।

8 जिलों में तेज आंधी-बारिश का अलर्ट,ठनका से 22 मौतें

पटना। बिहार में मौसम बदला हुआ है। गुरुवार की सुबह सुपौल, मधुबनी, कटिहार, गोपालगंज, बक्सर में तेज बारिश हुई है। कटिहार में एक घंटे की तेज बारिश से कई जगह सड़कों पर पानी भर गया। वहीं मुजफ्फरपुर में तेज हवा से एक पेड़ एक शख्स के ऊपर गिर गया। दबने से बुजुर्ग की मौके पर ही मौत हो गई। मौसम विभाग ने बिहार के 8 जिलों में आज ऑरेंज, जबकि 24 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। इन सभी 32 जिलों में अगले 48 घंटे के बीच तेज आंधी, बारिश और आकाशीय बिजली गिरने की आशंका है। वहीं, अन्य 6 जिलों में मौसम शुष्क बना रहेगानाउकास्ट मौसम विज्ञान में इस्तेमाल होने वाला एक शब्द है,

जो बहुत ही कम समय के लिए मौसम की भविष्यवाणी को बताता है। यह आमतौर पर अगले कुछ घंटों (0-6 घंटे) के मौसम की स्थिति का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। इसके अनुसार, सहरसा, मधेपुरा, सुपौल और सीमावर्ती इलाकों में 40-60 किमी/घंटा की रफ्तार से हवा चलेगी। साथ ही इन जिलों में आकाशीय बिजली गिरने की भी संभावना है। मौसम में यह बदलाव फसलों पर भी असर डाल सकता है, इसलिए किसानों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने किसानों को सलाह दी है कि अगर फसल तैयार है तो जल्द से जल्द कटनी और दौनी कर लें। कटाई के बाद फसल को सुरक्षित स्थान पर ढंककर रखें। ताकि बारिश और आंधी से नुकसान न हो। बिहार में 9 अप्रैल को आकाशीय बिजली (वज्रपात) गिरने से 17 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा बेगूसराय और दरभंगा में 5-5 मौतें हुई हैं। जबकि मधुबनी में 4, सहरसा में 2 और औरंगाबाद में 1 की जान चली गई। ये बिहार में इस साल के शुरूआती आंकड़े हैं। पिछले 5 साल की बात करें तो बिहार में 1000 से ज्यादा लोगों की जान आकाशीय बिजली की चपेट में आने हुई है। 2024 में आकाशीय बिजली गिरने से प्रदेश में 253 मौतें हुई थीं। जबकि आपदा प्रबंधन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 2021 में 280, 2022 में 400, 2023 में 242 लोगों की जान जा चुकी है।

बीच सड़क से छात्र किडनैप, पीटते-पीटते ले गए

लखीसराय। टाउन थाना क्षेत्र में एक छात्र के अपहरण कर लिया। वारदात बुधवार रात चितरंजन रोड स्थित पीबी स्कूल के पास हुई। छात्र तब मोबाइल पर बात कर रहा था। बदमाश उसे पीटते-पीटते कार में ले गए। सूचना के बाद 8 घण्टे में पुलिस ने उसे ढूंढ निकाला। आरोपियों को गिरफ्तार किया है। अपहृत छात्र की पहचान संतर मुहल्ला निवासी विनोद मंडल के बेटे अंशु कुमार (18) के रूप में हुई है। बदमाशों ने उससे मारपीट भी की। रेस्क्यू कर उसे अस्पताल लाया गया। अपहरण का वीडियो भी सामने आया है। इससे पुलिस को सुराग लगा और छात्र को बचा लिया। पुलिस को प्रेम प्रसंग का शक प्रारंभिक जांच में मामला प्रेम

प्रसंग से जुड़ा बताया जा रहा है। पुलिस कारणों की तलाश कर रही है।तीन से चार बदमाश थेसीसीटीवी से पता चला कि अंशु बाइक रोककर मोबाइल पर बात कर रहा था। तभी थाना चौक की तरफ से कार आई। उससे उतरे तीन-चार युवकों ने मारपीट शुरू कर दी। फिर उसे गाड़ी में डालकर वापस थाना चौक की ओर ले गए। मोबाइल लोकेशन से भी मिली मदद पुलिस को अपहृत छात्र की मोबाइल लोकेशन टाउन थाना क्षेत्र से बाहर मिली।

मौत के बाद भी महिला को किया रेफर

जमुई। के राधिका इमरजेंसी क्लिनिक में 8 दिनों से इलाजरत महिला की मौत हो गई। क्लिनिक संचालक ने परिजनों को उसे जिंदा बताकर सदर अस्पताल भेज दिया। सदर अस्पताल में डॉक्टरों ने बताया कि महिला की मौत कई घंटे पहले ही हो चुकी है। इसके बाद आक्रोशित ग्रामिणों ने क्लिनिक के बाहर प्रदर्शन किया। उन्होंने शव को सड़क पर रखकर जाम लगा दिया और इलाज में लापरवाही का आरोप लगाया। मृतका की पहचान हांसडीह गांव निवासी गुड़िया देवी के रूप में हुई है। विरोध प्रदर्शन के दौरान क्लिनिक संचालक ने 10-20 बदमाशों को बुलाकर परिजनों पर हमला करवा दिया। हमलावरों ने ईंट-पत्थर और लोहे के रॉड से हमला किया। इस हमले में मृतका के भाई तपोश रावत, काजल कुमारी, उत्तम कुमार समेत पांच लोग घायल हो गए। मृतका के भाई तपोश रावत ने बताया कि गुड़िया को 1 अप्रैल को बुखार आया था। सदर अस्पताल के

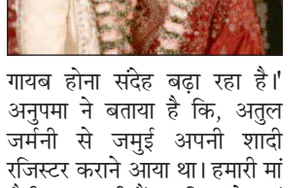

दलालों ने उसे राधिका इमरजेंसी में भर्ती करा दिया। क्लिनिक में रोजाना 25,000 रुपए का खर्च बताया जा रहा था। बुधवार की रात को क्लिनिक स्टाफ ने बताया कि मरीज की हालत गंभीर है और उन्हें सदर अस्पताल ले जाना चाहिए। लेकिन वहां पहुंचने पर पता चला कि गुड़िया की मौत कुछ घंटे पहले ही हो चुकी है। सूचना मिलने पर अंचलाधिकारी ललिता कुमारी, टाउन थानाध्यक्ष अमरेंद्र कुमार सहित भारी संख्या में सुरक्षा बल मौके पर पहुंचे। प्रशासन ने क्लिनिक के सारे सामानों को जब्त कर लिया। साथ ही, 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।पुलिस हिरासत में 6 लोग अंचलाधिकारी ललिता कुमारी ने बताया कि जिले में बिना रजिस्ट्रेशन के चलाए जा रहे हैं, सभी क्लिनिकों को शील किया जाएगा।

प्रेमी से मिलने बिहार से 1230KMदूरMPगई प्रेमिका

मुजफ्फरपुर। लड़का बोला-नाबालिग हो, लौट जाओ; 10वीं में कम नंबर आए तो पिता ने कहा था-शादी करा दूंगा मुजफ्फरपुर4 अप्रैल को शाम करीब 4 बजे कोल्डड्रिंक्स और चिप्स लेने के लिए घर निकली लड़की बिना बताए मुजफ्फरपुर से 1230 डट दूर मध्यप्रदेश के खंडवा चली गई। लड़की वहां रहने वाले अपने प्रेमी शादी करना चाहती थी। दोनों में दोस्ती सोशल मीडिया के जरिए हुई थी। जब वो अपने प्रेमी से मिली तो उसने कहा- 'तुम अभी नाबालिग हो, लौट जाओ।' जब लड़की ने इससे इनकार किया तो लड़के ने नाबालिग को पुलिस के हवाले कर दिया। इसके बाद खंडवा पुलिस ने लड़की के परिजन को मामले की जानकारी दी। बुधवार को परिजन खंडवा पहुंचे तो पुलिस ने लड़की को उन्हें सौंप दिया। लड़की के पिता की ओर से 5 अप्रैल को मुजफ्फरपुर के सकरा थाने में FIR दर्ज करने के लिए आवेदन

दिया गया था। इसमें पिता ने कहा- 16 साल की मेरी बेटी 4 अप्रैल को शाम करीब 4 बजे कोल्डड्रिंक्स और चिप्स लेने के लिए निकली थी, लेकिन घर नहीं लौटी। मुझे आशंका है कि किसी ने हत्या की नीयत से उसका अपहरण कर लिया है। पढ़ाई में मन लगता नहीं है, तुम्हारी शादी करा दूंगा लड़की 10वीं की छात्रा है। हाल ही में 10वीं का रिजल्ट आया था, जिसमें छात्रा को मात्र 40 फीसदी नंबर मिले थे। खराब रिजल्ट आने की वजह से लड़की के पिता ने उसे डांटा था और कहा था कि, 'पढ़ाई में तुम्हारा मन नहीं लगता, तुम्हारी शादी करा दूंगा।' उधर, लड़की प्रेमी से लगातार बात कर रही थी। उससे शादी करना चाहती थी। पिता की ओर से शादी की बात किए जाने की वजह से वो घर से निकली और प्रेमी से शादी के लिए इंदौर जाने वाली ट्रेन में बैठ गई। नाबालिग का प्रेमी इंदौर का रहने वाला है। लड़की मुजफ्फरपुर से सीधा इंदौर न जाकर खंडवा में ही उतर गई थी। फिर बॉयफ्रेंड को वहां बुलाया था। खंडवा स्टेशन पर लड़की के आने की जानकारी के बाद बॉयफ्रेंड वहां पहुंचा। इसके बाद किसी तरह बहाना बनाकर उसे सीधा खंडवा पुलिस के पास ले गया और पूरे मामले की जानकारी दे दी। फिर लड़का अपने घर इंदौर लौट गया।जानकारी के मुताबिक, खंडवा कोतवाली पुलिस ने तत्काल लड़की को वन स्टाप सेंटर भेज दिया, जहां से उसे बाल कल्याण समिति के समक्ष पेश किया गया। फिर समिति ने लड़की के परिजन को फोन कर खंडवा बुला लिया। बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष प्रवीण शर्मा के मुताबिक, लड़की ने बताया कि 'उसने जब अपने प्रेमी को फोन किया, तो साथ में उसका बड़ा भाई भी आया था। उसी ने समझाया और कहा- तुम अभी नाबालिग हो, एक साल बाद तुम दोनों की शादी करा देंगे, फिलहाल तुम अपने घर लौट जाओ, लेकिन मैं जिद पर अड़ गई, तो मुझे पुलिस को सौंप दिया।' लड़की को जब बाल कल्याण समिति को सौंपा गया, तो उसके पास 1100 रुपए भी थे। जब समिति के सदस्यों ने पूछा कि क्या ये पैसे तुम घर से चुरा कर लाई हो, तो उसने बताया कि 'ये पैसे उसके प्रेमी के बड़े भाई ने ही दिए हैं।

अतुल ने कहा था-परेशान हूं, लैपटॉप-डायरी से खुलेगा राज

जमुई। में जर्मनी से आए इंजीनियर अतुल कुमार (28) की 7 अप्रैल को झरने से लाश मिली थी। वो अपनी पत्नी प्रिया के साथ पंचभूर झरना धूमने गया था। पत्नी का कहना था कि, चट्टान से गिरने की वजह से अतुल की मौत हो गई थी, लेकिन अतुल की मां ने यह आरोप लगाया था कि बहू ने साजिश के तहत बेटे की हत्या करवाई है। बहन ने बताया कि 'अतुल मोबाइल समय-समय पर ऑन-ऑफ हो रहा है। लेकिन पुलिस उसके मोबाइल के लोकेशन तक नहीं पहुंच पा रही है। वह कभी अपना लैपटॉप नहीं छोड़ता था। इस बार लैपटॉप का

गायब होना संदेह बढ़ा रहा है।' अनुपमा ने बताया है कि, अतुल जर्मनी से जमुई अपनी शादी रजिस्टर कराने आया था। हमारी मां चैती छठ करती हैं, इसलिए वो यहां रुक गया। अनुपमा ने बताया कि अतुल और प्रिया शादी के बाद हनीमून के लिए जर्मनी गए थे। 30 दिन का वीजा था, लेकिन प्रिया 15 दिन में ही वापस लौट आई थी। प्रिया बंगलुरू में ही जॉब करती थी। छुट्टियों में हो अपने मायके बिहार शरीफ जाया करती थी। अनुपमा का कहना है कि पुलिस को हर एंगल से जांच करनी चाहिए, ताकि सही बात सामने आ सके। प्रिया शादी के बाद भी बेंगलुरु में जॉब करती थी। वो छुट्टियों में बिहार शरीफ में अपने माता-पिता के साथ ही रहा करती थी।मां ने बहू पर लगाया था आरोप अतुल की मां सरिता देवी का कहना है कि, बहू ने साजिश कर मेरे बेटे की हत्या की है। बहू मेरे बेटे को टॉर्चर करती थी। मां की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। जांच की जा रही है। IIT से एयरोनॉटिक्स में इंजीनियरिंग करके अतुल 2022 से जर्मनी में काम कर रहा था। सरिता देवी का आरोप है कि, 'प्रिया और उसके परिवार के सदस्य पहले भी उनके बेटे के साथ गाली-गलौज करते थे और जान से मारने की धमकी देते थे।'दोनों की 3 साल पहले हुई थी मुलाकात प्रिया का कहना है कि, बेंगलुरु में अतुल और मैं एक ही कंपनी में काम करते थे। बातचीत बढ़ी तो हमदोनों करीब आ गए और शादी का फैसला कर लिया। इसके बाद 2022 में वह जर्मनी चला गया।

धारदार हथियार से गला रेतकर बुजुर्ग महिला की हत्या

जमुई। में बुजुर्ग महिला की गला रेतकर हत्या कर दी गई। घटना झाझा थाना क्षेत्र के ढिबा गांव में की है। गुरुवार सुबह ग्रामीणों ने उनका शव घर के बाहर संदिग्ध हालत में पड़ा देखा। मृतका की पहचान स्वर्गीय जुगल यादव की पत्नी सुगनी देवी(74) के रूप में हुई है। उनकी बहन ने बताया कि सुगनी अपनी नातिन की शादी के लिए डेढ़ लाख रुपए एक मोटरी में बांधकर रखी थी। साथ में कुछ जेवर भी थे। परिजनों का कहना है कि अपराधियों ने पैसों के लिए देर रात हत्या की और रुपए-जेवर लेकर फरार हो गए। सूचना मिलते ही झाझा थाना पुलिस और एसडीपीओ राजेश कुमार मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जमुई भेज दिया है। मौत के कारणों का पता लगाया जा रहा है। एफएसएल टीम भी जांच के लिए पहुंचने वाली है। पुलिस ने कुछ संदिग्ध लोगों से पूछताछ शुरू कर दी है। अधिकारियों का दावा है कि जल्द ही इस घटना का खुलासा कर दिया जाएगा। प्रशासन ने ग्रामीणों से मांगा सहयोग प्रशासन ने अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए ग्रामीणों से सहयोग मांगा है।

पूर्णिया में कैस्ट्रॉल की फर्जी मोबिल फैक्ट्री का खुलासा

पूर्णिया। में किराए के मकान में नकली मोबिल बनाया जा रहा था। धंधेबाज नकली मोबिल बनाता और फिर उसे बहुचर्चित कैस्ट्रॉल कंपनी के नाम से बेचता था। नकली मोबिल के दो से तीन बार के इस्तेमाल से गाड़ियों में इंजन के सीज करने की समस्या आ जाती। नकली मोबिल बेचकर धंधेबाज ने 2 सालों में अथाह संपत्ति बनाई। शातिर धंधेबाज के इस काले धंधे की भनक लगते ही पुलिस ने फैक्ट्री में छापेमारी की। किराए के मकान से चल रही कैस्ट्रॉल की फर्जी मोबिल फैक्ट्री से लाखों के नकली मोबिल के साथ धंधेबाज को धर दबोचा। मामला पूर्णिया के मधुबनी थाना क्षेत्र के मोलवी टोला इलाके की है। धंधेबाज की पहचान शहर के मधुबनी थाना क्षेत्र के मोलबी टोला इमामबाड़ा निवासी मो.बाबर के रूप में हुई है। कैस्ट्रॉल कंपनी के अधिकारी ने पुलिस को दी जानकारी घटना की जानकारी देते हुए छापेमारी टीम में शामिल कैस्ट्रॉल कंपनी के अधिकारी शुभाशीष दत्ता ने बताया की पूर्णिया में कैस्ट्रॉल कम्पनी के मोबिल की बिक्री में तेजी से गिरावट आ रही थी। इसके बाद उनकी टीम ने

इसकी पड़ताल करते हुए सेल्स में आई कमी की वजह तलाशने में जुट गए। पड़ताल में टीम को इसकी भनक लगी कि पूर्णिया में कैस्ट्रॉल कंपनी का नकली मोबिल बेचा जा रहा है। वो जांच करते हुए मधुबनी मोलवी टोला पहुंचे, जिसके बाद उन्हें मालूम हुआ कि कैस्ट्रॉल कंपनी का मोबिल इसी इलाके में मौजूद किराए के मकान से बनाया जा रहा है। इसके दौरान बाद टीम ने इसकी सूचना मधुबनी थाना प्रभारी सूरज प्रसाद को दी। कैस्ट्रॉल कंपनी के नाम पर नकली मोबिल फैक्ट्री संचालित किए जाने की सूचना मिलने पर मधुबनी थानाध्यक्ष सूरज प्रसाद ने पुलिस टीम के साथ मोलबी टोला स्थित इमामबाड़ा के समीप स्थित मो.बाबर के घर में छापेमारी की। छापेमारी में पुलिस और कैस्ट्रॉल कंपनी के टीम के अधिकारियों ने नकली मोबिल, डब्बा, कैस्ट्रॉल मोबिल का स्ट्रीकर, कई ड्रामों में जला हुआ लाखों का नकली मोबिल बरामद किया। मधुबनी थानाध्यक्ष सुरज कुमार ने बताया कि छापेमारी में कैस्ट्रॉल कंपनी के नाम पर नकली मोबिल का धंधा करने वाले शातिर धंधेबाज मो.बाबर को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जब्त नकली मोबिल, खाली डब्बा, कैस्ट्रॉल मोबिल का स्ट्रीकर, ड्रम की गिनती की जा रही है। घर से नकली कैस्ट्रॉल मोबिल के साथ ही दूसरी कंपनी गल्फ, ळश्र, हीरो का भी डब्बा बरामद किया गया है। पूछताछ में धंधेबाज मो.बाबर ने बताया है कि वो पिछले 2 साल से नकली मोबिल बनाकर बेचने का काम करता था। इससे उसने खूब संपत्ति बनाई।

हरियाणा के सरकारी स्कूलों में लागू हुई 'टीचर्स डायरी'

चंडीगढ़। हरियाणा के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए प्रदेश सरकार ने 'टीचर्स डायरी' को अनिवार्य कर दिया है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को करवाई जाने वाली पढ़ाई, विद्यार्थियों को पढ़ाने व सीखने के तौर-तरीकों के बारे में पहले ही बताना होगा। सभी शिक्षकों की कर्मचारी आईडी के साथ ही ऑनलाइन डेली डायरी का ऑप्शन दे दिया है।बुधवार से ही डेली डायरी व्यवस्था को लागू कर दिया गया है। यह डायरी नियमित रूप से अपडेट होगी और इसे एमआईएस (मैनेजमेंट इंफॉर्मेशन सिस्टम) पोर्टल पर अपलोड करना होगा। शिक्षकों द्वारा स्कूलों में करवाई जा रही पढ़ाई के बारे में स्कूल इंचार्ज से लेकर शिक्षा निदेशालय ही नहीं बल्कि विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव तक के पास रिपोर्ट रहेगी। मुख्यालय के अधिकारी कभी भी ऑनलाइन ही शिक्षकों की डायरी को चेक कर सकेंगे। वहीं जिला स्तर पर यह डायरी रूटीन में चेक होगी। इतना ही नहीं, संबंधित स्कूल इंचार्ज (हेड टीचर, हेडमास्टर व प्रिंसिपल) द्वारा शिक्षकों की डायरी को सत्यापित किया जाएगा। उनके पास डायरी को रिजेक्ट करने के अधिकार भी होंगे, लेकिन इसके लिए कारण भी स्पष्ट बताने होंगे।अभी तक स्कूलों के शिक्षक अपनी सुविधा के हिसाब से डायरी लिखा करते थे। शिक्षा निदेशालय ने अपने निर्देशों में स्पष्ट किया है कि डेली डायरी हर शिक्षक के लिए अनिवार्य होगी। अगर किसी शिक्षक की चुनाव, परीक्षा या अन्य किसी काम में ड्यूटी लगी है तो उसे भी पोर्टल पर अपडेट करना होगा। अगर शिक्षक किसी भी तरह के अवकाश पर है तो उसे भी अपडेट करना जरूरी होगा। किसी अन्य सरकारी कार्य में ड्यूटी की वजह से डायरी अपडेट करने में होने वाली देरी पर संबंधित शिक्षक को ड्यूटी पर लौटने के पंद्रह दिनों के भीतर डायरी अपडेट करने की अनुमति दी जाएगी।

अवैध हथियार सहित पुलिस ने तीन आरोपियों को दबोचा

फरीदाबाद। फरीदाबाद पुलिस ने अवैध हथियार रखने वालों पर प्रहार करते हुए अलग-अलग मामलों में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने गुरुवार को जानकारी देते हुए बताया कि अपराध शाखा एनआईटी की टीम ने अमन खान निवासी एसजीएम नगर को एक देसी कट्टा के साथ डिलाईट गार्डन के पास, सुरजकुण्ड रोड फरीदाबाद से, अपराध शाखा सेक्टर-30 की टीम ने नीरज नाथ निवासी मोलरबंद, दिल्ली को मुरारी स्कूल, सराय ख्वाजा के पास से एक देसी कट्टा सहित व पुलिस चौकी सेक्टर-8 की टीम ने विशाल वासी गांव कपना जिला बुलंदशहर को प्राइमरी स्कुल प्रेमनगर के पास से एक देसी कट्टा व 5 कारतूस सहित गिरफ्तार किया गया है। इनके विरुद्ध संबंधित थानों में शास्त्र अधिनियम की धाराओं के अंतर्गत अभियोग पंजीकृत किए गए हैं। आरोपियों को अदालत में पेश कर जेल भेज दिया।

टेलीग्राम टास्क पूरा करने के नाम पर ठगी, दो गिरफ्तार

फरीदाबाद। टेलीग्राम टास्क पूरा करने के नाम पर ठगी करने वाले दो आरोपियों को साइबर थाना सैंट्रल की टीम ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों को गुरुवार को अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि साइबर थाना सैंट्रल में सेक्टर-31, फरीदाबाद क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति ने दी अपनी शिकायत में आरोप लगाया कि उसके पास व्हाट्सएप पर कॉल आई, जिस पर ठगों ने उसे टेलिग्राम पर टास्क पूरा कर घर बैठे पैसे कमाने के बारे में बतलाया।इस पर शिकायतकर्ता को टेलिग्राम के जरिये टास्क दिये गये, जिनको पूरा करने के एवज में 4500/-रू उसके खाते में भेजे गये। इस तरह वह लालच में आ गया और टास्क के लिए उसने विभिन्न ट्रांजेक्शन के माध्यम से ठगों के खातों में पांच लाख 23 हजार रुपए में भेजे, जिसके बदले ठगों द्वारा कोई पैसा नहीं दिया गया। शिकायत पर साइबर थाना सैंट्रल में मामला दर्ज किया गया। साइबर थाना सैंट्रल की टीम ने कार्रवाई करते हुए नोएडा से अक्षय (25) वासी गांव सेठन जिला अजमेर व मुकुल (22) वासी फुल्लैरा, जयपुर को फुल्लेरा से गिरफ्तार किया है। पूछताछ में सामने आया कि दोनों आरोपी पहले साथ में पढ़ाई करते थे। मुकुल खाताधारक है, जिसने अपना खाता अक्षय को दिया था, वहीं अक्षय ने खाते को आगे ठगों को दिया था। आरोपी अक्षय नोएडा में प्राइवेट कम्पनी में जॉब करता था।

आईपीओ में निवेश के नाम पर धोखाधड़ी, तीन गिरफ्तार

फरीदाबाद। आईपीओ में निवेश के नाम पर धोखाधड़ी के मामले में साइबर थाना सेंट्रल पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने गुरुवार को बताया कि हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी सेक्टर 29 फरीदाबाद में रहने वाले एक व्यक्ति ने शिकायत दी, जिसमें आरोप लगाया कि वह निवेश के लिए व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ा हुआ था। जब शिकायतकर्ता ने निवेश की इच्छा ग्रुप में जताई तो, ठगों ने शिकायतकर्ता के पास निवेश के लिए टीपीजी कैपिटल नाम की एप का लिंक भेजा और उस पर खाता खुलवाकर निवेश करने को कहा। उसने ठगों के द्वारा बताये गये खाते में दो लाख दस हजार रुपए निवेश के लिए भेजे, लेकिन दस दिन बीत जाने के बाद भी एप पर पैसे की कोई जानकारी नहीं दिखी और ना ही ठगों ने मैसेज और कॉल का जवाब दिया तो उसे पता चला के उसके साथ फ्रॉड हुआ है। शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी अशोक निवासी गांव सराना, भीलवाडा को सराना, भीलवाडा तथा गणेश व नारायण वासी पुणे को पुणे महाराष्ट्र से गिरफ्तार किया है। पुछताछ में सामने आया कि आरोपी अशोक अपने इलाके के बेरोजगार लड़कों को पैसे और नौकरी का लालच देकर गणेश और नारायण के पास पुणे महाराष्ट्र भेज देता था। जहां गणेश और नारायण उनको नौकरी का लालच देकर करंट खाता खुलवाकर खाते को ठगों के पास भेज देते थे और कुछ दिन काम पर रखने के बाद लड़कों को काम से निकाल देते थे। आरोपियों को गुरुवार को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें तीन दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। मामले में खाताधारक राकेश को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

हरियाणाा से नशों के खात्मे के लिए एकजुटता से प्रयास जरूरी - हरिंद्र सिंह

पलवल। हरियाणा सरकार की ओर से मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में शुरू की गई साईक्लोथॉन-2.0 ने उपमंडल हथीन के गांव भीमसीका से जिला पलवल की सीमा में प्रवेश किया। इसके उपरांत साइक्लोथॉन उटावड़, कोट व बहीन होते हुए जिला के उपमंडल होडल पहुंची। साइक्लोथॉन के काफिले में शामिल सदस्यों के स्वागत एवं आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से होडल स्थित राजकीय महाविद्यालय में नशा मुक्त हरियाणा थीम पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें हरियाणा कला परिषद सहित अन्य कलाकारों ने एक से बढक़र एक प्रस्तुति देते हुए लोगों को नशा करने से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक करते लोगों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया। होडल विधायक हरिंद्र सिंह ने सांस्कृतिक संध्या का बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया।

देश की सौ स्मार्ट सिटी होंगी हाईटैक, नागरिक सेवाओं के नियंत्रण केंद्र होंगे स्थापित : मनोहर लाल

स्मार्ट सिटी मिशन की बैठक में परियोजनाओं की समीक्षा की गई

चंडीगढ़। एजेंसी

देशभर की 100 स्मार्ट सिटी हाईटैक सुविधाओं से सुसज्जित होंगी। यातायात प्रबंधन से लेकर सार्वजनिक सुरक्षा और नागरिक सेवाओं के लिए नियंत्रण कक्ष स्थापित किए जाएंगे।स्मार्ट सिटी मिशन के तहत स्मार्ट सिटी में नागरिक सेवाओं के लिए एकीकृत कमान और सार्वजनिक सेवाओं को लेकर नियंत्रण केंद्र (इंटीग्रेटिड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर-आईसीसीसी) संचालित होंगे।

केंद्रीय ऊर्जा, आवासन एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई स्मार्ट सिटी मिशन की बैठक में परियोजनाओं की समीक्षा की गई। मनोहर लाल ने राज्यवार स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए शहरों में नागरिक सेवाओं का सरलीकरण और सार्वजनिक सुविधाओं का ढांचा मजबूत करने के निर्देश दिए।

मनोहर लाल ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 विजन को साकार करने के लिए स्मार्ट सिटी मिशन के तहत शहरों में चल रही परियोजनाओं को समयबद्ध चरण में पूरा किया जाए। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 1.51 लाख करोड़ की 7545 परियोजनाओं का 88 प्रतिशत शहरों में केंद्रीय कोष का पूर्ण उपयोग किया जा चुका है।

शहरों में निगरानी और सुरक्षा में सुधार करते हुए 83000 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए गए हैं। 1,300 से अधिक सार्वजनिक स्थान परियोजनाएं विकसित की गईं, जिनमें 318 किलोमीटर के तटवर्ती क्षेत्र शामिल हैं।

55 शहरों में 484 ऐतिहासिक धरोहरों का जीर्णोद्धार

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत शहरों को विकसित करने के साथ ऐतिहासिक धरोहरों को भी संजोया जा रहा है। 55 शहरों में 484 ऐतिहासिक स्थलों का जीर्णोद्धार किया गया है।

इसके साथ ही 48,000 करोड़ के बजट का 99.5 प्रतिशत प्रभावी रूप से खर्च किया गया है। 17,000 किलोमीटर की उन्नत जल आपूर्ति प्रणालियों को विकसित किया गया है। 165 अस्पतालों की सहायता देने के साथ 3100 से अधिक ई-स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए गए हैं। यही नहीं, शिक्षा और कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल लाइब्रेरी और वाई-फाई हॉटस्पॉट शुरू किए गए हैं।

1964 करोड़ की आय व 1924 करोड़ खर्च करने का प्रस्ताव सदन में सर्वसम्मति से पास

फरीदाबाद। फरीदाबाद नगर निगम की महापौर श्रीमती प्रवीण जोशी की अध्यक्षता में गुरुवार को नगर निगम सदन की एक विशेष बैठक आयोजित की गई जिसमें नगर निगम फरीदाबाद के वित्त वर्ष 2025 - 26 के बजट पर प्रस्ताव पेश किया गया। बैठक में केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर, खाद्य राज्य मंत्री राजेश नागर, पूर्व कैबिनेट मंत्री और विधायक मूलचंद शर्मा विधायक धनेश अदलखा, विधायक सतीश फागना, विधायक रघुवीर तेवतिया, निगमायुक्त ए मोना श्रीनिवास सहित निगम सदस्य तथा अधिकारी गण उपस्थित रहे। नगर निगम के वित्तीय नियंत्रक दिनेश कुमार ने बजट निगम सदन में रखा। जिसमें 1964 करोड़ रुपए की अनुमानित आय और 1924 करोड रुपए का संभावित खर्च का प्रावधान किया गया है। बजट में प्रॉपर्टी टैक्स से लगभग 163 करोड़ रुपए स्टांप ड्यूटी से 220 करोड़ और विकास शुल्क से लगभग 100 करोड रुपए आमदनी का प्रस्ताव रखा गया है। इसके अलावा भूमि दुकानों का बिक्रिय (कोर्ट प्रोसीडिंग्स) से लगभग 300 करोड़ का लक्ष्य रखा गया है। कचरा प्रबंधन से भी 72 करोड रुपए का अनुमानित प्रस्ताव रखा गया ,जबकि विज्ञापन से लगभग 27 करोड रुपए , विकास शुल्क से 100 करोड रुपए का और म्युनिसिपल टैक्स बिजली विभाग से 55 करोड रुपए का अनुमानित प्रस्ताव सदन में रखा गया। बजट में 1964 करोड़ के अनुमानित आय और 1924 करोड रुपए के अनुमानित खर्च के इस प्रस्ताव को सदन की बैठक में एक ध्वनि एकमत से पारित किया गया।।

निगम सदन के सदस्यों ने इस बैठक में अपने सुझाव और समस्याएं भी रखी। बैठक में विज्ञापन पेयजल मीटर और प्रॉपर्टी टैक्स से आय बढ़ाने जैसे सुझाव भी रखे गए। जबकि सदन के कुछ सदस्यों ने अपने वार्डों की समस्याएं भी बताई। बैठक की अध्यक्षता कर रही महापौर श्रीमती प्रवीण जोशी ने सभी सदस्यगण को भरोसा दिलाया कि वह फरीदाबाद शहर के विकास को मिलकर करेंगे उनका एक ही सपना है कि स्वच्छ फरीदाबाद और हरित फरीदाबाद और यह तभी पूरा होगा जब सभी सदन के साथी और अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। निगम सदन की बैठक के बाद महापौर श्रीमती प्रवीण जोशी ने पत्रकारों को बताया कि सभी पार्षदों को वार्ड के विकास के लिए एक-एक करोड़ रुपए की राशि दी जाएगी, उन्होंने कहा कि वह स्वयं भी प्रत्येक वार्ड का दौरा करेगी और जहां भी विकास के कार्य के लिए राशि की जरूरत होगी वह उसे वार्ड के लिए अलग से बजट का प्रावधान कराएगी। बैठक में केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर ने कहा कि सभी पार्षद निगम प्रशासन को अपने वार्ड में कराए जाने वाले कार्यों से अवगत कारण ताकि नगर निगम के अधिकारी वार्ड के अंदर किए जाने वाले कार्यों को करने के लिए उनकी फाइल तैयार करें उन्होंने कहा कि फरीदाबाद का विकास तेज गति के साथ सभी निगम अधिकारी और पार्षदगण के सहयोग से पूरा होगा।

उन्होंने जनता से सीधे चुनकर आई महापौर श्रीमती प्रवीण जोशी और सभी सदस्य गणों को बजट की इस विशेष बैठक की बधाई दी। बैठक में नगर निगम कमिश्नर ए मोना श्रीनिवास ने महापौर श्रीमती प्रवीण जोशी सहित उपस्थित सदस्य गण को आश्वासन दिया कि नगर निगम सभी के सहयोग से फरीदाबाद के विकास के लिए बेहतर कार्य करेगा,सभी अधिकारी सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ फरीदाबाद के विकास में अपनी भूमिका निभाएंगे।

चंडीगढ़ ग्रेनेड अटैक में NI का बड़ा एक्शन, छठा आरोपी गिरफ्तार; PAK में बैठे रिंदा और हैप्पी पासिया से जुड़े तार

चंडीगढ़(एजेंसी)।

एनआईए ने चंडीगढ़ ग्रेनेड अटैक मामले में वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है. आरोप है कि उसने विदेश में खालिस्तानी आतंकवादियों द्वारा रची गई साजिश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी.

यह जानकारी एनआईए ने बुधवार को अपने एक बयान में दी. इसमें बताया गया है कि आतंकवादी हरविंदर सिंह संधू उर्फ रिंदा और हरप्रीत सिंह उर्फ हैप्पी पासिया पाकिस्तान से अपनी गतिविधियां चला रहे हैं. इनके खिलाफ एनआईए ने पिछले महीने ही इस संबंध में एनआईए ने आरोपपत्र दाखिल किया था.

हालांकि मामले की शुरुआत में अज्ञात व्यक्ति के द्वारा इसको अंजाम देने की बात कही गई थी. लेकिन जांज के दौरान गुरदासपुर पंजाब के अभिजोत सिंह की भूमिका सामने आने के बाद उसे हिरासत में लिया गया.साथ ही कहा गया है कि अभिजोत पहले से ही एक अन्य थाने पर ग्रेनेड फेंकने के सिलसिले में जेल में है. बताया जाता है कि पाकिस्तान में रह रहे

हैप्पी के संपर्क में था, और वह भी इस साजिश का हिस्सा था.एनआईए के बयान के अनुसार जांच में पता चला कि हैप्पी के निर्देश पर ही अभिजोत ने जुलाई और अगस्त 2024 में कई बार टारगेट स्थान की रेकी की थी. इतना ही नहीं उसने घटना को अंजाम देने के लिए फर्जी नंबर प्लेट वाली बाइक की भी व्यवस्था की थी. यह बाइक चोरी की पाई गई.बताया जाता है कि हैप्पी ने अगस्त 2024 के दौरान अभिजोत के अलावा पहले से गिरफ्तार एक अन्य आरोप रोहन मसीह को पिस्तौल मुहैया कराई थी. सितंबर 2024 में किए गए हमले का मकसद पंजाब पुलिस के एक रिटायर अफसर को निशाना बनाना था, जिनके बारे में हमलावरों को जानकारी थी कि वह चंडीगढ़ के सेक्टर 10 स्थित घर में रहते थे.जांच में इस बात का भी खुलासा हुआ है कि अभिजोत और रोहन अगस्त महीने में दो बार टारगेट किए घर पर गए थे, हालांकि इस दौरान वह घटना को अंजाम देने में कामयाब नहीं हो सके थे. वहीं अभिजोत को गिरफ्तार करने के बाद एनआईए ने अन्य संदिग्धों की शिनाख्त में बुधवार को हरियाणा के करना में एक जगह पर तलाशी भी ली.

पलवल में अवैध नशा मुक्त केंद्र का भंडाफोड़, दो कमरों में मिले 42 मरीज

पलवल। पलवल में अवैध तौर पर चल रहे एक नशा मुक्ति केंद्र का भंडाफोड़ हुआ है। सीएम विंडो पर शिकायत के बाद सीएमओ डॉ. जय भगवान जाटान की टीम ने बामनीखेड़ा के पास स्थित इस केंद्र पर छापेमारी की। जांच में यहां 2 छोटे कमरों में 42 मरीजों को रखा गया था। पुलिस ने केस दर्ज करके छानबीन शुरू कर दी है।मिली जानकारी के अनुसार बामनीखेड़ा के पास चल रहे नशा मुक्ति केंद्र की जांच में पता चला कि केंद्र बिना किसी पंजीकरण और आवश्यक सुविधाओं के चल रहा था। यहां 42 मरीजों को दो छोटे कमरों में बंद रखा गया था। केंद्र में न तो कोई बोर्ड लगा था और न ही मरीजों का कोई रिकॉर्ड रखा गया था। इलाज के लिए न तो फिजिशियन थे और न ही मनोचिकित्सक। छापेमारी के समय रिसेप्शन रूम में दो व्यक्ति सो रहे थे। उन्होंने अपना नाम जसवीर (पंचवटी कॉलोनी पलवल) और गुरुविंदर (बुखारपुर, फरीदाबाद) बताया। बिल्डिंग मालिक राजेश कुमार, जो ग्रीवेंस कमेटी के सदस्य हैं, ने कहा कि उन्हें नशा मुक्ति केंद्र के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।केंद्र में मरीजों से ली जाने वाली फीस, इलाज शुल्क और दवाइयों के रेट का कोई बोर्ड भी नहीं लगा था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रदेश को देंगे बड़ी सौगात- गौरव गौतम

पलवल। प्रदेश सरकार में खेल, युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता और कानून एवं विधायी राज्य मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 अप्रैल को प्रदेश के हिसार और यमुनानगर जिला में दो बड़ी जनसभाएं करेंगे। ऐसा पहली बार हो रहा है जब प्रधानमंत्री प्रदेश के दो जिलों में जनसभाएं करेंगे। इन जनसभाओं में जिला से अधिक से अधिक संख्या में कार्यकर्ताओं सहित लोगों को शामिल होने का आह्वान किया। खेल मंत्री गौरव गौतम ने वीरवार को जिला भाजपा कार्यालय में बैठक की।बैठक में मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 अप्रैल को हिसार में एयरपोर्ट का उदघाटन और यमुनानगर में थर्मल प्लांट का शिलान्यास कर प्रदेश के लोगों को बड़ी सौगात देंगे। इन कार्यक्रम में जिला से अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए मंत्री गौरव गौतम ने कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर खेल मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि भाजपा सरकार देश और प्रदेश में लगातार बिना भेदभाव के लगातार विकास कार्य कर रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्ष 2047 तक देश को विकसित बनाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रहे हैं। वहीं प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी लोगों को अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान करने को लेकर संकल्पित है। प्रदेश सरकार द्वारा समान रूप से सभी जिलों में विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। प्रदेश के सभी गांवों में अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान करने को लेकर कार्य किए जा रहे हैं। गांवों में किसानों के लिए खेत-खलियान को जाने वाले रास्तों को पक्का करने का कार्य किया जा रहा है। मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि पलवल के विकास को लेकर निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। शहर के सौंदर्यीकरण के साथ-साथ सफाई व्यवस्था में भी दुरुस्त किया जा रहा है। उन्होंने पलवल के युवाओं से नशे से दूर रहने का आह्वान करते हुए कहा कि जिले के युवा शिक्षा के साथ-साथ खेल में भी अपना उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए आगे आएं। जिला में लगभग सभी खेलों के कोच की नियुक्ति कर दी गई है। इसके अलावा खेलों में जिले के युवाओं को आगे ले जाने के लिए सभी सुविधाएं मुहैया करवाने को लेकर वह संकल्पित है। युवा खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर जिले का नाम देश-विदेश में रोशन करें। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष विपिन बैंसला, पूर्व जिला अध्यक्ष चरण सिंह तेवतिया, हरेंद्र पाल राणा, मेहरचंद गहलोत, सतीश बैंसला, प्रवीन ग्रोवर, योगेश, दिनेश कौशिक, आशा भारद्वाज व किरण शर्मा आदि मौजूद रहे।

'नशा मुक्त' भारत ही बनेगा 'विकसित और आत्मनिर्भर' भारत : खेल मंत्री

साइक्लोथॉन में जिलावासियों ने एक स्वर में 'हम सबका सांझा सपना-नशा मुक्त हो हरियाणा अपना' का संकल्प लिया

पलवल, (एजेंसी)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के हरियाणा को ड्रग फ्री बनाने के संकल्प के साथ साइक्लोथॉन यात्रा गुरुवार को 'हम सबका सांझा सपना-नशा मुक्त हो हरियाणा अपना' संदेश के साथ फरीदाबाद के लिए रवाना हो गई। हरियाणा सरकार में खेल मंत्री गौरव गौतम ने मुख्यमंत्री की 'ड्रग फ्री हरियाणा' मुहिम को शुभकामनाओं के साथ फरीदाबाद के लिए रवाना किया।

साइक्लोथॉन में जिलावासियों ने एक स्वर में 'हम सबका सांझा सपना-नशा मुक्त हो हरियाणा अपना' का संकल्प लिया। इससे पहले गुरुवार को सुबह साइक्लोथॉन उपमंडल होडल से पलवल पहुंची। उपमंडल होडल से होडल के विधायक हरिंद्र सिंह, एसडीएम होडल बेलीना सहित अन्य गणमान्य लोगों ने साइक्लोथॉन को ढोल-नगाड़ा बजाकर व

हरी झंडी दिखाकर पलवल के लिए रवाना किया। उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ गांव भीमसीका से लगातार साइक्लोथॉन का नेतृत्व करते हुए साइकिल चलाकर साइक्लोथॉन के साथ पलवल स्थित महाराणा प्रताप चौक तक पहुंचे।

पलवल शहर में पहुंचने पर हरियाणा सरकार में खेल मंत्री गौरव गौतम, विधायक होडल हरिंद्र सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष विपिन बैंसला, एडीसी अखिल पिलानी, एसडीएम पलवल ज्योति, डीएमसी मनीषा शर्मा, सीटीएम अप्रतिम सिंह सहित जिला के अन्य वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, विभिन्न सामाजिक संगठन प्रतिनिधियों, खिलाडियों, विद्यार्थियों व युवाओं ने सभी साइकिलिस्ट का ढोल-नगाड़ों, फूल मालाओं व पुष्प वर्षा करते हुए गर्मजोशी से स्वागत अभिनंदन किया। पलवल शहर के जिला सचिवालय पर पहुंचने पर खेल मंत्री गौरव गौतम ने ढोल-नगाड़ा बजाकर साइक्लोथॉन के पलवल आगमन पर खुशी जाहिर की।

खेल मंत्री जिला सचिवालय परिसर से साइकिल चलाकर सेक्टर-2 स्थित महाराणा प्रताप चौक पहुंचे और साइक्लोथॉन में भागीदार बने। साइक्लोथॉन गुरुवार को सुबह होडल से चलकर गांव बंचारी, मुडकटी, सराय, खटेला, मित्रोल, बामनीखेड़ा, पुलिस लाइन, जिला सचिवालय पलवल, आगरा चौक, पुराना जीटी रोड से मीनार गेट, कमेटी चौक होकर सेक्टर-2 स्थित महाराणा प्रताप चौक पर पहुंची। खेल मंत्री गौरव गौतम के साथ विधायक हरिंद्र सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष विपिन बैंसला, सतपाल देशवाल, उपायुक्त हरीश कुमार वशिष्ठ, पुलिस अधीक्षक चंद्रमोहन, अतिरिक्त उपायुक्त सहित अन्य अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने साइकिल यात्रा में भागीदारी करते हुए साइकिल चलाई।

साइक्लोथॉन में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो से उप निरीक्षक अशोक कुमार अपनी साइकिल के साथ लोटा और नमक लिए हुए चल रहे हैं। वे आमजन से लोटे में नमक डलवाते हुए अपने क्षेत्र सहित हरियाणा प्रदेश को 'नशा मुक्त हरियाणा' बनने का संकल्प दिलवा रहे हैं। दो दिन तक पलवल जिला में यात्रा के दौरान ग्रामीणों व युवाओं ने सामाजिक कुरीति के विरूद्ध बढ़चढक़र लोटे में नमक डालते हुए नशा मुक्त हरियाणा बनाने में अपनी आहुति डाली।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले की आलोचना करना ममता को पड़ा भारी, अवमानना नोटिस जारी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को एसएससी (स्कूल सेवा आयोग) भर्ती घोटाले के संबंध में सुप्रीम कोर्ट के फैसले की आलोचना करना भारी पड़ गया है। उनकी हालिया टिप्पणियों के लिए सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें अवमानना नोटिस जारी कर दिया है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बर्खास्त शिक्षकों के एक वर्ग से मुलाकात की और उनका समर्थन करने की कसम खाकर आश्वासन दिया कि योग्य उम्मीदवार बेरोजगार नहीं होने दूंगी। यह घटनाक्रम सुप्रीम कोर्ट द्वारा 2016 के पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग भर्ती के माध्यम से की गई 25,752 स्कूल नौकरियों की नियुक्तियों को रद्द करने के फैसले को बरकरार रखने के कुछ दिनों बाद हुआ है। ममता ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद बंगाल सरकार द्वारा संचालित और सहायता प्राप्त स्कूलों में शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के रूप में अपनी नौकरी खोने वाले लोगों को कहा कि कृपया यह मत समझिए कि हमारी सरकार ने इस फैसले को स्वीकार कर लिया है। हम पत्थर दिल नहीं हैं, और ऐसा कहने के लिए मुझे जेल भी हो सकती है, लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं है।

भ्रष्ट और अंग्रेजों की भूली-बिसरी औलाद कांग्रेस : कंगना रनौत

सुंदरनगर (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के मंडी से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद कंगना रनौत ने कांग्रेस पर हमला कर भ्रष्ट और अंग्रेजों की भूली-बिसरी औलाद बताया। सुंदरनगर विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर आईं अभिनेत्री ने जनसभा को संबोधित करते हुए टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले देश भ्रष्टाचार के लिए जाना जाता था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने साहसिक निर्णयों और बेदाग ईमानदारी से उस धारणा को पूरी दुनिया में बदल दिया। कंगना ने कांग्रेस पर झूठे वादे करने आरोप लगाकर कहा कि मंडी से पूर्व कांग्रेस सांसद प्रतिभा सिंह ने सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास निधि से निर्वाचन क्षेत्र को कोई राशि आवंटित नहीं की। रनौत ने दावा किया कि उन्होंने बीते आठ महीनों में रामपुर से भरमौर तक मंडी के सभी इलाकों में पांच करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

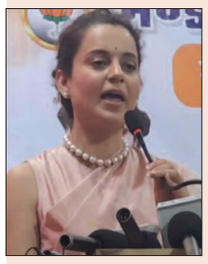

नवरात्रि पर हिमाचल में 18.85 लाख तीर्थयात्रियों ने किए शक्तिपीठों के दर्शन

बिलासपुर (एजेंसी)। हाल ही में संपन्न हुए नवरात्रि उत्सव के दौरान हिमाचल प्रदेश में 18.85 लाख से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने शक्तिपीठों के दर्शन किए। आंकड़ों के मुताबिक सबसे ज्यादा 7.82 लाख भक्तों ने कांगड़ा जिले के ज्वाला मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद सिरमौर में माता बाला सुंदरी मंदिर में 3.42 लाख, बिलासपुर में नैना देवी मंदिर में 3.20 लाख, कांगड़ा में बगलामुखी मंदिर में 1.30 लाख, ऊना में चिंतपूर्णी मंदिर में 1.23 लाख, बृजेश्वरी देवी मंदिर में 96,850 और चामुंडा देवी मंदिर में 89 हजार भक्तों ने दर्शन किए। पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि यातायात आंकड़ों से पता चला है कि इस अवधि में 15,481 भारी मोटर वाहन, 66,996 हल्के मोटर वाहन और 55,718 दोपहिया वाहनों ने इन शहरों में प्रवेश किया।

दो अलग-अलग घटनाओं में आकाशीय बिजली गिरने से दो की मौत

फिरोजाबाद (एजेंसी)। फिरोजाबाद जनपद में दो अलग-अलग स्थानों पर गुरुवार तड़के आए तूफान में आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट में अपर जिलाधिकारी ने बताया कि पहली घटना तहसील सदर क्षेत्र नारखी थाना क्षेत्र के गांव दौलतपुर में हुई जिसमें खेत पर काम कर रही महिला ललिता देवी (30) पर आकाशीय बिजली गिरने से झुलस गई। झुलसी अवस्था में उसे अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक महिला आठ माह की गर्भवती थी। दूसरी घटना थाना जसराना क्षेत्र के गांव चनारी में घटी जिसमें खेत पर काम कर रहे किसान पदम वीर सिंह (32) की आकाशीय बिजली गिरने से मौत हो गई। दोनों स्थानों पर तहसील की टीम भेजी गई है। अपर जिलाधिकारी ने बताया कि शासन को दैवीय आपदा राहत कोष से राहत राशि देने के लिए अवगत करा दिया गया है।

अपना शरबत बेचने के लिए क्या क्या कह गए बाबा रामदेव

नई दिल्ली (एजेंसी)। योगगुरु बाबा रामदेव योग सिखाते-सिखाते कारोबारी भी बन गए हैं। उन्होंने अपना शरबत बेचने के लिए दूसरे शरबतों को न केवल टॉयलेट क्लीनर बताया बल्कि यहां तक कह दिया कि ये लोग इन पैसों से मदरसों-मस्जिदों के निर्माण करते हैं। रामदेव ने आगे दावा किया कि जाहिर तौर पर अगर आप उस कंपनी का शरबत पीते हैं तो यह मस्जिद और मदरसों के लिए धन जुटाने में मदद मिलती है। उन्होंने दावा किया कि अगर आप पतंजलि के शरबत का चयन करते हैं तो इससे गुरुकुलों, आचार्यकुलों, पतंजलि विश्वविद्यालयों और भारतीय शिक्षा बोर्ड को मदद मिलती है। पतंजलि प्रोडक्टस नामक हैंडल से फेसबुक पर पोस्ट किए गए इस वीडियो के कैप्शन में हिंदी में लिखा हुआ है कि शरबत जिहाद के नाम पर बेचे जा रहे टॉयलेट क्लीनर और कोल्ड ड्रिंक के जहर से अपने परिवार और मासूम बच्चों को बचाएं। घर में केवल पतंजलि का शरबत और जूस ही लाएं। इस वीडियो में बाबा रामदेव सॉफ्ट ड्रिंक की आलोचना करते हुए नजर आ रहे हैं। उनका कहना है कि ये टॉयलेट क्लीनर की तरह हैं, जिसे गर्मी में प्यास बुझाने के नाम पर पिया जाता है।

'तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण नए भारत का संकल्प', बीजेपी बोली- चाहे आप दुनिया के किसी कोने में...

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के आरोपी तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह सभी सुरक्षा, आतंकवाद निरोधक, अभियोजन और खुफिया एजेंसियों के लिए एक बड़ी जीत है। पूनावाला ने आगे कहा कि प्रत्यर्पण इस बात का संकल्प है कि भारत आतंकी हमलों पर चुप नहीं रहेगा बल्कि कड़ा जवाब देगा। उन्होंने कहा कि तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण, न केवल 138 भारतीय पीड़ितों के लिए बल्कि कई अन्य देशों के पीड़ितों के लिए भी न्याय और समाधान सुनिश्चित करने और उसके करीब पहुंचने की दिशा में उठाया गया एक बड़ा कदम है।

शहजाद पूनावाला ने दावा किया कि तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण कोई आम प्रत्यर्पण नहीं है, ये नए भारत के संकल्प का प्रतिबिंब है। जिसे 2019 में पीएम नरेन्द्र मोदी जी ने परिभाषित करते हुए कहा था? कि अगर कोई भारत की अखंडता, एकता, सुरक्षा, अस्मिता या किसी भी निर्दोष भारतवासी पर हमला करने की जुर्रत करेगा, तो भारत ऐसे आतंकी को पाताल से भी खोज कर न्याय के पथ पर लाने का काम करेगा। उन्होंने कहा कि आज तहव्वुर राणा जब भारत लाया जा रहा, तो ये एक चेतावनी भी है... हर एक उस आतंकी के लिए, आतंकी साजिशकर्ता के लिए कि

चाहे आप दुनिया के किसी कोने में छिप कर क्यों न बैठे हो, भारत आपको चुन चुन कर ढूंढेगा और न्याय के पथ पर लाएगा।

भाजपा नेता ने कहा कि घरेलू आतंकवाद के कई मामलों में हमारी एजेंसियों ने अपराधियों को सजा दिलाने में सफलता प्राप्त की है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि हमने नए कानूनों के माध्यम से इन एजेंसियों को सशक्त बनाया है और उन्हें काम करने की पूरी छूट दी है। इस बीच, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने 26/11 मुंबई आतंकी हमलों में शामिल लोगों को दंडित करने के लिए ÷कुछ नहीं करने÷ के लिए कांग्रेस की आलोचना की, जिसमें 166 से अधिक लोगों की जान चली गई।

एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, गोयल ने तत्कालीन सरकार पर 26/11 मुंबई हमलों के मुख्य आरोपियों में से एक अजमल कसाब को केवल ÷बिरयानी परोसने÷ का आरोप लगाया। केंद्रीय मंत्री ने हमलावरों को जवाबदेह ठहराने और उन्हें भारतीय धरती पर न्याय का सामना कराने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के समय में आतंकवादियों ने उसी होटल पर हमला किया था, जिसमें हम खड़े हैं। यहां लोग मारे गए। लेकिन कांग्रेस ने इसमें शामिल लोगों को सजा दिलाने के लिए कुछ नहीं किया। कसाब जो पकड़ा गया था, उसे भी बिरयानी खिलाई गई। हमारे देश पर हमला करने वालों को न्याय के कटघरे में खड़ा करना और उन्हें सजा दिलाना ही पीएम मोदी का संकल्प है। हर भारतीय नागरिक को पीएम मोदी पर गर्व है कि इस देश में शामिल लोगों को सजा मिलेगी।

बड़ा सवाल : बाबा की दीवानगी या कुछ गड़बड़... चंद मिनटों में हो गई बुकिंग

देहरादून। चारधाम यात्रा के दौरान संचालित होने वाली केदारनाथ हेली सेवा के लिए देश के सभी राज्यों से यात्रियों ने ऑनलाइन टिकटों की बुकिंग कराई है। वेबसाइट खुलने के कुछ घंटों में मई माह की पूरी टिकट फुल हो गए। चंद मिनटों की यह प्रक्रिया 2022 जैसे किसी कंफर्म रेलवे टिकट स्कैम की याद भी दिला रही है। उस वक्त सोशल मीडिया पर मौजूद कई विदेशी सॉफ्टवेयर से दलालों ने कंफर्म टिकट का कालाधंधा चलाया था। कई दलाल गिरफ्तार हुए और हजारों आईडी बंद कराई गई। हालांकि, उत्तराखंड सरकार ने बुकिंग के लिए इस्तेमाल हुए आईपी एड्रेस का ब्योरा तलब किया है। इससे ही साफ हो पाएगा कि यह आखिर क्या मामला था?

श्री केदारनाथ धाम के लिए चंद मिनटों में ही सात हजार से अधिक टिकट बुक हो गए और फिर विंडो बंद हो गई। ये बाबा केदार के प्रति लोगों की दीवानगी है या फिर एजेंटों का कोई खेल। जी हां, ये टिकट व्यक्तिगत रूप से लोगों ने बुक कराए या फिर एजेंटों ने कुछ गड़बड़ की, ये जांच का विषय है। लेकिन, आईआरसीटीसी के माध्यम से ऐसा एक नहीं, बल्कि कई बार हो चुका है। अभी तीन साल पहले ही आईआरसीटीसी की वेबसाइट को कई एजेंटों के इसी सिंडीकेट ने गच्चा दिया और करोड़ों रुपये की चपत लगाकर लोगों को ऊंचे दामों में रेलवे के कंफर्म टिकट बेचे। ऐसे में हेली सेवा टिकट बुकिंग में भी ऐसा खेल हुआ होगा यह कहना फिलहाल गलत नहीं है।

दरअसल, पिछले साल से श्री केदारनाथ धाम हेली सेवा के लिए टिकट बुकिंग की जिम्मेदारी आईआरसीटीसी को दी गई थी। इसके अलावा और कोई विंडो या प्लेटफार्म नहीं है। इस बार भी मंगलवार को सुबह 12 बजे आईआरसीटीसी ने अपनी वेबसाइट पर टिकट विंडो खोली। लोगों ने टिकट बुकिंग शुरू की।केवल 40 मिनट बाद ही मई माह के स्लॉट फुल हो गए। इस पर कई लोग सवाल भी उठा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि टिकट बुकिंग करने के लिए केवल नाम और फोन नंबर दर्ज किया जाता है। इसके लिए एक विस्तृत फॉर्म भरा जाता है।

वोट बैंक की राजनीति के खातिर बंगाल में वक्फ कानून को लागू नहीं करना चाहती ममता : सरावगी

पटना (एजेंसी)। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के वक्फ संशोधन कानून को लागू नहीं करने के ऐलान पर बिहार सरकार में राजस्व मंत्री संजय सरावगी ने सवाल उठा दिए हैं। उन्होंने कहा कि ममता वोट बैंक की राजनीति करने में लगी हुई हैं। नीतिश सरकार में राजस्व मंत्री सरावगी ने कहा, जब संसद से कोई कानून पारित होता है, तब वहां कानून पूरे देश में लागू होता है। मैं उनसे (ममता बनर्जी) पूछना चाहता हूं कि वे वक्फ कानून को बंगाल में क्यों नहीं लागू करना चाहती हैं। ये कानून मुसलमानों के हित का है और इसमें भी ये विशेषकर पसमांदा मुसलमानों के हित में हैं। मगर, ममता वोट बैंक की राजनीति कर रही हैं और पश्चिम बंगाल के लोग इस बात को समझ रहे हैं। इस बार उन्हें समझ में आ जाएगा।

उन्होंने कहा, विरोधी दलों ने तीन तलाक का भी विरोध किया और इतना ही नहीं सीएए के बारे में भ्रम फैलाया गया कि सभी मुसलमानों को देश से भगा दिया जाएगा। मगर, प्रधानमंत्री मोदी ने खुद कहा था कि एक भी मुसलमान देश से बाहर नहीं जाएगा, ये लोगों को भ्रमित करने का काम करते हैं। भाजपा विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल ने ममता बनर्जी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, वक्फ भारत के पार्लियामेंट से पास कानून है। ममता अगर इस फैसले को नहीं मानती हैं, तब देश के कानून में इतने उपाय हैं कि उन्हें ठीक कर दिया जाएगा।

वहीं बिहार सरकार में मंत्री मंगल पांडे ने कहा, ममता हमेशा ही उन लोगों का समर्थन करती हैं, जो इस राष्ट्र के विकास के बाधक रहे हैं। वक्फ कानून में राष्ट्र का विकास निहित है और इसमें पसमांदा, गरीब और अल्पसंख्यकों के विकास की बात कही गई है। मगर, ममता बनर्जी को कभी भी इस राष्ट्र के विकास की चिंता नहीं है बल्कि, उन्हें अपने वोट बैंक की चिंता है।

अगर बैंकों में मराठी का इस्तेमाल नहीं हुआ तो...राज ठाकरे ने आईबीए को लिखी चिट्ठी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के अध्यक्ष राज ठाकरे ने शीर्ष बैंक निकाय से कहा है कि वह बैंकों को निर्देश दे कि वे अपनी सेवाओं में आरबीआई के मानदंडों के अनुसार मराठी का उपयोग करें, अन्यथा उनकी पार्टी अपना आंदोलन तेज करेगी। मनसे नेताओं द्वारा बुधवार को भारतीय बैंक संघ को सौंपे गए पत्र में ठाकरे ने यह भी कहा कि यदि बैंक अपनी सेवाओं में तीन-भाषा फार्मूले अंग्रेजी, हिंदी और स्थानीय भाषा (महाराष्ट्र के मामले में मराठी) का पालन नहीं करते हैं, तो कानून और व्यवस्था के लिए बैंक स्वयं जिम्मेदार होंगे। ठाकरे ने आईबीए को लिखे पत्र में कहा, 'आप बैंकों को मराठी भाषा का उपयोग करने के लिए आवश्यक निर्देश दें, अन्यथा मनसे अपना आंदोलन तेज कर देगी और उसके बाद कानून एवं व्यवस्था की जिम्मेदारी

संबंधित बैंकों की होगी।

पत्र में कहा गया है कि भारतीय रिजर्व बैंक ने सार्वजनिक क्षेत्र और निजी बैंकों में क्षेत्रीय भाषाओं के इस्तेमाल को लेकर एक परिपत्र जारी किया है। इसके अनुसार, बैंकों में बोर्ड तीन भाषाओं में होने चाहिए। हिंदी, अंग्रेजी और उस राज्य की क्षेत्रीय भाषा। पत्र में कहा गया है कि यहां तक कि सेवाएं भी तीन भाषाओं में होनी चाहिए। यह कदम तब उठाया गया है जब ठाकरे ने शनिवार को अपने पार्टी कार्यकर्ताओं से बैंकों और अन्य प्रतिष्ठानों में मराठी के इस्तेमाल को लागू करने के लिए आंदोलन को फिलहाल रोकने के लिए कहा क्योंकि हमने इस मुद्दे पर पर्याप्त जागरूकता पैदा कर दी है।

आंदोलन के बाद, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियन्स ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर कहा कि मनसे कार्यकर्ता होने का दावा करने वाले लोग बैंक शाखाओं में जा रहे हैं और कर्मचारियों को धमका रहे हैं। 30 मार्च को गुड़ी पड़वा की रैली में ठाकरे ने आधिकारिक उद्देश्यों के लिए मराठी को अनिवार्य बनाने के अपने पार्टी के रुख को दोहराया।

1 करोड़ हस्ताक्षरों के साथ वक्फ कानून प्रस्ताव, जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने लिया फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रमुख मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वक्फ कानून के खिलाफ एक करोड़ लोगों द्वारा हस्ताक्षरित प्रस्ताव भेजने की कसम खाई है। कोलकाता के रामलीला मैदान में एक विशाल सभा में जमीयत के बंगाल चैप्टर ने अपने प्रमुख और मंत्री सिद्दीकुल्लाह चौधरी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री से इस कानून को तुरंत निरस्त करने का आग्रह किया। जमीयत ने वक्फ कानून के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए क्राउडफंडिंग अभियान की भी घोषणा की। सुप्रीम कोर्ट अगले हफ्ते कई याचिकाओं पर सुनवाई करने वाला है। कानून के खिलाफ हस्ताक्षर स्वयंसेवक बंगाल के विभिन्न जिलों में जाकर एकत्र करेंगे। चौधरी ने कहा कि इस तरह के सामूहिक आंदोलन के कारण पहले भी सरकारों ने कानून वापस लिए हैं।

हमारा लक्ष्य विभिन्न जिलों और कस्बों से ये हस्ताक्षर प्राप्त करना और उन्हें प्रधानमंत्री मोदी को भेजना है। चौधरी ने सभा को बताया कि पहले भी कानून वापस लिए गए हैं और इस कानून को निरस्त करवाने के लिए हम 1 करोड़ हस्ताक्षर प्राप्त करेंगे। वक्फ कानून, जिसे पिछले सप्ताह संसद द्वारा आधी रात के बाद तक चली बैठकों में पारित किया गया था, वक्फ संपत्तियों को विनियमित करने और उनसे संबंधित विवादों का निपटारा करने में सरकारी निगरानी का विस्तार करता है। जमीयत ज्ञापन में कहा गया है कि वक्फ कानून संविधान के अनुच्छेद 14, 25 और 26 के तहत गारंटीकृत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। इसमें कहा गया है कि यह कानून वक्फ बोर्डों की स्वायत्तता को कमजोर करता है और नौकरशाहों को अत्यधिक अधिकार देकर अल्पसंख्यक समुदाय की धार्मिक स्वतंत्रता का अतिक्रमण करता है। ज्ञापन में कहा गया है कि केंद्र का इरादा वक्फ प्रशासन पर नियंत्रण करना और मुस्लिम समुदाय को अपने धार्मिक बंदोबस्त के प्रबंधन से अलग करना है। मुस्लिम समुदाय के एक वर्ग द्वारा विरोध किए जाने वाले प्रावधानों में से एक केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्य वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिमों को अनिवार्य रूप से शामिल करना है। कानून का एक और विवादास्पद प्रावधान यह है कि यह राज्य के अधिकारी को यह निर्धारित करने का अधिकार देता है कि विवादित संपत्ति वक्फ है या सरकार की है।

तपती गर्मी पर बादलों ने लगाए ब्रेक: दिल्ली, उप्र और बिहार समेत कई राज्यों में राहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के कई हिस्सों में गर्मी से राहत मिल रही है। यहां बारिश और बादल के चलते राहत मिली है। यूं कह सकते है कि गर्मी और तपन पर बादलों ने ब्रेक लगा दिए हैं।

बिहार के ज्यादातर जिलों में बुधवार शाम से ही अच्छी बारिश हो रही है और तेज हवाएं चली हैं। इससे मौसम में नरमी आई है। इसके अलावा यूपी के गोरखपुर, लखनऊ और कानपुर जैसे शहरों में भी हल्की बारिश से राहत मिली है। मौसम विभाग का अनुमान है कि इस बदलाव के चलते कम से कम 15 तारीख तक गर्मी थोड़ी कम रहेगी। इसके बाद ही तापमान में फिर से इजाफा होना शुरू होगा।

मौसम विभाग का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ के असर से मौसम में बदलाव दिख रहा है। इसी के कारण बारिश और आंधी का मौसम बना हुआ है।

विभाग का कहना है कि दिल्ली-एनसीआर के अलावा पूरे पश्चिम उत्तर भारत यानी यूपी, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में शुक्रवार तक खुशनुमा मौसम रहेगा और हल्की बारिश होती रहेगी। मौसम विभाग का अनुमान है कि आज यानी गुरुवार से ही हीट वेव में तेजी से कमी आएगी, जिसने बीते कई दिनों से लोगों को तपा रखा था। यही नहीं मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों में भी थोड़ी राहत 10 अप्रैल के बाद से मिलेगी। पूर्वी भारत यानी बंगाल और ओडिशा आदि राज्यों में भी गरज के साथ हल्की बारिश की संभावना है। वहीं पूर्वोत्तर भारत में अच्छी बारिश हो सकती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस सप्ताह के अंत तक हिमाचल, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड जैसे राज्यों में बारिश होगी। इसके अलावा हवा की गति 40 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा तक होगी। इससे यूपी, हरियाणा, दिल्ली-एनसीआर जैसे इलाकों में भी तापमान कम होगा और लोगों को गर्मी से राहत मिलेगी। कुछ मैदानी इलाकों में भी हल्की बारिश की संभावना है। वहीं पश्चिमी राजस्थान में इस वीकेंड में रेतीला तूफान भी उठ सकता है। उत्तराखंड में भी तेज हवाओं के साथ मौसम बदलेगा तो इसका असर मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा और दिल्ली तक दिख सकता है।

चुराचांदपुर जिले में 17 अप्रैल तक रहेगा कर्फ्यू: झंडा फहराने को लेकर जोमी और हमार जनजातियों में हुआ टकराव

इम्फाल (एजेंसी)। मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में मंगलवार को दो जनजातियों के बीच झंडा फहराने को लेकर हुए उग्र विवाद के बाद हालात इतने बिगड़े कि प्रशासन को 17 अप्रैल तक के लिए कर्फ्यू लागू करना पड़ गया। यह टकराव जोमी और हमार जनजातियों के बीच हुआ, जहां दोनों पक्षों ने विवादित स्थल पर अपने-अपने समुदाय के झंडे लगाने की कोशिश की। यह जगह वी मुनहोइह और रेंगकाई गांवों के बीच स्थित है, जिसे दोनों समुदाय अपनी-अपनी जमीन बताते हैं।

प्रशासन ने बिगड़े हालात को देखते हुए जिले के वी मुनहोइह, रेंगकाई, कांगवाई, समुलामलान और संगाइकोट इलाकों में

कर्फ्यू लगा दिया है। हालांकि, आम जनजीवन को ध्यान में रखते हुए सुबह 6 बजे से शाम 5 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी गई है। इस मामले को लेकर बुधवार को जिले के कलेक्टर ने दोनों गांवों के लोगों के साथ बैठक की थी, जिसमें दोनों समुदायों ने स्पष्ट किया था कि यह विवाद जातीय नहीं बल्कि भूमि स्वामित्व से जुड़ा है। बैठक में प्रशासन और नेताओं ने लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों से बचने की अपील की है। यहां बताते चलें कि यह पहली बार नहीं है जबकि विवाद के चलते हिंसा भड़की हो। 18 मार्च को भी इसी स्थान पर झंडा हटाने को लेकर हिंसा भड़क उठी थी, जिसमें हमार समुदाय के रोपुई पाकुमटे की मौत हो गई थी और कई लोग घायल हुए थे।

गौरतलब है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह संसद बता चुके हैं कि दिसंबर 2023 से मार्च 2024 तक मणिपुर में कोई नई हिंसा नहीं हुई। ऐसे में स्थानीय नेता बता रहे हैं कि हालात इस कदर बदतर हैं कि प्रशासन को कर्फ्यू लगाना पड़ा है। चुराचांदपुर में हालिया घटनाएं बताती हैं कि तनाव अब भी पूरी तरह शांत नहीं हुआ है।

कन्हैया कुमार की बिहार में बढ़ती सक्रियता, लालू और तेजस्वी का बीपी बढ़ा रही

-तेजस्वी के मुद्दों को भुनाने में जुटे कन्हैया

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दल अपनी-अपनी गोटी बिठाने में जुटे हैं। इसी कड़ी में बिहार में पलायन और बेरोजगारी को बड़ा मुद्दा बनने में कांग्रेस जुटी हुई है। हालांकि पलायन और बेरोजगारी के मुद्दे पर महागठबंधन में दो दल यानी कि कांग्रेस और राजद में खटपट चल रही हैं। दोनों ही दलों की ओर से मुद्दे को उठाया जा रहा है। लेकिन इसके जरिए एक ओर जहां तेजस्वी यादव है। वहीं दूसरी ओर कन्हैया कुमार हैं। राजनैतिक जानकारों के द्वारा दावा किया जा रहा है तेजस्वी के एजेंडे को कन्हैया ने पूरी तरीके से लपक लिया है।

तेजस्वी लगातार बेरोजगारी, पलायन और शिक्षा को मुद्दा बना रहे हैं। वहीं अब इन्हीं मुद्दों के सहारे कन्हैया भी बिहार में कांग्रेस की राजनीति को धार देने की कोशिश में लगे हुए हैं। कांग्रेस नेता कन्हैया पलायन रोको, नौकरी दो पदयात्रा निकल रहे हैं। इसके जरिए बेरोजगारी और पलायन को बड़ा मुद्दा बनाया जा रहा है। लेकिन यह कहीं ना कहीं राजद के लिए परेशानी खड़ कर रहा है। दावा हैं कि कन्हैया की पदयात्रा तेजस्वी के लिए परेशानी की सबब बन सकती है। यह दोनों नेता एक ही गठबंधन के हिस्सा हैं, लेकिन एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि युवाओं के वोटो को अपनी और कौन खींचने में ज्यादा कामयाब रहता है। राजद प्रमुख और पूर्व सीएम लालू यादव की वीटो के बावजूद भी कन्हैया को कांग्रेस आलाकमान का सहयोग मिल रहा है। इसकारण कन्हैया की यात्रा में खुद राहुल गांधी शामिल हुए। इसके बाद सवाल उठा रहा हैं कि क्या तेजस्वी के चुनावी मुद्दे को अब कांग्रेसी छीनना चाहती है। पिछले 5-7 सालों में तेजस्वी लगातार रोजगार की बात कर रहे हैं। उन्होंने पिछले चुनाव में 10 लाख नौकरी देने का भी वादा किया था। इस बार भी वह कुछ इसी तरीके का वादा कर रहे हैं।

लेकिन कन्हैया भी इसमें पीछे नहीं है। वह युवाओं से सक्षम बनने की बात कर रहे हैं। रोजगारी की बात कर रहे हैं। लगातार आरक्षण का भी मुद्दा उठा रहे हैं। पलायन को रोकने का भी दावा कर रहे हैं। यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि लालू कभी भी खुलकर नहीं चाहते कि कन्हैया कुमार बिहार की राजनीति में आए। 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान भी जब कन्हैया सीपीआई की टिकट पर चुनावी मैदान में थे और राजद का समर्थन उन्हें नहीं मिल सका था। 2024 के चुनाव में भी यही हुआ। कांग्रेस चाहती थी कि कन्हैया बिहार से चुनाव लड़े। लेकिन फिर से लालू ने वीटो लगा लिया। इसके बाद कन्हैया कुमार को दिल्ली से चुनावी मैदान में उतारा गया था।

दरअसल लालू और राजद को लगता है कि कन्हैया कहीं तेजस्वी के प्रतिस्पर्धी साबित न हो जाए। कन्हैया कुमार जेएनयू से पढ़े लिखे जबकि तेजस्वी की शिक्षा को लेकर लगातार सवाल उठाते रहे हैं। कन्हैया

कुमार शानदार वक्ता हैं, लोगों को तर्क पूर्ण बातों से अपनी ओर खींचते हैं। जबकि दूसरी ओर तेजस्वी इस मामले में पिछड़ते हुए दिखाई देते हैं।

स्टार किड्स को भी नहीं मिलते मौके अगर वो...

मोहित मलिक पिछले 30 सालों से टीवी की दुनिया में एक्टिव हैं। वह कुल्फी कुमार बाजेवाला और साइबर वार जैसे टीवी शो में नजर आ चुके हैं। हाल ही में मोहित मलिक आजाद फिल्म में नजर आए। फिल्म में उन्होंने तेज बहादुर का किरदार निभाया है। हाल ही में स्क्रीन के साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि अपनी कला के प्रति अविश्वास की वजह से वह फिल्मों से दूर रहे। इसी वजह से उन्हें लंबा इंतिजार करना पड़ा।

मोहित मलिक ने बताया साल 2016 में मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास नहीं था कि मैं फिल्मों में काम करूं। मुझे अपनी कला पर भरोसा नहीं था। आत्मविश्वास आने के बाद मैंने 2017-18 में फिल्मों में हाथ आजमाया। टीवी सीरियल में काम करने के दौरान मैं अक्सर टाइम निकाल कर फिल्मों के ऑडिशन के लिए जाया करता था। अभिषेक कपूर को मेरा ऑडिशन अच्छा लगा और उन्होंने मुझे फोन किया। मैंने दूसरा टेस्ट दिया और मैं इसमें पास हो गया।

नई इंडस्ट्री में काम करने में होती है दिक्कत

मलिक ने आगे बताया कि एक अलग इंडस्ट्री में इतने लंबे वक्त तक काम करने के बाद, एक दूसरे नए उद्योग में एकदम से शुरुआत करने के बाद, आप अहंकार से भी जूझते हैं। लेकिन जुनून अहंकार को हरा देता है। मैं आज भी लोगों के पास जाता हूं और उनसे काम मांगता हूं। लोगों ने आजाद में मेरे काम को पसंद किया। मोहित से पूछा गया कि स्टार किड को अदाकारी का कोई तजुर्बा नहीं होता है। ऐसे में उन्हें काम मिल जाता है, इस पर उनका क्या कहना है? इस पर एक्टर ने जवाब दिया एक वक्त के बाद उन्हें भी मौके मिलने बंद हो जाते हैं।

स्टार किड्स को भी करनी पड़ती है मेहनत

मलिक ने बताया अगर मैं भी किसी फिल्मी परिवार में पैदा होता, तो मुझे भी कोई गॉडफादर मिलता और मुझे कई अवसर मिलते। हालांकि, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने काम में कितनी मेहनत कर रहे हैं। अगर आप अपने काम को निखारने के लिए मेहनत नहीं कर रहे हैं, तो आप अपने सभी मौकों को बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए स्टार किड्स को भी बने रहने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। उन्हें कई मौके मिल सकते हैं, लेकिन अगर उनके काम में सुधार नहीं होगा, तो काम नहीं मिलेगा।

जब 12 ऑडिशन के बाद अनुप्रिया गोयनका के हाथ से फिसली सलमान की फिल्म?

अनुप्रिया गोयनका बॉलीवुड और ओटीटी की जानी-पहचानी अभिनेत्री हैं। उन्होंने टाइगर जिंदा है, पद्मावत और वॉर जैसी बड़ी फिल्मों में काम किया है। ओटीटी पर भी सेक्रेड गेम्स, अभय और क्रिमिनल जस्टिस में उन्होंने अदाकारी से लोगों के दिलों में खास जगह बनाई है। लेकिन क्या आपको पता है कि सलमान खान की एक फिल्म उनके हाथ से निकल गई थी? दरअसल, फिल्म सुल्तान के लिए अनुप्रिया ने कई ऑडिशन दिए थे, लेकिन अंत में यह रोल अनुष्का शर्मा के पास चला गया था।

हाल ही में बातचीत में अनुप्रिया ने इस अनुभव को साझा किया। अनुप्रिया ने कहा कि सुल्तान के लिए उनका सफर आसान नहीं था। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, मैंने मुख्य किरदार के लिए ऑडिशन दिया था। उस वक्त यश राज फिल्म्स (वाईआरएफ) नए चेहरों की तलाश में था।

एक महीने तक चली प्रक्रिया

अनुप्रिया ने आगे कहा, मेरे 11-12 टेस्ट हुए। पहले एक ऑडिशन, फिर दूसरा, फिर म्यूजिक वीडियो टेस्ट, वैभवी मर्चेंट के साथ डांस टेस्ट और आखिर में डायरेक्टर अली अब्बास जफर के साथ रीडिंग्स। उन्होंने आगे कहा, शुरुआत में मुझे पता ही नहीं था कि यह सुल्तान के लिए है। वाईआरएफ में असली स्क्रिप्ट नहीं देते। वे दूसरी स्क्रिप्ट पर ऑडिशन लेते हैं। जब मैं अली से मिली और उन्होंने मिस्टर खान का जिक्र किया तब मुझे समझ आया कि यह सलमान की फिल्म है। अनुप्रिया को उम्मीद थी कि शायद उन्हें मौका मिल जाए। लेकिन जब रिजल्ट आया तो उनका दिल टूट गया। अभिनेत्री ने कहा, यह मेरे लिए बहुत दुखद था। अनुप्रिया ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, एक तो मैं सांवली हूं और मुझे इस पर गर्व है, लेकिन मैं टिपिकल वाईआरएफ हीरोइन नहीं हूं। मेरी टांगें परफेक्ट शेप की नहीं हैं।

सुल्तान रही थी ब्लॉकबस्टर

सुल्तान की बात करें तो यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर रही थी। अनुष्का शर्मा ने इसमें पहलवान का किरदार निभाकर खूब तारीफें बटोरी थीं। अनुप्रिया भले ही यह फिल्म न कर पाईं, लेकिन उनकी मेहनत और जज्बा आज भी उनकी दूसरी परियोजनाओं में नजर आता है।

एक जादूगर बन जादू दिखाएंगे विक्की कौशल!

विक्की कौशल इन दिनों अपनी हालिया फिल्म छावा की सफलता का लुत्फ उठा रहे हैं। अब कथित तौर पर विक्की कौशल अपनी एक और नई फिल्म के साथ एक और धमाका करने के लिए तैयार हैं। दरअसल, सोशल मीडिया पर एक पोस्टर वायरल हो रहा है, जिसमें विक्की कौशल जादूगर की ड्रेस पहने नजर आए। पैपराजी पेज और यूजर द्वारा यह विक्की की नई फिल्म बताई जा रही है। हालांकि, इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पोस्टर में बताया गया है कि फिल्म का निर्देशन शूजित सरकार कर रहे हैं और यह राइजिंग सन प्रोडक्शन है। हालांकि, विक्की ने अपने इंस्टाग्राम पर इस फिल्म का पोस्टर साझा नहीं किया है। पोस्टर में विक्की को हरे रंग की ड्रेस में देखा गया, जो जादूगर की भूमिका में उनके किरदार की ओर इशारा करता है। हालांकि, अब इस फिल्म पर मेकर्स और विक्की की ओर से आधिकारिक एलान का इंतजार है।

पहली फिल्म से मिला नेशनल क्रश का टैग, बॉलीवुड में भी चला श्रीवल्ली का जादू

भारतीय सिनेमा की चमकती सितारा रश्मिका मंदाना अपना जन्मदिन मना रही हैं। कर्नाटक के एक छोटे से शहर विराजपेट से निकलकर साउथ सिनेमा में अपनी पहचान बनाने वाली रश्मिका आज न सिर्फ दक्षिण भारत की सुपरस्टार हैं, बल्कि बॉलीवुड में भी अपनी धमाकेदार मौजूदगी दर्ज करा चुकी हैं। उनके जन्मदिन के मौके पर आइए एक नजर डालते हैं उनके करियर के उस शानदार सफर पर, जहां साउथ से बॉलीवुड तक पहुंचते हुए उन्होंने छोटे-छोटे रोल्स को भी अपनी अदाकारी से बड़ा बना दिया और बड़े सितारों के साथ काम करते हुए देशभर में लोकप्रियता हासिल की।

रश्मिका ने अपने करियर की शुरुआत 2016 में कन्नड़ फिल्म किरिक पार्टी से की थी। यह फिल्म न सिर्फ उनकी डेब्यू फिल्म थी, बल्कि उनकी जिंदगी का एक अहम मोड़ भी बनी। इस फिल्म में उनके को-स्टार रक्षित शेट्टी के साथ उनकी ऑनस्क्रीन और ऑफस्क्रीन केमिस्ट्री ने सबका ध्यान खींचा। फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों करीब आए और 3 जुलाई 2017 को रश्मिका के गृहनगर विराजपेट में एक निजी समारोह में दोनों ने सगाई कर ली। सितंबर 2018 में दोनों ने आपसी सहमति से सगाई तोड़ दी। हालांकि, कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया कि रश्मिका का करियर पर फोकस करना भी इस टूटन की वजह बना। किरिक पार्टी की सफलता के बाद रश्मिका ने तेलुगु सिनेमा में कदम रखा। गीता गोविंदम (2018) में विजय देवरकोंडा के साथ उनकी जोड़ी हिट रही, जिसके बाद से ही दोनों के रिश्ते की अफवाहें शुरू हुईं, लेकिन असली धमाका तब हुआ, जब 2021 में पुष्पा- द राइज रिलीज हुई। अल्लू अर्जुन के साथ श्रीवल्ली का किरदार निभाकर रश्मिका ने पूरे देश का दिल जीत लिया। हाल ही में रिलीज हुई पुष्पा 2- द रूल ने तो 1600 करोड़ रुपये से ज्यादा का वर्ल्डवाइड कलेक्शन कर उनकी लोकप्रियता को नई ऊंचाई दी। यह उनकी अब तक की सबसे बड़ी हिट फिल्म है।

श्रीवल्ली बनकर मिली खास पहचान

रश्मिका के करियर में कई टर्निंग पॉइंट्स रहे, लेकिन पुष्पा में श्रीवल्ली का किरदार उनके लिए गेम-चेंजर साबित हुआ। इस रोल ने उन्हें साउथ की सीमाओं से निकालकर पूरे भारत में पहचान दिलाई। श्रीवल्ली की सादगी, डांस मूव्स और अल्लू अर्जुन के साथ उनकी जोड़ी ने दर्शकों को दीवाना बना दिया। फिल्म के गाने जैसे सामी सामी और श्रीवल्ली आज भी हर जुबान पर हैं। पुष्पा 2 में उनका किरदार और मजबूत हुआ, जिसने उन्हें पैन-इंडिया सुपरस्टार बना दिया। यह किरदार ही था, जिसने उन्हें नेशनल क्रश से लेकर बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस तक का सफर तय कराया।

मेरा किरदार सिर्फ उसके रूप तक सीमित नहीं है

शेमारू उमंग पर प्रसारित जमुनीया शो अपने प्रसारण के बाद से ही दर्शकों का दिल छू रहा है और समाज में खूबसूरती, स्वीकृति और आंतरिक शक्ति को लेकर एक महत्वपूर्ण चर्चा छेड़ रहा है। यह कहानी जमुनीया नाम की एक लड़की की है, जो अपने सांवले रंग के कारण समाज की आलोचना का शिकार होती है। एक ऐसी दुनिया में जहाँ सुंदरता को अक्सर गोरेपन से जोड़ा जाता है, उसके लिए हर दिन एक नई चुनौती होता है। लेकिन, जमुनीया हार मानने वालों में से नहीं है, वह अपने आत्मविश्वास और साहस से इन भेदभावों का डटकर सामना करती है। शो के नाम और इसके गहरे अर्थ के बारे में बात करते हुए मुख्य अभिनेत्री आलेया घोष कहती हैं, जमुनीया, जामुन के फल की तरह ही कई गुणों से भरपूर है। जैसे जामुन सेहत के लिए लाभकारी होता है, वैसे ही मेरा किरदार जमुनीया सिर्फ अपनी बाहरी सुंदरता तक ही सीमित नहीं है। वह निडर है और हमेशा सच के लिए खड़ी होती है। मौजूदा कहानी में, उसने खुद को बखूबी साबित किया है और वह जानती है कि अपने हक के लिए कैसे लड़ना है। वह किसी को भी खुद पर अन्याय नहीं करने देगी और अपने पति की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जाएगी, भले ही उसका पति और परिवार उसे उसके रूप के कारण स्वीकार न करें। लोग अक्सर रूप-रंग के आधार पर निर्णय लेते हैं, लेकिन असली सुंदरता साहस, विनम्रता और आत्मबल में होती है। अब समय आ गया है कि हम त्वचा के रंग से आगे बढ़ें और अपने अंदर के हीरो को पहचानें। जमुनीया का दुनिया का नज़रिया बदलने को लेकर उसकी संघर्ष से भरी यात्रा के ज़रिए, यह शो एक सशक्त संदेश देता है। सौंदर्य सिर्फ चेहरे की सुंदरता में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, संकल्प और सच्चे दिल में होता है।

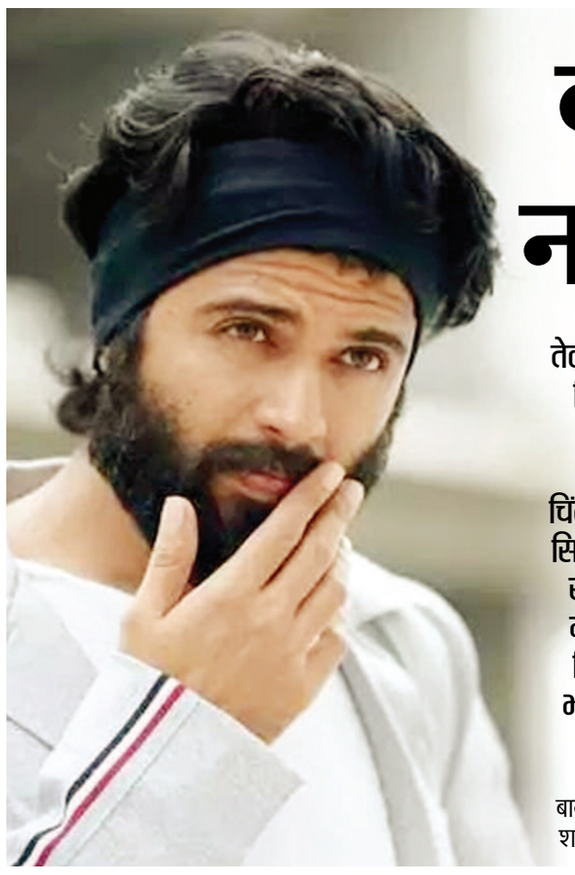

बॉलीवुड का बुरा दौर खत्म होगा नए फिल्ममेकर लाएंगे बदलाव

तेलुगु एक्टर विजय देवरकोंडा ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की मौजूदा हालत पर खुलकर अपनी राय रखी है। जहां बॉलीवुड के बॉक्स ऑफिस नतीजे चिंता का विषय बने हुए हैं, वहीं साउथ सिनेमा का दबदबा लगातार बढ़ता जा रहा है। इस बहस के बीच विजय का मानना है कि यह सब एक चक्र का हिस्सा है और जल्द ही हिंदी सिनेमा भी नए जोश के साथ वापसी करेगा।

यह सिर्फ एक चक्र है

बातचीत में कहा, साउथ फिल्म इंडस्ट्री का अभी शानदार दौर चल रहा है। लेकिन यह सिर्फ एक चक्र है। एक समय था जब आप हमें जानते भी नहीं थे। एक समय था जब इंडियन सिनेमा ने जबरदस्त पहचान बनाई थी और इंटरनेशनल ऑडियंस तक पहुंचा था। अब यह साउथ सिनेमा का समय है। 5 या 10 साल बाद फिर कुछ नया बदलाव आएगा। हिंदी सिनेमा को नया दौर मिलेगा विजय का मानना है कि हिंदी सिनेमा जल्द ही एक नया दौर देखेगा, जहां नए फिल्ममेकर इसे आगे ले जाएंगे। उन्होंने कहा, इस बदलाव से नए फिल्ममेकर निकलकर आएंगे, जो हिंदी सिनेमा को फिर से मजबूत बनाएंगे। बहुत जल्द हिंदी सिनेमा को नए डायरेक्टर और कहानीकार मिलेंगे, जो शायद मुंबई से बाहर के होंगे। मेरा मानना है कि वे हिंदी भाषी इलाकों से आएंगे और बिल्कुल अलग तरह की फिल्में बनाएंगे। उनकी स्टोरीटेलिंग साउथ से भी अलग होगी।

बाहुबली ने दी पहचान

विजय ने बाहुबली का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे एस. एस. राजामौली ने इस फिल्म के जरिए तेलुगु सिनेमा को ग्लोबल पहचान दिलाई। उन्होंने कहा, तेलुगु सिनेमा को बड़े ऑडियंस तक पहुंचने के लिए काफी स्ट्रगल करना पड़ा। जब एस. एस. राजामौली ने बाहुबली बनाई, तो उन्होंने ऐसे दो एक्टर्स पर भारी निवेश किया, जिन्हें हिंदी फिल्म इंडस्ट्री शायद जानती भी नहीं थी। अगर फिल्म न चलती, तो बहुत सारे करियर खत्म हो सकते थे। प्रोड्यूसर्स को बड़ा नुकसान होता और एक्टर्स ने 5 साल सिर्फ एक फिल्म के लिए दिए थे। यह सबके लिए बहुत बड़ा रिस्क था। लेकिन इस तरह की लड़ाई लड़नी पड़ती है। मुझे लगता है कि हिंदी सिनेमा भी अपनी राह ढूंढ लेगा। यह सब जिंदगी का हिस्सा है।

कौन है ऋतिक का फेवरेट को-स्टार?

ऋतिक रोशन को जल्द ही स्पाई थ्रिलर वॉर 2 में देखा जाएगा। वॉर 2 इस साल 14 अगस्त को रिलीज होने वाली है। फैंस इस सीक्वल का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हाल ही में एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान ऋतिक ने अपने वॉर 2 सह-कलाकार जूनियर एनटीआर की तारीफ की। जब उनसे पसंदीदा सह-कलाकार के बारे में पूछा गया तो ऋतिक ने जूनियर एनटीआर का नाम लिया, जिसके बाद फैंस ने जोरदार तालियां बजाईं। ऋतिक ने जूनियर एनटीआर को शानदार बताते हुए कहा कि वह एक बेहतरीन टीममेट हैं। वॉर 2 ऋतिक रोशन की 2019 की हिट फिल्म वॉर का सीक्वल है। यह यशराज फिल्म्स स्पाईवर्स का हिस्सा है, जो कई एक्शन फिल्मों को जोड़ता है।

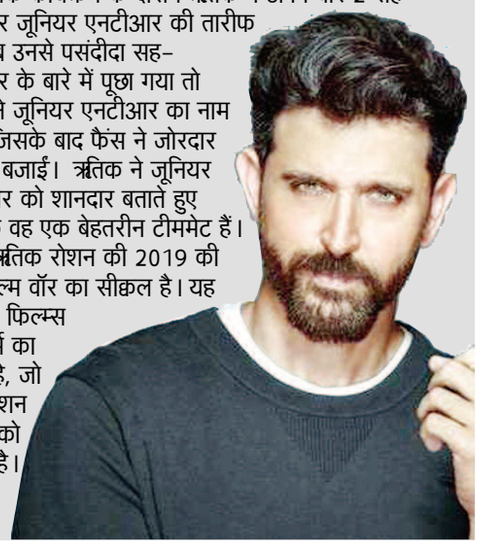

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक अमृता आर पंडित द्वारा साई प्रिंटिंग प्रेस, बी- 868, न्यू अशोक नगर दिल्ली 110096 से मुद्रित तथा ए-115, गली नंबर 13, नई अशोक नगर, दिल्ली 110096 से प्रकाशित।
संपादक - अमृता आर पंडित, मो 8587969284, Mail ID - live18newsnetworktv@gmail.com सभी विवादों के न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय में होगा।